20 फरवरी, 2022 * वर्ष 31, पृष्ठ संख्या, 60, अंक-2

राजस्थान सुजस

नव पल्लव
नव संकल्प

अमर जवान ज्योति पर श्रद्धासुमन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर अमर जवान ज्योति पर पुष्पचक्र अर्पित कर शहीदों को नमन किया।

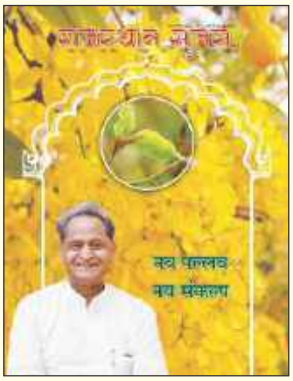

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तम शर्मा

संपादक
अलका सक्सेना

सह-संपादक
डॉ. रजनीश शर्मा

उप-संपादक
सम्पत राम चान्दोलिया
आशाराम खटीक

कला
विनोद कुमार शर्मा

राजस्थान सुजस में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने एवं आंकड़े परिवर्तनशील हैं। आवश्यक नहीं कि शासन उनसे सहमत हो। सुजस में प्रकाशित सामग्री का विभाग किसी भी रूप में उपयोग कर सकेगा।

ग्राफिक डिजाइनिंग
कृष्णा प्रिंटर्स

सम्पर्क
सम्पादक
राजस्थान सुजस (मासिक)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
सचिवालय, जयपुर-302005
मो. नं. 94136-24352
e-mail :
publication.dipr@rajasthan.gov.in
editorsujas@gmail.com
Website :
www.dipr.rajasthan.gov.in

नि:शुल्क वितरण

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान का मासिक

वर्ष : 31 अंक : 02 फरवरी, 2022

इस अंक में

श्रद्धासुमन	02
सम्पादकीय	04
पथ प्रबोधिनी तुम्हें...	11
गोल्डन ड्रॉप से बम्पर क्रॉप	19
राजस्थान की गौरवमयी गाथा	24
ई-मित्र @ होम	26
जीवन रक्षा योजना	28
और सशक्त हुआ उपभोक्ता	32
चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा...	38
सुवास और स्वाद का...	40
महिला सशक्तीकरण की प्रतीक...	42
चुप्पी तोड़ भरो उड़ान	44
आओ फिर चलें	46
महिला बैंक शाखाएं...	48
सिंदूरी अनार	49
ओलम्पिक सावा	50
पेयजल जांच प्रयोगशालाएं	52
सनातन संस्कृति के...	54
मरु महोत्सव	55
धरोहर	59
तब और अब	60

सामयिकी

05

दरबारे ख्वाजा में वसंत

16

सरहद की सर्द रातों में...

36

राग-रंग-रोशनी

30-31

राजस्थान सुजस के आगामी अंक के लिए मौलिक, अप्रकाशित सामग्री भिजवायें। कृपया अपने आलेख एवं फोटोग्राफ सम्पादक को e-mail : editorsujas@gmail.com पर अथवा डाक से भेजें।

सृजन का ऋतुराज

12

जाना-अनजाना राजस्थान: मूर गुफा

22

लता जैसा तो कोई नहीं

56

वसंत का संदेश...

प्राचीन भारतीय दर्शन के अनुसार शब्द सदियों तक अस्तित्व में रहते हैं। मनीषी शब्द को ब्रह्म या ईश्वर का रूप भी कहते हैं। सम्पूर्ण जगत शब्दमय है। सृष्टि की उत्पत्ति भी 'नाद' के साथ मानी जाती है और इसका संचालन भी।

ऋतुराज वसंत प्रकृति के नवरूप धारण करने के अवसर के साथ ही नए विचारों के प्रस्फुटन, पल्लवन और संचरण का भी अवसर है। इस समय शब्द भी प्रकृति की मौलिकता के साथ नव संयोजित होते हैं। नवयौवन पाती लताओं, नए 'वसंत वलय' का चोला ओढ़ते पेड़ों के फूल-पत्तों और उन पर मंडराते भ्रमरसम कीटों के नयनाभिराम रंगों के साथ, चहचहाते पक्षियों के मधुर कलरव और ताजगी लिए सुवासित वायु के बीच सबसे शुद्ध और मौलिक रूप में साक्षात होती प्रकृति एक गहरा संदेश भी देती है। ऋतुराज वसंत पर आधारित प्रस्तुत अंक में प्रकृति के इसी संदेश को शब्दों में पिरोने का प्रयास किया गया है।

वसंत पर जहां चहुंओर प्रकृति का उल्लास बिखरा है, एक ''लता'' के बिछोह ने पूरे भारत को गमजदा भी किया, लेकिन उनके स्वर अनन्त काल तक हमारे साथ हैं। उनकी राजस्थान से जुड़ी कुछ यादों को इस अंक में संजोया गया है। इसी तरह 'भारत कोकिला' सरोजनी नायडू की जयन्ती 13 फरवरी को मनाए जाने वाले 'राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को शामिल किया गया है।

प्रदेश सरकार के लोकल्याणकारी कार्यों का संदेश आप सुधी पाठकगण तक पहुंचाना 'राजस्थान सुजस' की महत्ती जिम्मेदारी है। यह अंक इसी परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। राज्य सरकार घायलों को बिना डर या संकोच अस्पताल पहुंचाने के पुनीत कार्य के लिए प्रोत्साहन स्वरूप ''मुख्यमंत्री चिरंजीवी जीवन रक्षा योजना'', काम छोड़ चुकी महिलाओं को फिर सम्बल देने के लिए ''जागृति-बैक टू वर्क योजना'', घर बैठे विभिन्न आईटी आधारित सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए ''ई-मित्र @ होम योजना'' जैसे नवाचारों की नव कोंपलों के पल्लवन का अनवरत प्रयास कर रही है।

सुजस को आपका स्नेह हमेशा मिलता रहा है। सम्पादकीय टीम भी आपके इस स्नेह के विश्वास पर खरा उतरने का प्रयास निरन्तर जारी रखेगी। आपकी प्रतिक्रिया और स्नेह हमें आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करते रहेंगे, इसी शुभेच्छा के साथ फरवरी माह का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है.....

वसंत की सुवासित शुभकामनाओं सहित

(पुरुषोत्तम शर्मा)
प्रधान संपादक

राज्य सरकार बापू के सिद्धांतों को युवा पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए समर्पित

देश में भाईचारे, प्रेम, सौहार्द तथा सामाजिक समरसता की भावना को मजबूत बनाए रखने के लिए जरूरी है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार जन-जन तक पहुंचें। इसीलिए राज्य सरकार बापू के सिद्धांतों को युवा पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए समर्पित भाव से काम कर रही है।

दुनिया में आतंकवाद, हिंसा, कट्टरता तथा परस्पर अविश्वास के माहौल में गांधी जी के सिद्धान्त ही हमें सही राह दिखा सकते हैं। देश की आजादी के संघर्ष, गांधीजी, प. नेहरू, मौलाना आजाद, सरदार पटेल, गोपालकृष्ण गोखले, डॉ. अम्बेडकर जैसे महान नेताओं एवं उनके जीवन आदर्शों के बारे में युवाशक्ति को जरूर पढ़ना चाहिए। तभी वे इतिहास को जान सकेंगे और उन्हें कोई भ्रमित नहीं कर सकेगा। गांधीजी की विचारधारा ही हिंसा, नफरत और आतंक से उपजी समस्याओं का कारगर हल है।

गांधी जी के विचारों एवं कृतित्व ने मार्टिन लूथर किंग जूनियर, अल्बर्ट आइंस्टीन तथा नेल्सन मंडेला जैसे विश्व के कई महापुरुषों को प्रभावित किया। यहां तक कि गांधीजी के अहिंसा के सिद्धान्त को संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी मान्यता दी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और श्रीमती सोनिया गांधी के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र ने प्रस्ताव पारित किया और आज बापू के जन्म दिवस को 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

महात्मा गांधी की शिक्षाओं को आमजन तक पहुंचाने के लिए जयपुर में महात्मा गांधी संस्थान और गांधी दर्शन म्यूजियम बनाया जा रहा है। इससे महात्मा गांधी की शिक्षा को युवा आत्मसात कर गवर्नेंस तथा सामाजिक कार्यों में सही भूमिका निभा सके। इसी उद्देश्य से महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस एण्ड सोशल साइंसेज की स्थापना की गई है। राजस्थान पहला प्रदेश है जहां ''शांति एवं अहिंसा निदेशालय'' की स्थापना की गई है।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि शहीद दिवस के अवसर पर शासन सचिवालय स्थित गांधीजी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। श्री गहलोत ने दो मिनट का मौन रखकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं शहीदों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने रामधुनी एवं बापू के प्रिय भजन भी सुने।

पिछले दिनों गांधी जी की पुण्य तिथि ''शहीद दिवस'' पर मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 'विश्व के गांधी' विषय पर व्याख्यान को सम्बोधित किया एवं झुंझुनूं जिला कलक्ट्रेट परिसर में महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया। प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक स्व. डॉ. एसएन सुब्बाराव के गांधी जी पर आधारित अन्तिम आधिकारिक व्याख्यान (रिकॉर्डेड) का भी प्रसारण किया गया।

गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली के अध्यक्ष कुमार प्रशांत के अनुसार गांधी जी सामाजिक समानता के अग्रदूत होने के साथ ही सच्चे प्रकृति प्रेमी तथा पर्यावरणविद भी थे। उनका मानना था कि प्रकृति की कीमत पर होने वाला विकास हमें नहीं चाहिए। संसाधनों के कम से कम उपयोग से होने वाले विकास को ही वे सच्चा एवं टिकाऊ विकास मानते थे। आज जबकि विश्व में संसाधनों पर नियन्त्रण करने की जंग छिड़ी है तो ऐसे वक्त में उनकी यह सीख ही हमें समानता पर आधारित विश्व की स्थापना के लिए बड़ी प्रेरणा दे सकती है। गांधी जीवन दर्शन समिति झुंझुनूं द्वारा 5 फीट की कांस्य प्रतिमा का निर्माण कराया गया है। प्रतिमा के फाउण्डेशन का निर्माण झुंझुनूं नगर परिषद् द्वारा किया गया है।

देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करेगा राजस्थान

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में 3 लाख करोड़ से अधिक के एमओयू

अभिषेक जैन
सहायक निदेशक

निवेश प्रोत्साहन की राज्य सरकार की नीतियों के परिणाम स्वरूप आज राजस्थान सौर ऊर्जा के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बन कर उभरा है। रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में देश-विदेश की जानी-मानी कंपनियां और इन्वेस्टर्स प्रदेश में निवेश के लिए आ रहे हैं। राजस्थान सोलर उपकरणों के मैन्यूफेक्चरिंग हब के रूप में भी विकसित होने की दिशा में अग्रसर है। इसके लिए राज्य सरकार निवेशकों को भरपूर सहयोग प्रदान कर रही है।

पिछले दिनों अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में निवेशकों के साथ राज्य सरकार के 3 लाख 5 हजार करोड़ के एमओयू एवं एलओआई हस्ताक्षर हुए हैं। इससे प्रदेश में करीब 90 हजार मेगावाट से अधिक अक्षय ऊर्जा का उत्पादन होगा। जिस गति से राज्य में अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में काम हो रहा है, वह दिन दूर नहीं जब राजस्थान देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने की दिशा में बड़ी भागीदारी निभाएगा।

अक्षय ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने बीते तीन साल में कई नीतिगत पहल की हैं। राजस्थान को रिन्यूएबल एनर्जी का हब बनाने के लिए सरकार ने नई सौर ऊर्जा नीति-2019 तथा विंड एंड हाइब्रिड एनर्जी पॉलिसी जारी की। निवेशकों को अनुकूल माहौल प्रदान करने के लिए रिप्स-2019, वन स्टॉप शॉप प्रणाली, एमएसएमई एक्ट जैसे नीतिगत निर्णय लिए गए। राज्य में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की दिशा में आगे बढ़ते हुए निवेश की राह में बाधाओं को दूर किया गया है।

पिछले दिनों राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम के 5 सार्वजनिक उपक्रमों तथा निजी क्षेत्र की कम्पनियों के साथ 3 लाख 5 हजार करोड़ रुपये के 90 गीगावाट से अधिक क्षमता के लिए एमओयू एवं एलओआई हस्ताक्षरित किए गए हैं। इनमें एनटीपीसी की ओर से 40 हजार करोड़ की लागत से 10 गीगावाट, एनएचपीसी की ओर से 20 हजार करोड़ की लागत से 10 गीगावाट, सतलज जल विद्युत निगम की ओर से 50 हजार करोड़ रुपए की लागत से 10 गीगावाट, टीएचडीसी इण्डिया लिमिटेड की ओर से 40 हजार करोड़ रुपए की लागत से 10 गीगावाट, एसईसीआई की ओर से 9 हजार करोड़ की लागत से 2 गीगावाट, रिलायंस समूह की ओर से 1 लाख करोड़ की लागत से 20 गीगावाट, एक्सिस एनर्जी समूह की ओर से 37 हजार करोड़ की लागत से 28 गीगावाट सोलर पार्क, सोलर प्रोजेक्ट एवं 4 गीगावाट सोलर मॉड्यूल मैन्यूफैक्चरिंग एवं सुखवीर एग्रो समूह की ओर से 2 गीगावाट एवं 100 मेगावाट क्षमता (बायोमास) के अक्षय ऊर्जा से संबंधित एमओयू एवं एलओआई शामिल हैं। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत भी इस एमओयू एवं एलओआई हस्ताक्षर कार्यक्रम के साक्षी बने।

मुख्यमंत्री की मंशानुरूप राज्य में उत्पादित ऊर्जा के ट्रांसमिशन के लिए मजबूत वितरण तंत्र विकसित किया गया है। भूमि की पर्याप्त उपलब्धता, मजबूत आधाभूत ढांचे और सरकार की अनुकूल नीतियों के चलते राजस्थान सौर ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया के लिए मिसाल बन रहा है। राज्य सरकार सोलर उपकरण निर्माण को भी प्राथमिकता दे रही है। निवेशकों को राजस्थान में इकाइयां स्थापित करने पर राज्य सरकार पूर्ण

सहयोग प्रदान करेगी। राजस्व मंत्री श्री रामलाल जाट के अनुसार राजस्व विभाग निवेशकों के लिए भूमि से सम्बंधित आवश्यकताओं को पूरी प्रतिबद्धता के साथ पूरा कर रहा है। साथ ही, भूमि अधिग्रहण में किसानों एवं अन्य पक्षों के हितों का भी पूरा ध्यान रखा जा रहा है। उद्योग मंत्री श्रीमती शकुंतला रावत के अनुसार प्रस्तावित इन्वेस्ट राजस्थान समिट के माध्यम से ऊर्जा क्षेत्र में निवेशकों ने करीब 5 लाख करोड़ रुपये का निवेश करने की मंशा व्यक्त की है।

ऊर्जा राज्यमंत्री श्री भंवर सिंह भाटी के अनुसार पश्चिमी राजस्थान के विभिन्न जिलों में सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए 1.60 लाख हैक्टेयर से अधिक अनुकूल भूमि उपलब्ध है, जहां सोलर पार्कों की स्थापना की जा रही है। मुख्य सचिव श्रीमती उषा शर्मा के अनुसार वर्ष 2030 तक देश में 500 गीगावाट रिन्यूएबल एनर्जी के उत्पादन के राष्ट्रीय लक्ष्य को पूरा करने में राजस्थान बड़ी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा श्री सुबोध अग्रवाल मानते हैं कि प्रदेश की विषम भौगोलिक परिस्थितियां राज्य सरकार की नीतियों से अब हमारी ताकत बन रही हैं। सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया की एमडी श्रीमती सुमन शर्मा ने भी राज्य सरकार की निवेश अनुकूल नीतियों की सराहना की हैं। ''सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देने की राज्य सरकार की पहल अन्य राज्यों के लिए भी अनुकरणीय है।''

श्री आरके विश्नोई, सीएमडी, टिहरी हाइड्रो डवलपमेंट कॉर्पोरेशन

''एनएचपीसी राजस्थान में 50 मेगावाट के विंड पावर प्रोजेक्ट पर पहले से ही काम कर रहा है। अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में एनएचपीसी 10 हजार मेगावाट क्षमता उत्पादन के लिए 20 हजार करोड़ रुपये का निवेश करेगी।''

श्री वाईके चौबे, निदेशक, एनएचपीसी

''राजस्थान में निवेशकों का सहयोग काबिले तारीफ है। भूमि अधिग्रहण, पावर पर्चेज एग्रीमेंट सहित अन्य आवश्यक प्रक्रियाओं में गति राज्य सरकार की मजबूत इच्छाशक्ति को दर्शाती है।

श्री सुखवीर सिंह, निदेशक, सुखवीर एग्रो समूह

''राजस्थान में मात्र चार माह के अल्प समय में ही भूमि उपलब्ध कराने की प्रक्रियाओं को पूरा कर लिया गया। जमीन अधिग्रहण की इतनी सुगम प्रक्रिया दूसरे राज्यों में नहीं है।''

श्री रवि कुमार रेड्डी, सीएमडी, एक्सेस एनर्जी

''एनटीपीसी का अक्षय ऊर्जा के जरिए राजस्थान में 4 हजार मेगावाट ऊर्जा उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर 10 हजार मेगावाट प्रतिवर्ष तक करने का लक्ष्य है।''

श्री मोहित भार्गव, सीईओ, एनटीपीसी रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड

''रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में राजस्थान में योगदान करने के अवसर को समय पर पूरा करने का निगम आगे बढ़कर प्रयास करेगा।''

श्री नंदलाल शर्मा, सीएमडी, सतलज जल विद्युत निगम

प्रदेश में देशभर की 20 प्रतिशत से ज्यादा सौर ऊर्जा क्षमता

10 गीगावाट क्षमता विकसित कर राजस्थान कर्नाटक-गुजरात से आगे

सौर ऊर्जा क्षमता विकसित करने के क्षेत्र में ऊंची छलांग लगाते हुए राजस्थान समूचे देश में पहले पायदान पर आ गया है। केन्द्र सरकार के नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा 31 जनवरी, 22 तक के जारी आंकड़ों के अनुसार राजस्थान ने 10 गीगावाट से अधिक सोलर ऊर्जा क्षमता विकसित कर इस क्षेत्र के दिग्गज कर्नाटक व गुजरात आदि प्रदेशों को काफी पीछे छोड़ दिया है। अब देश में कुल विकसित सौर ऊर्जा क्षमता में अकेले राजस्थान की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत से भी अधिक हो गई है।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की दूरगामी सोच से दिसंबर, 2019 में राजस्थान सौर ऊर्जा नीति और राजस्थान पवन व हाईब्रिड नीति जारी की गई। इन दोनों नीतियों के फलस्वरुप प्रदेश में सौर ऊर्जा क्षेत्र का परिदृश्य ही बदल गया और तीन साल में ही साढ़े छह गीगावाट यानी कि 6552 मेगावाट से अधिक अतिरिक्त सौर ऊर्जा क्षमता विकसित की जा चुकी है। आज देश में स्थापित कुल 49 गीगावाट क्षमता में अकेले राजस्थान ने 10.5 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता विकसित कर ली है।

केन्द्र सरकार के नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार देश में 49346 मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता विकसित हो गई है। इसमें राजस्थान 10506 मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता विकसित कर समूचे देश में शीर्ष पर आ गया है। 7534 मेगावाट क्षमता के साथ कर्नाटक दूसरे स्थान पर और 6309 मेगावाट क्षमता के साथ गुजरात तीसरे स्थान पर है। इस साल अब तक 3000 मेगावाट क्षमता से अधिक क्षमता विकसित की जा चुकी है जबकि तीन वर्षों में प्रदेश में 6552 मेगावाट क्षमता विकसित हुई है। तीन वर्ष की कुल क्षमता में से करीब आधी क्षमता इसी साल में विकसित की जा चुकी है। रूफटॉप में भी राजस्थान तेजी से आगे बढ़ रहा है। 10506 मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता में 9542 मेगावाट क्षमता ग्राउण्ड माउंटेड, 668 मेगावाट रूफटॉप और 296 मेगावाट सौर ऊर्जा ऑफ ग्रिड क्षेत्र में विकसित की गई है। हाल ही में किए गए एमओयू व एलओयू समझौतों से राजस्थान अब देश के सबसे बड़े सोलर हब के रुप में विकसित होने जा रहा है।

अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों के आयोजन में प्रदेश की दावेदारी होगी मजबूत

जयपुर के चौंप में विश्व का तीसरा सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम

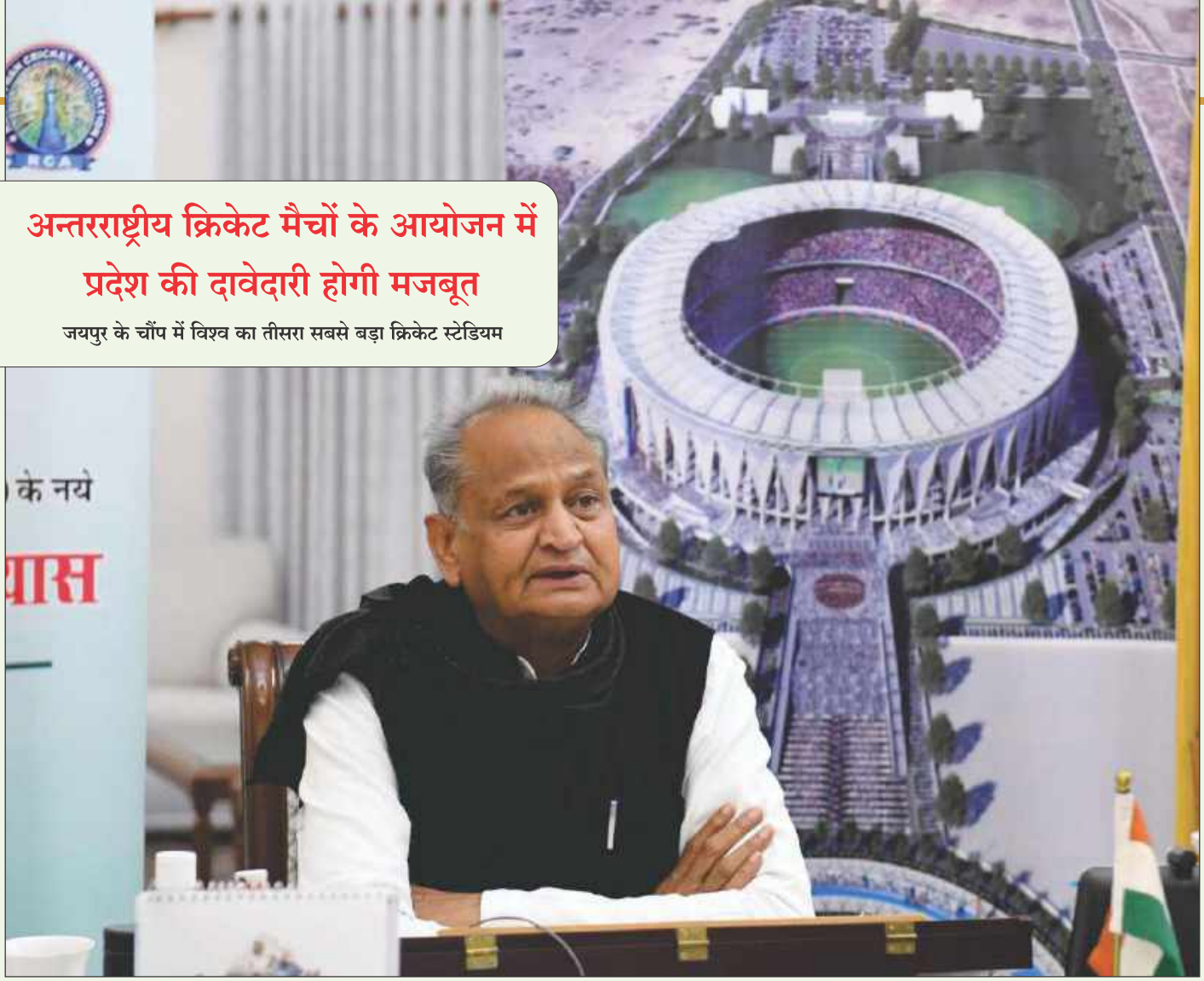

राज्य सरकार प्रदेश में खेलों और खिलाड़ियों को पूरी प्रतिबद्धता के साथ प्रोत्साहन दे रही है, जिससे प्रदेश में खेलों का वातावरण तैयार हो और यहां की प्रतिभाएं देश-दुनिया में अपना परचम लहराएं। इसी उद्देश्य के साथ दिल्ली रोड पर जयपुर के पास चौंप में अहमदाबाद एवं मेलबर्न के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम बनाया जा रहा है। फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में श्री मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस स्टेडियम का शिलान्यास किया। इस स्टेडियम के रूप में प्रदेश के खिलाड़ियों एवं खेल प्रेमियों का बड़ा सपना आरसीए के वर्तमान अध्यक्ष श्री वैभव गहलोत राज्य सरकार एवं बीसीसीआई के सहयोग से पूरा करने जा रहे हैं।

प्रदेश का क्रिकेट से नाता बहुत पुराना है। यहां 1931 में राजपूताना क्रिकेट संघ बना था। आज प्रदेश के 33 जिलों में क्रिकेट संघ बने हुए हैं। इसलिए राजस्थान को उसका हक देते हुए बीसीसीआई से राजस्थान को अंतरराष्ट्रीय मैचों की मेजबानी प्राथमिकता से देने की मांग की जा रही है। हाल ही में जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में कई साल बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच का सफल आयोजन किया गया था। यहां के खेल प्रेमियों का उत्साह बरकरार रखने के लिए जरूरी है कि जयपुर में और अधिक अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों की मेजबानी मिले। अहमदाबाद एवं मेलबर्न के बाद जयपुर के पास बन रहे विश्व के तीसरे सबसे बड़े स्टेडियम से राजस्थान में क्रिकेट को बढ़ावा मिलेगा। अब जयपुर के एसएमएस स्टेडियम, जोधपुर में बरकतुल्ला खां स्टेडियम, उदयपुर में बन रहे स्टेडियम तथा जयपुर के पास चौंप में अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम के निर्माण से भविष्य में राजस्थान में अंतरराष्ट्रीय स्तर के चार क्रिकेट स्टेडियम होंगे। जल्द ही चौंप के शानदार स्टेडियम की सौगात प्रदेश के खेल प्रेमियों एवं आमजन को मिल सकेगी।

विधानसभा अध्यक्ष एवं आरसीए के मुख्य संरक्षक डॉ.सी.पी.जोशी के अनुसार इस स्टेडियम से प्रदेश के युवाओं को खेल के बेहतर अवसर मिलेंगे। बीसीसीआई के अध्यक्ष श्री सौरव गांगुली के अनुसार नए स्टेडियम के निर्माण एवं राजस्थान में क्रिकेट को बढ़ावा देने में बीसीसीआई का पूरा सहयोग मिलेगा।

''कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया'' से बेहतर और सुविधाजनक होगा

''कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान''

विधानसभा के पास ''कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान'' का निर्माण किया जाएगा जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों के विधायक बैठकर सार्थक चर्चा करेंगे। इससे लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों को मजबूती मिलेगी। इस कॉन्स्टीट्यूशन क्लब का निर्माण दिल्ली स्थित ''कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया'' से बेहतर होगा एवं यहां सुविधाएं भी उससे अधिक होंगी।

इस क्लब का निर्माण विधानसभा के पास करीब 4 हजार 948 वर्गमीटर भू-खण्ड पर करीब 80 करोड़ रुपए की लागत से किया जा रहा है। इसमें रेस्टोरेंट, कॉफी हाउस, स्विमिंग पूल, ऑडिटोरियम, मीटिंग, कॉन्फ्रेंस हॉल, जिम, सैलून, बैडमिंटन एवं टेनिस कोर्ट, टेबल टेनिस सहित अतिथियों के ठहरने हेतु कमरों की सुविधा उपलब्ध होगी। यह क्लब एसटीपी, वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, सोलर पैनल, पावर बैकअप सिस्टम, सीसीटीवी आदि अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त होगा। क्लब की सुविधाओं का लाभ वर्तमान विधायकों के साथ पूर्व विधायकों को भी मिलेगा। इस क्लब का निर्माण आवासन मण्डल द्वारा कराया जा रहा है। पिछले दिनों इस क्लब का शिलान्यास एवं भूमि पूजन मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा किया गया। सरकार द्वारा संवैधानिक संस्थाओं को मजबूत बनाने के ध्येय को विधायक आवास परियोजना एवं कॉन्स्टीट्यूशन क्लब जैसे कार्यो से आगे बढ़ाया जा रहा है। क्लब से विधायकों के बीच सद्भाव का माहौल बनेगा। मुख्यमंत्री ने विधायक आवास परियोजना एवं कॉन्स्टीट्यूशन क्लब दोनों परियोजनाओं को गुणवत्ता से व समय पर पूरा करने के निर्देश दिए हैं।

जीवंत होंगे संविधान के 22 भाग

राजभवन में बनेगा संविधान पार्क

राजभवन में जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा बनाए जा रहे संविधान पार्क में चरखा कातते राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की वह प्रतिमा विशेष आकर्षण के रूप में प्रदर्शित की जाएगी, जिसने आजादी के आंदोलन में चरखे के जरिए स्वेदशी के आदर्श को जीवंत किया था।

एक अन्य वीथी में महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की मूर्ति प्रदर्शित की जाएगी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और भारत गौरव स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमाएं भी कलाकारों द्वारा निर्मित कर यहां लगाई जाएंगी। भारतीय संविधान और उससे जुड़े ऐतहासिक घटनाक्रम की याद दिलाने के लिए संविधान पार्क में 45 शिल्प प्रदर्शित किए जाएंगे। साथ ही एक विशाल तिरंगा स्तंभ भी स्थापित किया जाएगा।

यहां संविधान समिति के गठन, संविधान के निर्माण और इसे लागू किए जाने से सम्बन्धित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाक्रम और संसद में इस सम्बन्ध में हुई कार्यवाही को भी चित्रों एवं मूर्ति शिल्प के जरिए जीवंत किया जाएगा। संविधान के 22 भागों के बारे में जानकारी भी यहां रोचक तरीके से प्रस्तुत की जाएगी। राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने गणतन्त्र दिवस पर राजभवन में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, एवं विधानसभाध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी की उपस्थिति में इस संविधान पार्क एवं अन्य कार्यो के निर्माण का शिलान्यास किया।

विधानसभा में बनेगा संग्रहालय

राजस्थान विधानसभा में बनने वाले डिजिटल म्यूजियम में राजस्थान के गौरवशाली इतिहास की जानकारी रोचक तरीके से प्रदर्शित की जायेगी। इसमें लोग हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जानकारी सुन सकेंगे। यहां राज्य की 70 साल की उपलब्धियों का लेखा-जोखा होगा। इसमें सदन की व्यवस्थायें भी दिखाई देंगी। म्यूजियम में जानकारियां ग्राफ्रिक्स, स्कैल्प्चर सहित ऑडियो-वीडियो के माध्यम से उपलब्ध होंगी। इसमें राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों का विकास और आधारभूत संरचना के साथ गौरवगाथा का प्रदर्शन किया जाएगा। साथ ही राजपूताना के लोक आन्दोलन, विधान मण्डल का विकास, राजस्थान के निर्वाचन क्षेत्र सहित राजस्थान की स्थापत्य, सांस्कृतिक धरोहर का प्रस्तुतीकरण होगा।

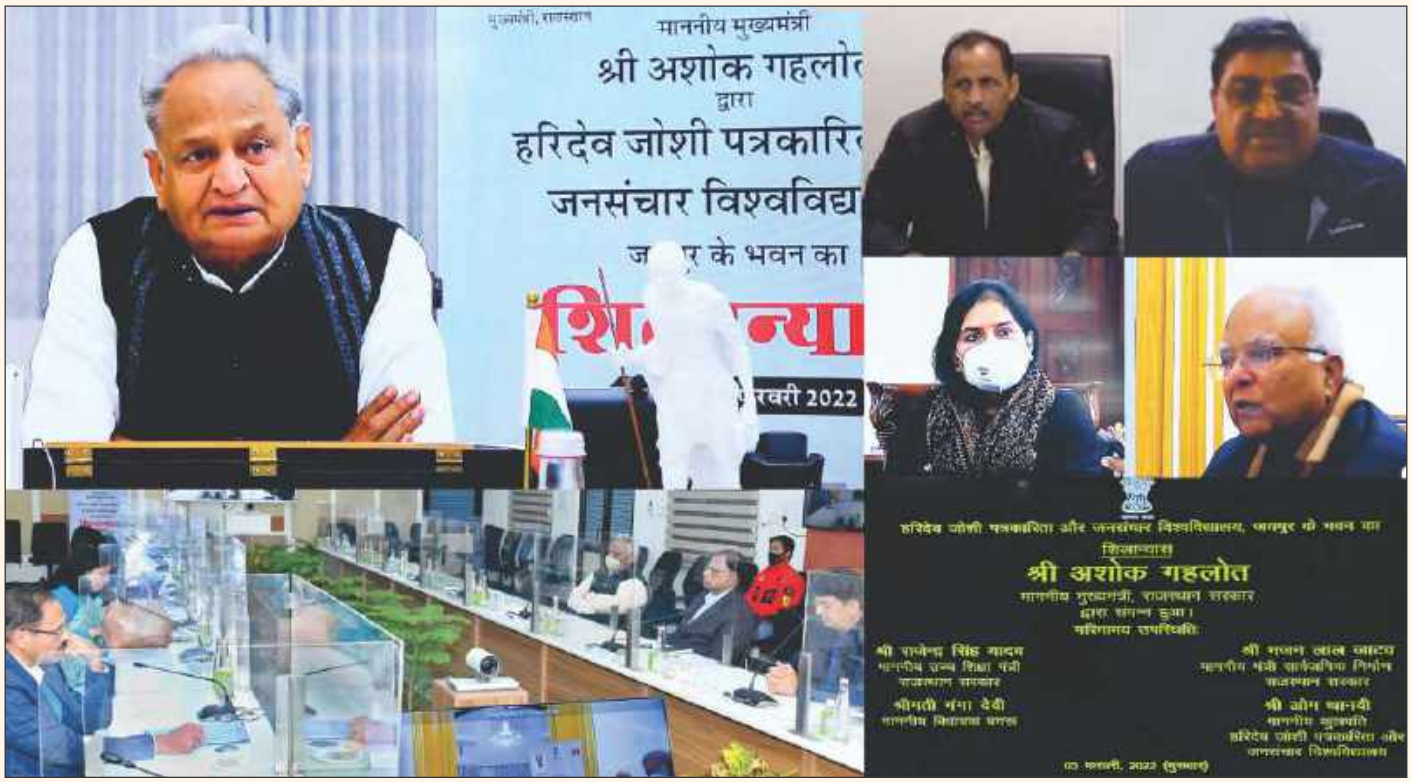

हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय

देश में अग्रणी संस्थान के रूप में विकसित होगा विश्वविद्यालय

स्वस्थ लोकतंत्र के लिए जरूरी है कि देश का मीडिया स्वतंत्र, निष्पक्ष, सशक्त और जागरूक हो। लोकतंत्र में असहमति और आलोचना का महत्वपूर्ण स्थान है जिसे सभी को स्वीकार करना चाहिए। जनहित में मीडिया द्वारा की गई स्वस्थ आलोचना से सरकारों को आत्ममंथन करने तथा कार्यशैली में सुधार करने का मौका मिलता है। लोकतंत्र और पत्रकारिता के इसी सम्बन्ध को और परिपक्व करने के लिए राज्य के पहले पत्रकारिता विश्वविद्यालय ''हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय'' के लिए सरकार ने अजमेर रोड़ स्थित दहमी कलां में करीब 1.24 लाख वर्गमीटर भूमि आवंटित की है। इसके भवन निर्माण के लिए 328 करोड़ रुपये की परियोजना तैयार की गई है।

पिछले दिनों मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इसके भवन का शिलान्यास किया। प्रदेश में पत्रकारिता कर्म को और सशक्त बनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ने अपने पिछले कार्यकाल में हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय तथा विधि के क्षेत्र में डॉ. भीमराव अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय स्थापित करने की पहल की थी। एक तरह से यह उनका सपना और विजन था। राज्य सरकार ने इस विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर के अग्रणी शिक्षण संस्थान के रूप में विकसित करने के लिए समुचित संसाधनों का प्रावधान किया है। राज्य सरकार का मानना है कि देश के बेहतर भविष्य के लिए मीडिया का मजबूत होना बेहद जरूरी है। ऐसे में इस पत्रकारिता विश्वविद्यालय पर जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। वर्तमान सरकार बनते ही एक्ट बनाकर इन विश्वविद्यालयों को फिर से स्थापित किया गया।

मुख्यमंत्री का मानना है कि देश को आजाद कराने में पत्रकारों की लेखनी की बड़ी भूमिका रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ-साथ प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास एवं हरिदेव जोशी तथा जोधपुर के अचलेश्वर मामा जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने पत्रकार के रूप में सामाजिक चेतना जाग्रत की। पत्रकारों की इस भूमिका को देखते हुए यह विश्वविद्यालय स्थापित किया जा रहा है जिसमें यहां से निकलने वाले पत्रकार अपनी धारदार लेखनी से देश और दुनिया में राजस्थान का नाम रोशन करेंगे।

विश्वविद्यालय के भवन के निर्माण में पहले चरण में 115 करोड़ रुपये व्यय होंगे। इसके निर्माण के लिए 18 माह निर्धारित किए गए हैं। इसके बाद अस्थाई भवन में चल रहा यह विश्वविद्यालय स्वयं के भवन में शिफ्ट होगा। हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री ओम थानवी के अनुसार विश्वविद्यालय का पाठक्रम कई मामलों में अनूठा है। इसमें नैतिकता, सदाचार, मानवाधिकार और गांधी दर्शन जैसे विषयों को शामिल किया गया है। इन पाठक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी कर्तव्यनिष्ठ पत्रकार होने के साथ-साथ जिम्मेदार नागरिक भी बन सकेंगे।

पथ प्रबोधिनी तुम्हें प्रणाम...

हे सुबोधिनी मति सुयोजिनी, भुवन मोहिनी तुम्हें प्रणाम।
दिव्य चेतना मातु शारदे, पथ प्रबोधिनी तुम्हें प्रणाम।।
दिव्य चेतना...

सकल विश्व तुमसे आलोकित, कण-कण में संगीत भरा।
संस्कार की सुमन वृष्टि से, महकाती हो वसुन्धरा।
मन मानस को उज्ज्वल करती, तम तिरोहिनी तुम्हें प्रणाम।।
दिव्य चेतना...

वीणा की स्वर लहरी जग में, चेतनता भर देती है।
राग-रागिनी जीव-जगत के, दुख सारे हर लेती है।
खुशियों की रसधार माधुरी, रस पयोदिनी तुम्हें प्रणाम।।
दिव्य चेतना...

ज्योर्तिमय तुमसे ही सूरज, तुम शशांक का उजियारा।
तारों की आभा में तुम हो, तुमसे हारा अंधियारा।
ज्योतिपुंज हे प्रबल प्रगल्भा, सृष्टि शोधिनी तुम्हें प्रणाम।।
दिव्य चेतना...

ज्ञान शलाका बेध रही नित, अंधकार की काया को।
सुर नर मुनि गण समझ न पाये, परम शून्य की माया को।
विद्या दाता बुद्धि प्रदाता, श्रुति नियोजिनी तुम्हें प्रणाम।।
दिव्य चेतना...

भरत शर्मा 'भारत'

प्रेम का पराग–सृजन का ऋतुराज

वसंत

पुष्पा गोस्वामी
उप निदेशक (से.नि.)

प्रकृति का यह सर्वोत्तम ऋतु चक्र वसंत इस बात का प्रतीक है कि भारत में ऋतुएं केवल भौगोलिक या स्थूल ही नहीं होती हैं बल्कि ये हृदय के मनोभावों, आंतरिक उल्लास और प्रकृति के साथ व्यक्ति के तादात्म्य को भी दर्शाती हैं। हमारे यहां ऋतु चक्र का आरंभ होता है चैत्र से। चैत्र और वैशाख दोनों ही वसंत के उल्लास मास हैं। ऋतुराज यानी ऋतुओं का राजा, जिसके सम्मान में पांच ऋतुओं ने अपने आठ–आठ दिन ऋतुराज वसंत को समर्पित कर दिए। इसीलिए वसंत का आगमन चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रथमा से आरंभ न हो कर माघ माह की पंचमी से होता है।

यह महोत्सव राग, आग और फाग का उत्सव है। यह प्रकृति के उत्सव का सजीव चित्रण है। इस ऋतु में अमराइयों में आम बौराने लग जाते हैं। अशोक वृक्ष फूलों से लद जाते हैं। पेड़ और पौधे नए पल्लवों की पोशाक पहन लेते हैं। खेत सरसों की पीली चूनर ओढ़ लेते हैं। फलों

की सुमधुर सुवास तन मन की भूख-प्यास जगा देती है। पतझड़ में वृक्ष जिन पुराने पत्तों के वस्त्र झाड़ देते हैं उन पर नई कोंपलें मुस्कुराने लगती हैं। पुराने विकारों, विवादों और विषादों को त्यागकर मनुष्य को भी इसी तरह उल्लास, उत्साह और उमंग के नए वस्त्र धारण कर लेने चाहिए। नई कोंपलें, नए पत्ते, नए फूल, पेड़-पौधों का यह नया शृंगार जितना आल्हादक है, उतना ही प्रेरणादायक भी। इसी तरह तो नई आशा, नया उल्लास, नव धारणाएं और नए विचारों का गुंफन व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास करने में सक्षम होगा। इसीलिए कवि सुमित्रानन्दन पंत कहते हैं:-

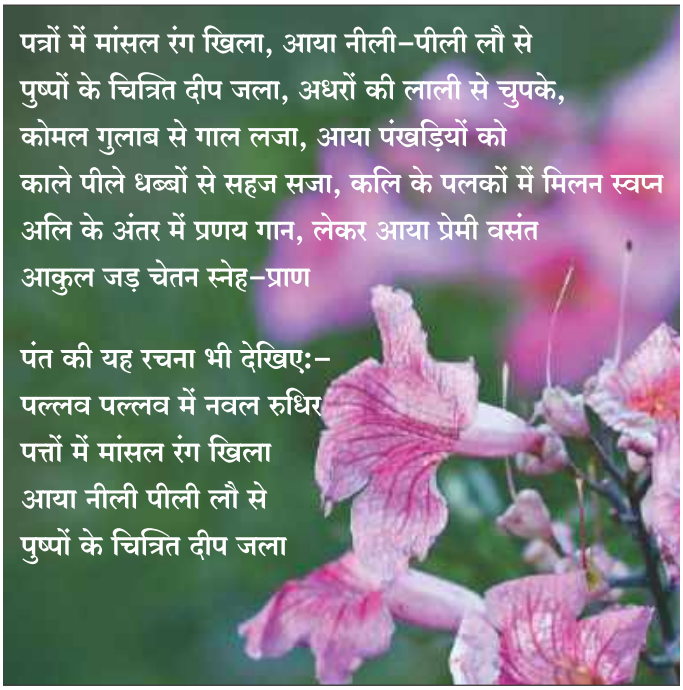

गुलाबी ठंड और गुनगुनी धूप के मध्य, अमलतास की पीली चमक और टेसू की लालिमा, कैसा इन्द्रधनुषी रंग रचता है यह वसंत उसे केवल प्रेमी और सहृदय ही जान सकते हैं। भौंरे, कोयल, चिड़ियां, तितलियां और वासंती बयार कैसे मीठी तान छेड़कर वसंत आगमन के सैकड़ों संदेश देते हैं, यह प्रेमी हृदयों से पूछिए अन्यथा प्रकृति तो सब बयान कर ही देती है।

सभी छाया चित्र : अमित सारस्वत

मुरली मनोहर शुक्ल कहते हैं
फूलन कागौ बेलरिया, चंपा, चमेली गेंदा, गुलाब रंग बिरंगी।
अमीर खुसरो तो दो कदम आगे बढ़ कर कहते हैं-
सकल बन फूल रही सरसों, अमवा बौरे, टेसू बौरे
कोयल बोले डाल-डाल, गोरी करत शृंगार

मालनिया गरवा ले आई, घर सौं तरह-तरह के फूल
ले गरवा सपने में आए, ख्वाजा निजामुद्दीन के दरवाजे पे

गीता के दसवें अध्याय में श्री कृष्ण स्वयं कहते हैं कि ऋतुओं में जो कुसुमाकर है, वह मैं ही हूं। कुसुमाकर अर्थात कुसुम दलों के सम्पूर्ण सृजन का आदि स्वरूप और सौंदर्य चेतना का चरम प्रस्फुटन वसन्त स्वयं ही है। यह ईश्वर का साक्षात स्वरूप है। इस ऋतु को प्रकृति के श्रृंगार की ऋतु कहते हैं।

अष्ट छाप कवियों में कृष्णदास ने ऋतुराज वसंत को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठापित कर दिया है। वे कहते हैं कि और राग संग बने बाराती, दूल्हा राग वसंत, विदा भयो हेमंत, सहचर गान करत, ऊंचे स्वर कोकिल बोले अनंत, ऐसो ही वसंत। पुष्टि मार्ग में तो वसंत आगमन के साथ ही ठाकुर जी की होली आरंभ हो जाती है। पुराणों में वसंत का मानवीकरण करते हुए कहा गया है कि इस समय परिवेश ऐसा हो रहा है कि अग्नि की लपटों के सामने रक्तवर्ण पलाश के पेड़ दिन-रात पृथ्वी की शोभा में अभिवृद्धि कर रहे हैं। वसंत ने सिंह का रूप धारण कर पलाश पुष्प रूपी नखों से शिशिर रूपी गजराज को जगह-जगह रोंद कर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया है।

जब शिव ने क्रोधित होकर कामदेव पर संहारक दृष्टि डाली तो उसने अपना कामबाण डर कर दूर फेंक दिया। इससे उसके पांच टुकड़े

ऋतुराज वसंत

हो गए। ये क्रमश: चम्पक वृक्ष, मालती, मौलश्री वृक्ष, पाटला, पांच गुल्म वाली चमेली के फूल बने। शिव ने बाद में क्रोध शांत होने पर कामदेव को इस गुस्ताखी के लिए क्षमा भी कर दिया।

वसंत के मौसम में वृक्ष, फल, फूल से लद जाते हैं, पुष्प मुद्रित मन से प्रस्फुटित हो उठते हैं, चारों ओर जैसे शीतल बयार में मन मकरंद सुवासित होता है। नदियां, शीतल बयार के साथ चौगुनी गति से बहने लगती हैं और धरती जैसे नवोढ़ा, नव ब्याहता स्त्री का शृंगार कर शोभायमान हो जाती है। अज्ञान के तिमिर का पर्दा उठ जाता है और ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैलने लग जाता है। इस अमृतमय प्रकाशमान दृश्य में व्यक्ति तमस गुणों से मुक्त होकर राजस गुणों का स्वामी बन जाता है, इसलिए हम वाणी, बुद्धि और शान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का पूजन करते हैं। साथ ही यह उम्मीद भी करते हैं कि सम्पूर्ण विश्व में शांति हो और ज्ञान का उजियारा चारों ओर फैले।

श्रीकृष्ण और भगवान राम भी वसंत के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाते हैं। कृष्ण गोपियों के साथ, राधा के साथ वासन्ती माहौल में रास रचाते हैं तो राम का वसंत वियोग के क्षणों में उनको और अधिक कातर बना जाता है।

सरस्वती, कृष्ण और शिव वसंत के आराध्य देव हैं। सरस्वती ज्ञान की देवी, कृष्ण आल्हाद और प्रेम के देवता और शिव संहार और निर्माण के देवता, साथ ही अनासक्त और समभाव के प्रतीक। इन सबकी आराधना में जो सबका अभीष्ट और सृष्टि का चक्र है, वह है प्रेम। सृष्टि के निर्माण का आधारभूत तत्व है प्रेम। अब इसे वैलेंटाइन-डे का नाम दें या कुछ और सृष्टि का चक्र चलाने के लिये वसंत से बेहतर कोई समयकाल नहीं हो सकता है बसंत हमें यही प्रेरणा देता है कि हम अपनी बुद्धि को निर्मल रखते हुए सृष्टि के सृजनात्मक स्वरूप को विकसित करें। वसंत से यह जुड़ाव ही हमें सृजनात्मक बनाए रखेगा। ●

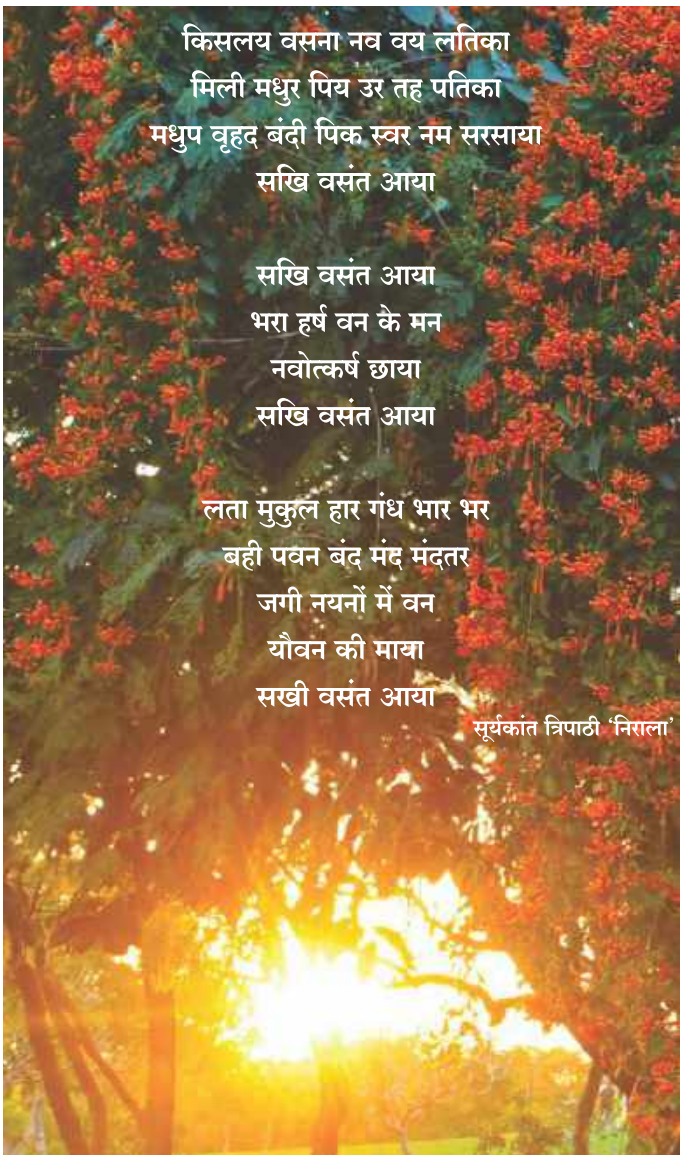

दरबारे ख्वाजा में अजब जलवे से आती है वसंत

देवीसिंह नरूका
वरिष्ठ पत्रकार

वसन्तोत्सव भारत में बहुत प्राचीन समय से किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। जिस प्रकार से सूफी संतो की मजारों अथवा दरगाहों में, देव मंदिरों में संगीत व भजन गायन की परम्परा से प्रभावित होकर कव्वाली का दौर चल पड़ा, उसी प्रकार से सूफी संतों की मजारों पर भी बसंत का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

अजमेर में सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती (1142-1233 ई.) की दरगाह में भी वसंत का उत्सव मनाया जाता है। प्रात: 11 बजे दरगाह की गाही चौकी की कव्वाल पार्टी, दरगाह दीवान, नाजिम खादिम व अन्य श्रद्धालु दरगाह के निजाम द्वार पर एकत्रित होते हैं। कव्वाल पार्टी के एक व्यक्ति के हाथों में रंग-बिरंगे फूलों का बड़ा गुलदस्ता होता है। कव्वाल पार्टी मस्ती से झूम-झूम कर गाते हुए चलती है और इनके पीछे होता है, जनसमूह। कव्वाल बसंत का स्वागत इस प्रकार से करते हैं:-

ख्वाजा मोईनुद्दीन के घर आज आती है वसंत
क्या बन बना और सज सजा मुजरे को आती है वसंत
फूलों के गजरे हाथ ले गाना बजाना साथ ले
जीवन की मद'हा में मस्त हो राग गाती है वसंत
छातियां उमंग से भर रहीं, नैना से नैना लड़ रहीं
किस तर्ज़े माशूकाना से जलवा दिखाती है वसंत
ले संग सखियां गुलबदन रंगे वसंती का वरण
क्या ही खुशी और ऐश का समान लाती है वसंत
नाजों अदा से झूमना, ख्वाजा की चौखट चूमना
देखो 'नियाज' इस रंग में कैसे सुहाती है वसंत

भारत में होली के अवसर पर धमार गाते हुए रंगो से होली खेलने की परम्परा है। सूफी संत भी आध्यात्मिक होली खेलने में पीछे नहीं हैं-

''खेलत धमाल ख्वाजा मोइनुद्दीन, और ख्वाजा कुतुब, शेख, फरीद।
शकरगंज अब सुल्तान मुशायक, नसरूद्दीन औलिया ऐसी ऋतु आई रे।।

दरगाह की खास अथवा गाही चौकी के कव्वाल अखरार हुसैन ने बताया कि आठ पीढ़ियों से उनका परिवार गरीब नवाज के आस्ताने में कव्वाली पेश करता आ रहा है। उनके पूर्वज बताया करते थे कि देश के बंटवारे से पहले दरगाह में वसंत के त्योहार का आलम ही कुछ अलग हुआ करता था। उन दिनों वसंत का जुलूस लाखन कोटड़ी से शुरू होता था। यह स्थान दरगाह शरीफ से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर है। शहर के गणमान्य नागरिक वसंती साफा, पगड़ी बांधकर अथवा टोपी लगाकर जुलूस में शामिल होते थे। शहर की नगर वधुएं भी पीले दुपट्टे डाल कर जुलूस के पीछे होती थी। जुलूस के आगे कव्वाल मस्ती से गाते हुए चलते थे-

''दरबारे ख्वाजा में अजब जलवे से आती है वसंत,
जामे में अपने आप नहीं फूली समाती है वसंत,
हर सूं नवाये चंग है, ऐसी खुशी का ढंग है,
लूटो बहारे रंग है, मुझदाव आती है वसंत,
गाती है हूरे टोलियां, गुल में भरी है झोलियां,
आलम की बस्ते बादायें, वहदत बनाती है वसंत,
हर शख्स है गुल पे रहम, अजमेर है या है चमन,
''बिस्मिल'' अभी देखों तो, क्या गुल खिलाती है वसंत।''

पुश्तैनी कव्वाल असरार हुसैन ने बताया कि इस प्रकार के आलम में वसन्तोत्सव में भाग लेने वाले दिल खोल कर कव्वालों को भेंट देते थे। उस जमाने में चांदी के कलदार रुपयों का चलन था। इन्हें एकत्रित करने के लिए कव्वाल पार्टी के साथ चलने वाला नाई झोली में रुपये

डालता जाता था। इस प्रकार से जुलूस मार्ग में मुख्य स्थानों पर रुकता हुआ धीरे-धीरे गरीब नवाज के मजार के पास पहुंचता है। वहां पर सज्जादानशीन दरगाह दीवान खादिम व अन्य लोग मजार पर फूल चढ़ाते हैं। इसके पश्चात् शाही कव्वाल ख्वाजा साहब के वंशज दरगाह दीवान की हवेली में जाते हैं। वहां पर परम्परा के अनुसार उन्हें इनाम देकर विदा किया जाता है।

वसन्तोत्सव की परम्परा- सूफी संतों की दरगाहों में वसंतोत्सव मनाने की परम्परा हजरत अमीर खुसरो (1253-1325 ई.) के जमाने से शुरू हुई। हिंदी के आदि कवि अमीर खुसरो ने दिल्ली के तख्त पर गुलाम, खिलजी व तुगलक वंश के शासकों का उत्थान व पतन देखा

सभी छाया चित्र : नदीम खान

था। इन शासकों के दरबार में उन्हें सम्मानजनक स्थान प्राप्त था किंतु अमीर खुसरो के मन को शांति अपने गुरु महबूबे इलाही हजरत निजामुद्दीन औलिया के चरणों में बैठ कर ही मिलती थी। निजामुद्दीन औलिया ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी के मुरीद थे।

हजरत निजामुद्दीन औलिया अविवाहित थे। उन्होंने अपनी बहन के पुत्र इकबाल मियां को पास रखकर लालन-पालन किया था। जब इकबाल मियां की उम्र 17-18 वर्ष की हुई तब ही वह अल्लाह के प्यारे हो गये। इस कारण से हजरत निजामुद्दीन औलिया बड़े दुखी हुए और उदास रहने लगे। उन्होंने सबसे बात करना भी छोड़ दिया और मौन रहने लगे। अमीर खुसरो ने जब अपने गुरु की यह हालत देखी तो वह बड़े चिन्तित हुए और गुरु का दुःख दूर करने की तरकीब सोचने लगे।

एक दिन अमीर खुसरो को मालूम हुआ कि उनके गुरु ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया दिल्ली के निकट महरौली के जंगल में एक तालाब के किनारे बड़ी गमगीन हालत में बैठे हैं। वह उनसे मिलने के लिए दिल्ली से चल पड़े। रास्ते में अमीर खुसरो ने देखा कि बहुत से लोग फूल मालायें और गुलदस्ते लेकर हंसी-खुशी से गाते-बजाते देव मंदिरों में चढ़ाने के लिए जा रहे हैं। अमीर खुसरो ने भी सरसों आदि के फूलों का एक खूबसूरत गुलदस्ता बनाया और गीत गाते हुए उस स्थान पर पहुंचे जहां उनके गुरु निजामुद्दीन औलिया बैठे हुए थे। उन्होंने गुलदस्ता ले जाकर गुरु के चरणों में रख दिया।

हजरत निजामुद्दीन औलिया ने पूछा कि यह गड़वा गुलदस्ता किस लिए लाये हो ? तब अमीर खुसरो ने बड़ी विनम्रता से जवाब दिया, हुजूर ! आज वसंत पंचमी है और लोग अपने देवताओं को अर्पण करने के लिए पीले फूलों की मालायें और गुलदस्ते ले जा रहे हैं। मैंने सोचा क्यों न मैं भी अपने देवता (गुरु) के चरणों में गुलदस्ता चढ़ाऊं।

अमीर खुसरो के प्रेम व श्रद्धापूर्ण यह वचन सुनकर गुरु का दिल भर आया और उन्होंने अपने शिष्य को गले लगा लिया। इस प्रकार से वसंत पंचमी के दिन गुलदस्ता भेंट करने से उनका दुःख दूर हुआ, तब से ही सूफी संतो की मजारों पर वसन्तोत्सव मनाने की परम्परा चल पड़ी।

इस अवसर पर गाये जाने वाले लोकप्रिय गीतों में हजरत अमीर खुसरो का यह गीत भी है-

''छाप तिलक सब छीनी रे, सैंया ने मोसे नैना मिलाके।
प्रेम भक्ति का मदवा पिलाके, मतवाली कर दीनी रे- सैंया ने मोसे नैना मिलाके
बलबल जाऊं मैं तेरे रंग रजवा, अपने ही रंग रंगलीनी रे-सैंया ने मोसे नैना मिलाके
हरी-हरी चूड़ियां, गोरी-गोरी बहिंया, कलैइया पकड़ हरली - हीरे-सैंया ने मोसे नैना मिलाके
''खुसरो' निजाम के बल बल जइये, मोहे सुहागन कीन्ही रे-सैंया ने मोसे नैना मिलाके।

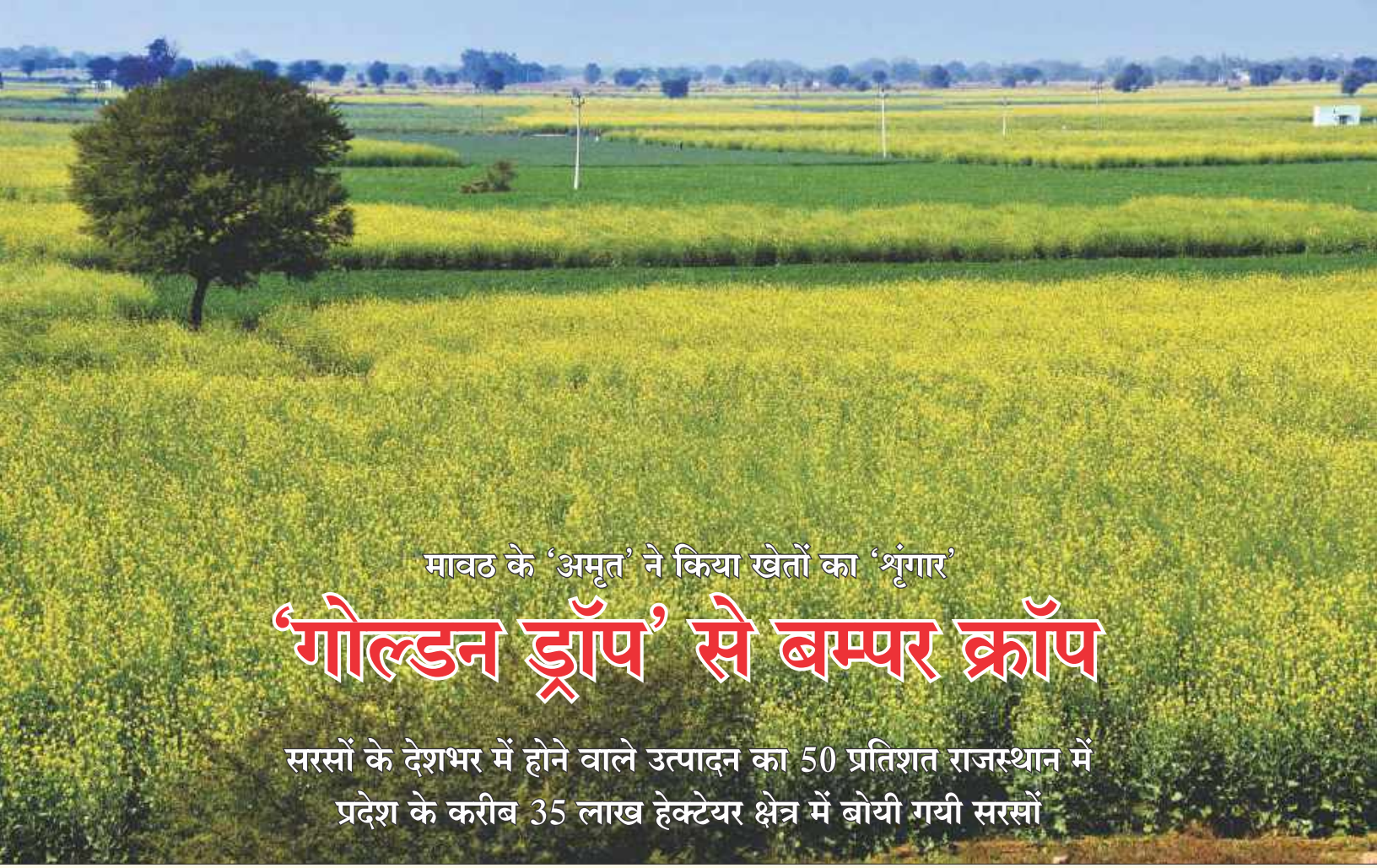

मावठ के 'अमृत' ने किया खेतों का 'शृंगार'

'गोल्डन ड्रॉप' से बम्पर क्रॉप

सरसों के देशभर में होने वाले उत्पादन का 50 प्रतिशत राजस्थान में
प्रदेश के करीब 35 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बोयी गयी सरसों

रामेन्द्र सिंह सोलंकी
वरिष्ठ पत्रकार

प्रदेश में वर्षारम्भ से ही प्रारम्भ होकर करीब एक माह चली रिकॉर्ड मावठ ने कई वर्ष के रिकॉर्ड तोड़ दिए। दिसम्बर के बाद जनवरी में मावठ का जल सरसों, गेहूं, चने जैसी रबी की फसलों के लिए मानो आसमान से अमृत बनकर बरसा। अच्छे ''जमाने'' की आस में किसानों के चेहरे खिल गए, बिजली के उपयोग और प्रदूषण में कमी आई और खेतों पर हरा-पीला ''शृंगार'' और मुखर हो उठा। वसंत आते-आते सरसों के फूल अपनी पूरे यौवन पर आ गए और हर कहीं दूर तक पीली चादर फैली नजर आने लगी। सरसों राजस्थान के लिए कई कारणों से एक अत्यधिक महत्वपूर्ण फसल है।

देशभर में उत्पादित होने वाली सरसों में अकेले राजस्थान में ही 45 से 50 फीसदी उत्पादन होता है। राजस्थान में सबसे अधिक सरसों का उत्पादन भरतपुर संभाग के भरतपुर, अलवर, करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर के साथ ही नजदीक दौसा जिले में होता है। इसके अलावा राजस्थान में श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले में भी सरसों की बंपर पैदावार होती है। सरसों की उपज की कीमतों में पिछले वर्ष आए उछाल के बाद पिछले वर्ष की तुलना में इस साल सरसों की बुवाई में भी तीस फीसदी से अधिक का इजाफा हुआ है। कृषि विशेषज्ञ डॉ. रामगोपाल शर्मा के अनुसार पिछले वर्ष रबी की फसल में प्रदेश में करीब 27 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सरसों की बुवाई हुई थी, जबकि इस बार करीब 35 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सरसों की बुवाई की गई है। इस बार समय-समय पर हुई मावठ की बारिश ने किसानों के चेहरों पर खुशी की लहर ला दी और प्रदेश में करीब 60 लाख मीट्रिक टन सरसों के उत्पादन की संभावना लगाई जा रही है।

इस बारिश ने किसानों को अच्छी फसल का तोहफा देने के साथ ही आर्थिक संबल भी प्रदान किया। बारिश के चलते किसानों को फसलों में पिलाई कराने की मशक्कत नहीं करनी पड़ी। इससे किसानों का बिजली के बिलों के साथ ही डीजल की पड़ने वाली आर्थिक मार से भी बचाव हुआ और जीवाष्मीय ईंधन के कारण होने वाले प्रदूषण में कमी आई। किसानों के साथ ही बारिश से राज्य सरकार को भी बिजली की खपत कम होने से राहत मिली है। फसल में सिंचाई के चलते बिजली के भारी बिलों का भुगतान करने के साथ ही डीजल की खपत में राहत और मजदूरी की भी बचत हुई। इसके साथ ही इस बार सरसों की फसल में बारिश के चलते कई प्रकार के रोगों से राहत मिली है।

हमारे देश में प्रमुख रूप से राई-सरसों समूह की सात मुख्य फसलें-राई अथवा लाहा, तोरिया, गोभी सरसों, पीली सरसों, भूरी सरसों, करन राई एवं तारामीरा तिलहनी फसल के रूप में बोई या उगाई जाती है। इनमें से राई अथवा लाहा की खेती ही प्रमुख रूप से की जाती

है। अधिकतर किसान एवं हितकारकों में राई अथा लाहा को ही सरसों के नाम से जाना जाता है। सरसों रबी की प्रमुख तिलहनी फसल है, जिसका भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान है।

सरकार ने दिखाई दरियादिली, समय पर हुई गिरदावरी

आमतौर पर किसानों को कभी अतिवृष्टि तो कभी ओलावृष्टि का सामना करना पड़ता है, हालांकि इस बार भी कुछ क्षेत्रों में किसानों को ओलावृष्टि का सामना करना पड़ा, लेकिन जिन क्षेत्रों में ओलावृष्टि हुई, उन क्षेत्रों में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने संबंधित जिला कलक्टरों को फसल नुकसान की गिरदावरी के भी आदेश जारी कर किसानों का राहत प्रदान करने का काम किया।

राजस्थान के अलावा इन राज्यों में भी होती है पैदावार

देश में सबसे अधिक करीब 50 फीसदी सरसों का उत्पादन करने वाले राजस्थान के अलावा पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर के अलावा बिहार, झारखंड, ओडिसा, आसाम, छत्तीसगढ़, मणिपुर, पश्चिमी बंगाल में सरसों की खेती होती है। सरसों की खेती मुख्य रूप से समतल एवं अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी में की जाती है।

सरसों का उपयोग

सरसों का मुख्य उपयोग खाद्य तेल के रूप में ही किया जाता है। इसके साथ ही सरसों से तेल बनाते समय निकलने वाली खल का उपयोग पशु आहार के रूप में किया जाता है। इसके अलावा सरसों की तूडी या भूस का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है। ईंट-भट्टों पर इसके उपयोग के साथ ही पावर सेक्टर में इसका उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है। पॉवर सेक्टर की छोटी इकाइयां सरसों की तूडी या भूस

सभी छाया चित्र : अशोक गुर्जर

भरतपुर की ''राधिका'' व ''बृजराज'' जम्मू सहित पांच राज्यों में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 1990 में गठित कार्यबल की सिफारिश के आधार पर राज्य कृषि विभाग, राजस्थान सरकार के अनुकूलन परीक्षण केन्द्र, सेवर, भरतपुर में राई-सरसों पर आधारभूत, रणनीतिक और अनुप्रयुक्त अनुसंधान संचालित करने के लिए 20 अक्टूबर,1993 को राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की। ग्यारहवीं योजना (2007-12) में इस केन्द्र को सरसों अनुसंधान निदेशालय के रूप में उन्नयित किया गया। आधारभूत जानकारी और सामग्रियां सृजित करने के अलावा, यह निदेशालय पारिस्थितिकीय दृष्टि से सुदृढ़ और आर्थिक दृष्टि से व्यवहार्य कृषि उत्पादन और संरक्षण प्रौद्योगिकीयां विकसित करने के कार्य में लगा है। राई-सरसों के उत्पादन और उत्पादकता में समृद्धि करने के लिए अ.भा.स.अनु.प. (राई-सरसों) के तत्वावधान में आवश्यकता आधारित सत्यापन करने के अलावा निदेशालय को समूचे देश में फैले 11 मुख्य और 12 उपमुख्य केन्द्रों के एक विशाल नेटवर्क के माध्यम से अनुसंधान कार्यक्रमों की योजना बनाने, उनके समन्वयन और निष्पादन का उत्तरदायित्व भी सौंपा गया है।

सरसों अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की पांच नई किस्म तैयार की हैं, इनका उपयोग देश के पांच राज्यों में किया जाएगा जम्मू समेत पांच राज्यों में अब भरतपुर की ''राधिका'' व ''बृजराज'' लहलहाएंगी। ये पांच किस्में अलग-अलग जलवायु वाले राज्यों में आसानी से, कम समय में बेहतर पैदावार देंगी। सरसों अनुसंधान निदेशालय ने सरसों की इन नई किस्मों को देश की विभिन्न जलवायुवीय परिस्थितियों के लिए स्वीकृत किया है। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. रॉय के अनुसार देश में खाद्य तेलों की आवश्यकता पूरी करने के लिए काफी बड़ी मात्रा में विदेशों से खाद्य तेल आयात करना पड़ रहा है। इसलिए तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना प्राथमिकता है।

सरसों की किस्म सिंचित क्षेत्र में	पकाव अवधि	उपज(किग्रा प्रति हेक्टे.)	तेल प्रतिशत	प्रमुख राज्य
डीआरएमआरजे-31	135-150	2250-2700	42	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
एनआरसीडीआर-2	140-145	1900-2600	40	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली
एनआरसीडीआर-601	135-150	1950-2650	39-42	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
आरजीएन-73	127-136	1900-2000	40	राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड
उर्वशी	125-130	2200-2500	39	उत्तर प्रदेश
माया	125-135	1990-2280	40	राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश
आरबीएम-2	150-200	1650-1700	40-41	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली
पूसा मस्टर्ड-29	140-145	2100-2200	37	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
पूसा मस्टर्ड-30	135-140	1800-1900	36	पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड
आरएच-749	140-150	2300-2800	40	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, जम्मू, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश
जीडीएम-4	105-115	1800-2250	37-41	गुजरात
एनआरसीएचबी-506	130-145	1550-2550	39-43	पूर्वी राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड
असिंचित क्षेत्र की किस्में				
आरएच-406	135-150	2450-2550	40-41	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
आरएच-725	135-140	2665-2810	42	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू, प. उत्तरप्रदेश
आरबी-50	140-150	1840-2400	40	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
आरजीएन-229	140-145	2300-2400	40-41	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
आरजीएन-298	140-145	2100-2200	40	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
आरजीएन-48	138-150	1600-2000	40	राजस्थान, हरियाणा, पंजाब
अगेती बुवाई की किस्में				
डीआरएमआर-150-35	115-130	1200-1800	37-42	बिहार,झारखंड,ओड़िसा,आसाम,छत्तीसगढ़,मणिपुर,प. बंगाल
पूसा मस्टर्ड-25	95-120	1350-1650	36-41	राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू, प. उत्तरप्रदेश
पूसा मस्टर्ड-27	100-120	1450-1650	40-42	पूर्वी राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड
पूसा मस्टर्ड-28	105-110	1900-2000	41-42	राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू, प. उत्तरप्रदेश
देर से बोई जाने वाली किस्में				
एनआरसीएचबी 101	120-125	1200-1450	40	राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश
पूसा मस्टर्ड-26	115-135	1480-1900	40-41	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
आशीर्वाद	125-130	1450-1685	39	राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश
आरजीएन-145	121-145	1450-1650	39	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
आरजीएन-236	125-130	1600-1650	39	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू
लवणीय मिट्टी की किस्म				
सीएस-58	134	1715-2080	40	सभी लवणीय क्षेत्र
सीएस-60	128-142	1735-2170	39-40	सभी लवणीय क्षेत्र

का बड़े पैमाने पर उपयोग करती हैं। कृषि विशेषज्ञ डॉ. रामगोपाल शर्मा के अनुसार सरसों के तेल का 90 प्रतिशत उपयोग खाद्य तेल के रूप में किया जाता है। इसके अलावा इसका उपयोग औषधीय रूप में भी होता है। सरसों के तेल के जैल, लोशन, लुब्रीकेंट सहित अन्य उपयोग भी लिए जाते हैं।

रोजगार: प्रदेश में सरसों की पैदावार करने से लेकर इससे बनने वाले उत्पादों तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। खेती के अलावा सरसों से तेल निकालने के लिए भरतपुर में सबसे अधिक, करीब 150 तेल मिलें हैं। भरतपुर के अलावा अलवर, जयपुर, दौसा, श्री गंगानगर, हनुमानगढ़ में बड़ी संख्या में तेल मिल हैं। इसके साथ ही प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में तेल मिल लोगों को सीधे रोजगार से जोड़ रही हैं। तेल मिलों के अलावा ईट-भट्टों, पॉवर सेक्टर एवं औषधीय क्षेत्रों में होने वाले उपयोग क्षेत्र के उद्योग-धंधों से लोगों को सीधा रोजगार मिलता है।

राजस्थान में तेल के उत्पादन से देश भर के राज्यों में इसकी सप्लाई हो रही है। इसके लिए राज्य सरकार की ओर से समय-समय पर किसानों के साथ ही रोजगार परक संस्थाओं को विभिन्न प्रकार की राहत प्रदान की जाती है।

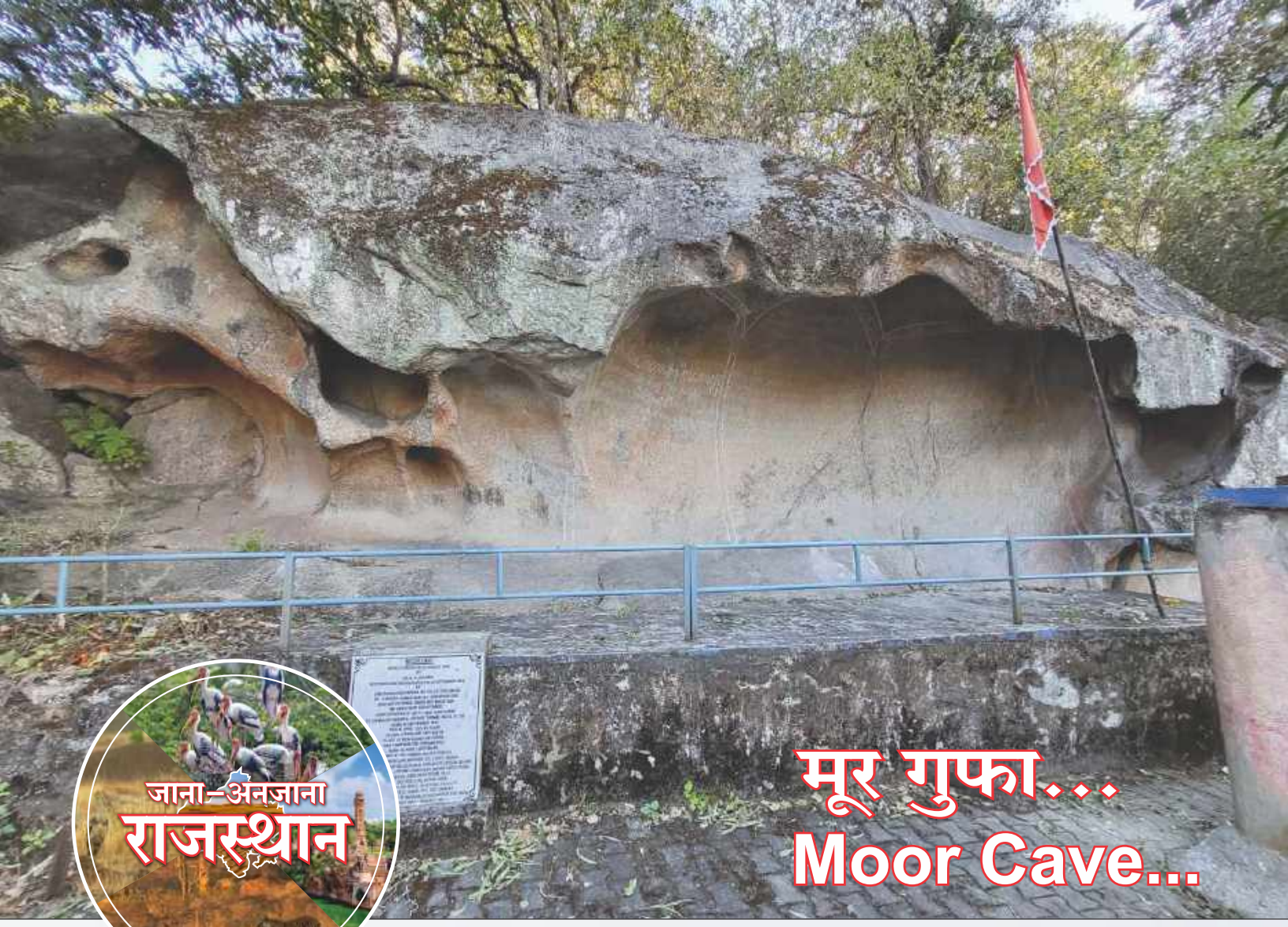

मूर गुफा... Moor Cave...

डॉ. रविन्द्र गोस्वामी
भारतीय प्रशासनिक सेवा

विश्व की प्राचीनतम पर्वतमाला अरावली, जिसकी उत्पत्ति प्रीकेम्बियन युग में हुई थी तथा जो भारत की जलवायु पर गहरा प्रभाव रखती है, उस पर्वतमाला की गोद में बसा हुआ पर्यटक स्थल है माउंट आबू। माउंट आबू की पहचान जन मानस के पटल पर एक सुरम्य पर्वतीय पर्यटक स्थल की है। यहां के गुरुशिखर, देलवाड़ा मंदिर, नक्की झील आदि स्थानों की प्रशंसा, अखिल विश्व में फैली हुई है। लेकिन इन स्थानों के साथ–साथ यहां कई अन्य स्थान एवं दर्शनीय स्थल हैं, जिनके बारे में आम जनमानस में ज्यादा जानकारी नहीं है। ऐसा ही एक दर्शनीय स्थल है... मूर गुफ़ा (Moor Cave)

यह स्थान आपको तब झलक दिखलाता है जब आप पूरे दिन माउंट आबू घूमकर, शाम की लालिमा की चादर की ओट में जाते सूर्य को देखने की अभिलाषा लिए, सनसेट प्वाइंट की ओर जाते हैं। तब जंगल से गुजरती सनसेट रोड के बायीं ओर आपको एक छोटा रास्ता जाता नज़र आता है। बस इसी रास्ते पर कोई 10–20 कदम चलते ही आपको नज़र आती है ये गुफ़ा।

हालांकि, यह पूर्ण गुफ़ा न होकर अर्द्ध गुफ़ा है जो बाहर से देखने पर किसी कछुए की मानिंद नज़र आती है। पूर्व की तरफ़ वाला हिस्सा कुछ छोटा होकर कछुए के मुंह जैसा आकार बना लेता है और अपरदन से बने एक गोलाकार छिद्र से आंख बनती हुई प्रतीत होती है। पीठ की तरफ़ शिला के झुक जाने से कछुए के शल्क आकार का रूप प्रतीत होता है। जब वर्षा ऋतु का समय होता है तो यह पूरी चट्टान शैवाल जमा हो जाने से हरित रूप ले लेती है, तब लगता है मानो कोई विशालकाय कछुआ शांत रूप से यहां आराम कर रहा हो।

यह तो हुई बाहरी रंग–रूप की बात, अब हम चर्चा करते हैं इससे जुड़े इतिहास के खास पहलू की। और वह पहलू यह है कि इस अर्द्ध गुफ़ा के भीतर, ब्रिटिश इंडियन आर्मी के मेजर जनरल आर्थर थॉमस मूर, जो कि उस समय बॉम्बे लाइट कैवेलरी के कमांडिंग ऑफ़िसर थे, द्वारा अंग्रेज़ी भाषा में सुंदर शिलालेख लिखा गया है।

इस शिलालेख को आरम्भिक तौर पर एक कविता माना गया है और इस शिलालेख का काफ़ी हिस्सा अभी भी 'जस का तस' क़ायम है, मानो कह रहा हो कि, 'पत्थर के हृदय में लिखी कविताएं अमर हो जाती हैं।'

इस शिलालेख को जनवरी, 1902 में लिखा गया था, तब के बाद लगभग एक सदी तक यह गुमनाम रहा तथा वर्ष 2006 में इसको पुन: खोजा गया। हालांकि यह अभी तक अस्पष्ट है कि एक फ़ौजी अधिकारी द्वारा किन कारणों से सुनसान जंगल में चट्टान के ऊपर इतनी सुंदर लिपि में कविता उत्कीर्ण की गयी। शायद यह उनका शौक़ था कि मन में आयी बात को अमरता की ओर ले जाते हुए, शिलालेख लिखा जाए या फिर जीवन के प्रति उनका दर्शन कुछ इस प्रकार का रहा हो कि, अपने मन की कोमल भावनाओं को स्थान देने के लिए माउंट आबू की चिरकालिक गुफाओं से उपयुक्त कोई अन्य स्थान नहीं हो सकता।

इस शिलालेख को पूरा पढ़ने में व्यावहारिक समस्या यह उत्पन्न होती है कि आर्द्र जलवायु के कारण नीचे लिखी काफ़ी लिखावट काफ़ी खराब हो गयी है। साथ ही जागरूकता के अभाव में कई बार पर्यटकों द्वारा भी इस पर पत्थर आदि से नुक़सान पहुंचाया गया है। हमें इस धरोहर को और अधिक संरक्षित करने की आवश्यकता है। जो भी हो, ये मूर केव माउंट आबू में आने का एक और आकर्षण बन गयी है। हाल के समय में स्थानीय प्रशासन एवं जागरूक नागरिकों ने इसे संरक्षित किया है तथा यह वर्तमान में सैलानियों हेतु हर समय खुली रहती है।

तो इस बार आप माउंट आबू आएं तो इस अनछुए पहलू को ज़रूर महसूस करें।

सभी छाया चित्र : डॉ. रविन्द्र गोस्वामी

किराडू मन्दिर

किराडू मन्दिर

राजस्थान के खजुराहो

बाड़मेर के किराडू मंदिर और जगत (उदयपुर) का अंबिका मंदिर

डॉ. गोरधन लाल शर्मा
राजस्थान प्रशासनिक सेवा

धोरों के गढ़ बाड़मेर के हाथमा गांव में स्थित 'किराडू मंदिरों' को राजस्थान का खजुराहो कहा जाता है, जबकि उदयपुर का 'जगत' लघु खजुराहो के रूप में जाना जाता है। दक्षिण भारतीय शैली में बने किराडू के पांच मंदिरों की श्रृंखला की कलात्मक बनावट बेहद मोहक है। 1161 ई. के शिलालेख के अनुसार इस गांव पर परमारों का शासन था, जिसका नाम परमारों की राजधानी 'किराट कूप' रखा गया था, जहां 1000 ई. में पांच मंदिरों का निर्माण कराया गया।

नक्काशी की कलात्मक भव्यता

मंदिरों की निर्माण शैली दक्षिण के गुर्जर-प्रतिहार वंश, संगम वंश या गुप्त वंश जैसी है। मंदिरों की इस श्रृंखला में केवल विष्णु मंदिर और शिव मंदिर (सोमेश्वर मंदिर) थोड़े ठीक हालात में हैं, बाकी मंदिर खंडहर में तब्दील हो चुके हैं। श्रृंखला में सबसे बड़ा मंदिर शिव को समर्पित नजर आता है। खम्भों के सहारे निर्मित यह मंदिर भीतर से दक्षिण के मीनाक्षी मंदिर की याद दिलाता है, तो इसका बाहरी आवरण खजुराहो का रंग लिए है। काले व नीले पत्थर पर हाथी-घोड़े व अन्य आकृतियों की नक्काशी कलात्मक भव्यता को दर्शाती है। दूसरा मंदिर पहले से आकार में छोटा है, लेकिन यहां शिव की नहीं विष्णु की प्रधानता है, जो स्थापत्य और कलात्मक दृष्टि से काफी समृद्ध है।

पत्थर के बन जाने का रहस्य

बाड़मेर निवासी मिस्टर राजस्थान रह चुके प्रताप खत्री के अनुसार किराडू मंदिर से जुड़ी हुई एक रहस्यात्मक धारणा है कि रात्रि को वहां रुकने पर आदमी पत्थर के बन जाते हैं, जिसके कारण सूरज अस्त होने के बाद इस मंदिर के आस-पास भी कोई नहीं फटकता। पाक बॉर्डर निवासी नर्सिंग ऑफिसर बाबू राजपुरोहित तथा बाड़मेर के रणबीर भादू का कहना है कि साधु के श्राप से ऐसा होना बताया जाता है।

राजस्थान का लघु खजुराहो – जगत (उदयपुर)

प्रणय भाव में युगल, अंगड़ाई लेते हुए और दर्पण निहारती नायिका, शिशु क्रीड़ा, वादन और नृत्य आकृतियां, पूजन सामग्री सजाए रमणी, महिषासुर मर्दिनी, नवदुर्गा, वीणा धारिणी सरस्वती, नृत्य भाव में गणपति, यम, कुबेर, वायु, इन्द्र, वरुण आदि कलात्मक प्रतिमाओं का अचंभित कर देने वाला मूर्तिशिल्प का खजाना और अद्वितीय स्थापत्य कला को अपने में समेटे जगत का अंबिका मंदिर राजस्थान के मंदिरों की मणिमाला का चमकता मोती कहा जा सकता है।

नागर शैली का स्थापत्य अलंकरण

प्राचीन शिल्प के जानकारों के अनुसार वहां वाराही की मूर्ति तांत्रिक विधा से बनाई गई है और वह हाथ में मीन (मछली) लिए हुए है। मूर्तियों का लालित्य, मुद्रा, भाव, प्रभावोत्पादकता, आभूषण अलंकरण, केशविन्यास, वस्त्रों का अंकन और नागर शैली में स्थापत्य का आकर्षण शिखर बंद मंदिर को खजुराहो और कोणार्क मंदिरों की श्रृंखला में लाकर खड़ा कर देता है। मंदिर के अधिष्ठान, जंघा भाग, स्तंभों, छत, झरोखों और देहरी का शिल्प सौंदर्य देखते ही बनता है।

ओसियां देवालय की सदृश्यता

स्थापत्य में शिल्प की प्रतिष्ठा लिए जगत का अंबिका मंदिर उदयपुर से करीब 50 किलोमीटर दूर गिर्वा की पहाड़ियों के बीच बसे कुराबड़ गांव के समीप अवस्थित है। मंदिर परिसर करीब 150 फीट लम्बे ऊंचे परकोटे से घिरा है। पूर्व की ओर से प्रवेश करने पर दो मंजिला प्रवेश मंडप की बाहरी दीवारों पर प्रणय मुद्रा में नर-नारी प्रतिमाएं, द्वार स्तंभों पर अष्ट मातृका प्रतिमाएं, रोचक कीचक आकृतियां और मण्डप की छत पर समुद्र मंथन दर्शनीय हैं। छत का निर्माण परंपरागत शिल्प के अनुरूप कोनों की ओर से चपटी और मध्य में पद्म केसर के अंकन के साथ निर्मित है। मंडप में दोनों ओर हवा व प्रकाश के लिए पत्थर की बनी अलंकृत जालियां ओसिया देवालय के सदृश हैं।

विविध रूपों में देवी अवतार की प्रतिमाएं

मंदिर के सभा मण्डप का बाहरी भाग दिकपाल, सुर-सुंदरी, विभिन्न भावों में रमणियां, वीणाधारिणी सरस्वती, विविध देवी

अंबिका माता मंदिर

किराड़ू मन्दिर

प्रतिमाओं की सैकड़ों मूर्तियों से सुसज्जित है। दायीं ओर जाली के पास सफेद पाषाण में निर्मित नृत्य भाव में गणपति की दुर्लभ प्रतिमा है। मंदिर के पार्श्व भाग की एक ताक में बनी महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा विशेष है। उत्तर और दक्षिण ताक में विविध रूपों में देवी अवतार की प्रतिमाएं नजर आती हैं। बाहर की दीवारों की मूर्तियों के ऊपर और नीचे कीचक मुख, गज श्रृंखला और कंगूरों की कारीगरी भी देखते ही बनती है।

मेवाड़ का प्राचीन उत्कृष्ट शिल्प

मध्यकालीन गौरवपूर्ण मंदिरों की श्रृंखला में सुनियोजित ढंग से बनाया गया जगत का अंबिका मंदिर मेवाड़ की प्राचीन उत्कृष्ट शिल्प का नमूना है। जीवन की जीवंतता और आनंदमयी क्षणों की अभिव्यक्ति मूर्तियों में स्पष्ट दर्शनीय है। यहां से प्राप्त प्रतिमाओं के आधार पर इतिहासकारों का मानना है कि यह स्थान 5वीं व 6ठीं शताब्दी में शिव शक्ति संप्रदाय का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा। इसका निर्माण खुजराहों में बने लक्ष्मण मंदिर से पहले करीब 960 ई. के आस-पास माना जाता है। मंदिर के स्तंभों पर उत्कीर्ण लेखों से पता चलता है कि 11वीं सदी में मेवाड़ के शासक अल्ला ने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। यहां देवी को अंबिका कहा गया है। धार्मिक दृष्टि से यह प्राचीन शक्ति पीठ है।

अंबिका माता मंदिर

ई-मित्र @ होम

आईटी से घर-घर पहुंची 'सेवा की सुविधा'

ऋतेष कुमार शर्मा
एसीपी (उप निदेशक) आईटी, जिला कलक्ट्रेट, जयपुर

राजस्थान सरकार द्वारा जन उपयोगी सेवाओं को त्वरित एवं पारदर्शी व्यवस्था के साथ आमजन को उपलब्ध करवाने हेतु हमेशा संवेदनशीलता का परिचय देते हुए एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। जन उपयोगी सेवाओं को त्वरित, सुगम्य एवं पारदर्शी तरीके से उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से राजस्थान सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग द्वारा ई-मित्र परियोजना का संचालन किया जा रहा है। ई-मित्र सेवा समस्त भारत में किसी भी राज्य द्वारा ऑनलाइन सेवाओं को प्रदान करने का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण साबित हुई है।

ई-मित्र परियोजना की सफलता को देखते हुए अन्य राज्यों द्वारा भी इस सेवा का अनुसरण करने का प्रयास किया गया है। राजस्थान राज्य के हर क्षेत्र में आज ई-मित्र केन्द्र स्थापित हैं और जनता को सेवायें प्रदान करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम साबित हो चुके हैं। अब लगभग 85000 ई-मित्र केन्द्र राजस्थान के कोने-कोने में स्थापित हो चुके हैं। जिनमें से लगभग 50000 ई-मित्र ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित हैं, यही इनकी सफलता का द्योतक है। राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्रत्येक राजकीय विभाग को ऐसी समस्त सेवायें, जिनको प्राप्त करने हेतु आवेदन करने बाबत आवेदक को किसी भी सरकारी कार्यालय में उपस्थित होना पड़े, ऐसी समस्त सेवाओं को ई-मित्र के माध्यम से उपलब्ध करवाया जाएगा। वर्तमान में विभिन्न सरकारी विभागों की 500 से अधिक सेवाएं ई-मित्र केन्द्रों के माध्यम से आम-जन को उनके निवास स्थानों के एकदम नजदीक ई-मित्र केन्द्रों के माध्यम से उपलब्ध करवायी जा रही हैं।

ई-मित्र केन्द्रों पर उपलब्ध करवाई जा रही सेवाओं को और बेहतर एवं सुगम्य तरीके से उपलब्ध करवाने की दृष्टि से सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग द्वारा निरंतर नवाचार किये जाते हैं। इसी दृष्टि से स्वसंचालित ई-मित्र प्लस मशीन भी राज्य भर में स्थापित की गई हैं, जिनके माध्यम से भी कोई भी आवेदक ई-मित्र पोर्टल पर प्राप्त विभिन्न सेवाओं को स्वयं ही प्राप्त कर सकता है। राज्य भर में 11000 से अधिक ई-मित्र प्लस मशीन स्थापित हैं, जिनके माध्यम से आमजन विभिन्न प्रकार की ई-मित्र सेवायें प्राप्त कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा बजट घोषणा 2020-21 में राजस्थान के नागरिकों के लिए विभिन्न सरकारी सेवाओं को घर से ही आवेदन कर, उसके घर पर ही ई-मित्र के माध्यम से पहुंचाने के संबंध में घोषणा की गयी थी।

इस क्रम में प्रथम चरण में जयपुर एवं जोधपुर के शहरी क्षेत्रों के निवासियों हेतु कुछ चुनिंदा सेवाओं यथा जन्म व मृत्यु प्रमाण-पत्र, विवाह रजिस्ट्रेशन, जाति एवं मूल निवास प्रमाण-पत्र के आवेदन हेतु सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग द्वारा विकसित ई-मित्र @ होम सेवा का लोकार्पण मुख्यमंत्री महोदय द्वारा किया गया।

इसी क्रम में ई-मित्र @ होम अंतर्गत उपलब्ध करवाई जा रही सेवाओं में वृद्धि करते हुए 1 जनवरी 22 से 32 अन्य सेवाओं के आवेदन भी जयपुर एवं जोधपुर शहरों के निवासियों को उनके घर बैठे ही ई-मित्र @ होम के माध्यम से उपलब्ध होने लगे हैं।

अब जन्म व मृत्यु प्रमाण-पत्र, विवाह रजिस्ट्रेशन, जाति एवं मूल निवास प्रमाण-पत्र के आवेदनों के अतिरिक्त राशन कार्ड संबंधी आवेदन, बिजनेस रजिस्टर, रोजगार विभाग, जन आधार संबंधी आवेदन, सूचना का अधिकार से संबंधी आवेदन, पुलिस वेरीफिकेशन, चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना, EWS प्रमाण-पत्र संबंधी, कृषि विभाग संबंधी, छात्रवृत्ति, पालनहार, दिव्यांग प्रमाण पत्र, पेंशन संबंधी, RTO विभाग से संबंधी, राजस्व विभाग की सीमाज्ञान संबंधी, श्रम विभाग संबंधी, नवीन विद्युत संबंध आदि विभिन्न प्रकार की सेवाओं के आवेदन भी आवेदक ई-मित्र @ होम सेवा का प्रयोग करते हुए घर बैठे हुए प्राप्त कर सकते हैं।

ई-मित्र @ होम की सेवाएं प्राप्त करने हेतु प्रक्रिया:-

1. प्रार्थी द्वारा टोल फ्री नं. 18001806127 पर अथवा मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नम्बर 181 पर कॉल किया जाएगा।
2. IVRS (Interactive Voice Response system) द्वारा प्रार्थी को ई-मित्र @ होम की सेवा लेने हेतु फोन कीपेड से 1 दबाना होगा।
3. फोन के कीपेड पर 1 दबाने के पश्चात कॉल Customer Care Executive के पास स्थानांतरित हो जाएगी।
4. Customer Care Executive के द्वारा प्रार्थी को चयनित सेवा हेतु आवश्यक सूचना दस्तावेज एवं आवेदन शुल्क के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान की जाएगी।
5. उक्त सूचना एवं दस्तावेजों की उपलब्धता एवं पात्रता होने पर प्रार्थी को रिक्त टाइम स्लॉट के बारे में जानकारी दी जाएगी एवं

प्रार्थी के समयानुरूप आवेदन का टाइम स्लॉट बुक कर दिया जाएगा।

6. टाइम स्लॉट बुक होते ही प्रार्थी के मोबाइल पर एक वेरिफिकेशन कोड भेजा जाएगा। जिसे प्रार्थी द्वारा आवेदन हेतु घर आये ई-सहायक को बाताना होगा जिससे ई-सहायक की पुष्टि हो सके।
7. रजिस्ट्रर्ड कॉल विभाग द्वारा चयनित ई-सहायक को आवंटित की जाएगी।
8. ई-सहायक द्वारा तय समय से 02 घंटे पूर्व प्रार्थी को कॉल करके उसके घर पर होने की पुष्टि करके ही वह प्रार्थी के घर जाएगा। प्रार्थी द्वारा घर पर उपलब्ध नहीं होने पर प्रार्थी द्वारा पुन: टाइम स्लॉट में संशोधन हेतु फोन पर निवेदन किया जाएगा।
9. ई-सहायक को प्रार्थी द्वारा रजिस्ट्रर्ड कॉल में बताए गए मोबाइल नं. से वेरीफीकेशन कोड बताया जाएगा, जो कि प्रार्थी द्वारा कॉल रजिस्टर करने पर उपलब्ध करवाया जाएगा। जिससे वैध प्रार्थी को पहचाना जा सके।
10. ई-सहायक द्वारा प्रार्थी के घर से आवेदन फार्म भरने एवं आवश्यक दस्तावेजों को संलग्न करने हेतु पूर्ण सहायता प्रदान की जाएगी।
11. ई-सहायक को प्रदान कि गई POS Machine के माध्यम से

आवेदन फार्म भरके, आवश्यक दस्तावेजों को स्कैन व अपलोड किया जाएगा।

12. संबंधित सेवा का शुल्क जो कि उक्त सेवाओं हेतु अमूमन 50 रुपये है, ई-सहायक द्वारा प्राप्त कर ई-मित्र @ होम की प्राप्ति रसीद प्रार्थी को दी जाएगी।
13. ई-मित्र कियोस्क की सहायता से ई-सहायक द्वारा स्कैनड दस्तावेजों को ई-मित्र @ होम पोर्टल से ई-मित्र पोर्टल पर अपलोड कर आवेदन किया जाएगा।
14. आवेदित दस्तावेजों को वरीयता के साथ संबंधित अधिकारी को फॉरवर्ड कर दिया जाएगा।
15. संबंधित अधिकारी द्वारा उक्त आवेदन की जाँच कर Approve किया जाएगा।
16. Approve होने के पश्चात राज्य सरकार की निर्धारित प्री-प्रिंटेड स्टेशनरी पर Approve प्रमाण पत्र ई-सहायक द्वारा प्रिन्ट कर प्रार्थी के घर तक पहुंचाया जाएगा व Doorstep Delivery ई-मित्र @ होम सेवा शुल्क राज्य सरकार द्वारा निर्धारित रु.73 प्राप्त कर प्रार्थी को रसीद दी जाएगी।

इस प्रकार ई-मित्र @ होम सेवा राजस्थान राज्य के निवासियों के लिए बहुत ही मददगार सेवा साबित होने वाली है।

घायलों को समय पर अस्पताल पहुंचाकर

बचाया अनमोल जीवन

सुरेंद्र कुमार सामरिया
जनसम्पर्क अधिकारी

मानव जीवन अनमोल है और एक इंसान की जान बचाना न केवल मानवीय कर्तव्य है बल्कि सबसे पुनीत कार्य भी है। सड़क दुर्घटना में घायल होने पर, मदद की गुहार लगाते चोटिल लोगों को देखकर भी कई लोग इच्छा होने पर भी उनकी मदद से कतराते हैं। इससे ''गोल्डन ऑवर'' का वह समय बीत जाता है जिससे उस व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है। उनके इसी डर को दूर करने और ऐसे मददगारों को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने बजट घोषणा 2021-22 में 'जीवन रक्षक योजना' प्रारम्भ की। इसमें सड़क दुर्घटना के गंभीर घायल व्यक्तियों को समय पर अस्पताल पहुंचाकर जीवन बचाने वाले व्यक्ति को 5 हजार रुपये एवं प्रशस्ति पत्र दिये जाने की घोषणा की गई थी। राशि एवं प्रशस्ति-पत्र से बढ़कर इस योजना का लक्ष्य मददगारों के मन में यह भरोसा पैदा करना था कि सरकार उनके घायलों की मदद के काम की सराहना करती है और उन्हें इससे कोई परेशानी नहीं आएगी, बल्कि पुरस्कृत किया जाएगा।

इस योजना का क्रियान्वयन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से किया जा रहा है। योजना के लिए बजट समर्पित सड़क सुरक्षा कोष, परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग द्वारा वहन किया जा रहा है। घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने वाला व्यक्ति अगर स्वेच्छा से अपनी पहचान बताता है और योजना में लाभ लेने को तैयार होता है, तभी अस्पताल में उसकी पहचान अंकित की जाती है।

सड़क दुर्घटना में गंभीर घायल को समय पर अस्पताल पहुंचाने वाले मददगार (गुड सेमेरिटन) को पांच हजार रुपये एवं प्रशस्ति-पत्र, एक से अधिक मददगार होने पर राशि के समान विभाजन के साथ सभी को प्रशस्ति-पत्र एवं सामान्य घायल होने पर प्रशस्ति-पत्र दिया जाता है।

अधिनियम में गुड सेमेरिटन को संरक्षण

मोटर वाहन अधिनियम 134 ए के अनुसार, संशोधन अधिनियम की धारा 134 ए, गुड सेमेरिटन को सिविल या आपराधिक कार्यवाही से अनावश्यक परेशानी या उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान करती है। केंद्र सरकार को उनके संरक्षण के लिए नियम बनाने का अधिकार देती है।

पुलिस और अस्पताल गुड सेमेरिटन के साथ

गुड सेमेरिटन की पहचान, घटना के लिए गवाह बनने के लिए पुलिस बाध्य नहीं कर सकती। घायल की सूचना पुलिस को देने के बाद वह मौके से जा सकता है। घटना के गवाह बनने परंतु पुलिस थाने नहीं जाने की इच्छा पर पुलिस सादे कपड़ों में आपके बताये स्थान पर आकर पूछताछ कर सकती है। घायल को अस्पताल में पहुंचाने के बाद अस्पताल उन्हें रुकने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। अस्पताल उनसे पंजीयन व भर्ती भुगतान राशि की मांग नहीं कर सकता।

ये बने मददगार

''मैं 14 नवंबर, 2021 की दोपहर करीब 3:30 बजे मैं मोटरसाइकिल पर 'चेंडा से वायद रोड' पर गुजर रहा था, तभी देखा कि सड़क किनारे दो व्यक्ति खून में लथपथ मदद के लिए आवाज लगा रहे थे। एक के सिर से लगातार खून निकल रहा था, खून काफी बह चुका था। तो दूसरे के कई हिस्सों पर गहरी चोट थी। मैंने तुरंत गाड़ी रोकी, बात की तो दोपहिया वाहनों में टक्कर होना बताया। तब तक घटना स्थल पर और भी लोग आ गये। लोगों से अस्पताल ले जाने के लिए सहायता मांगी तो कई चुप्पी साध बैठे और कई ने मना ही कर दिया। जबकि अस्पताल मात्र आधा किलोमीटर दूर ही था।

ऐसी स्थिति में मैं पास ही गांव गया, लोगों को बुलाकर लाया। नजदीक अस्पताल में एबुलेंस नहीं थी तो एक प्राइवेट वाहन को बुलाकर घायलों को नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गया। कुछ ग्रामीणों ने भी मदद की। रैफर के दौरान एंबुलेंस में ही एक व्यक्ति का निधन हो गया। दूसरे को करीब 60 किलोमीटर दूर स्थित बांगड़ अस्पताल ले गये। वहां लंबे इलाज से बाद उसका जीवन बचाया जा सका।''

दीपक बामणिया, गांव दिवांदी, तहसील रोहट, जिला पाली।

''पांच से अधिक बार सड़क दुर्घटनाओं में घायलों को अस्पताल पहुंचा चुका हूं। 30 नवंबर 2021 के दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। विराटनगर बस स्टैंड के पास बस और मोटर साइकिल में टक्कर हो गई। टक्कर से मोटर साइकिल पर बैठी महिला गंभीर घायल होने से बेहोश हो गई। मौके पर मौजूद लोगों की मदद से महिला को नजदीक अस्पताल में पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में रैफर किया गया। इससे महिला की जान बच गई।'' **पंकज शर्मा, निवासी गणगौरी चौक, विराटनगर**

राग, रंग, रोशनी की जुबानी, इतिहास की कहानी

लाइट एण्ड साउण्ड से गुलजार : प्रदेश के 5 पर्यटन स्थल

प्रदेश के 5 प्रमुख पर्यटन स्थल आकर्षक लाइट एण्ड साउण्ड शो के प्रदर्शन से गुलजार हैं। जयपुर के प्रमुख धार्मिक स्थल गोविन्द देव जी मंदिर परिसर स्थित जयनिवास उद्यान, मेड़ता में मीरा बाई स्मारक, चित्तौड़गढ़ के विश्व विख्यात दुर्ग, धौलपुर के मचकुंड में आकर्षक लाइट एण्ड साउण्ड शो तथा जैसलमेर की ऐतिहासिक गड़ीसर झील में लेजर वाटर शो का प्रदर्शन किया जा रहा है। इनका लोकार्पण मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा कुछ समय पहले किया गया। राजस्थान पर्यटन के क्षेत्र में देश और दुनिया में विशिष्ट पहचान रखता है। बड़ी संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक यहां की मनभावन संस्कृति, किलों, महलों, बावड़ियों तथा वाइल्ड लाइफ, डेजर्ट आदि से जुड़े आकर्षक स्थलों को देखने आते हैं। पर्यटन उद्योग की प्रदेश में रोजगार प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। लाखों लोगों की अजीविका इससे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़ी हुई है। कोरोना महामारी से प्रभावित हुए इस प्रमुख उद्योग को सम्बल देने में सरकार भरपूर प्रयास कर रही है। राज्य सरकार के सकारात्मक निर्णयों से इस सेक्टर में आत्मविश्वास लौटा है। पर्यटन विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती गायत्री राठौड़ के अनुसार स्वदेश दर्शन योजना के तहत प्रदेश में स्वीकृत 8 परियोजनाओं में से 5 लाइट एण्ड साउण्ड शो तथा लेजर वाटर शो का लोकार्पण हो चुका है और शेष तीन स्थानों पर भी ये शो जल्द प्रारम्भ किए जाएंगे। इन शो की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं...

गड़ीसर लेक, जैसलमेर

यहां लेज़रवाटर शो में जैसलमेर दुर्ग के निर्माण की पटकथा, आक्रांताओं का दुर्ग पर आक्रमण, जैसलमेर के वीरों के पराक्रम और बलिदान की गाथा, तनोट माता के मंदिर का दृश्य, रामदेवरा मंदिर के दृश्य, लोद्रवा मंदिरों का छायांकन, लक्ष्मीनारायण मंदिर के दृश्य, गड़ीसर लेक पर पानी की बूंदों से निर्मित स्क्रीन पर 3डी वीडियो प्रोजेक्शन मैपिंग के माध्यम से लोंगेवाला युद्ध का दृश्य दिखाया गया है। इसके साथ ही राजस्थानी गीतों पर संगीत मय फव्वारों का नृत्य भी दिखाया गया है।

चित्तौड़गढ़ फोर्ट

परम्परागत लाइट एवं साउंड शो में चित्तौड़गढ़ दुर्ग की स्थापना की कहानी, आक्रान्ताओं द्वारा दुर्ग पर आक्रमण, दुर्ग को लम्बे समय तक घेरने की कहानी, रानी पद्मिनी की सूझबूझ, युद्धकौशल की कहानी, गौरा बादल के वीरता और बलिदान की गाथा, रानी पद्मिनी द्वारा अन्य वीरांगनाओं के साथ किए गए जौहर आदि का चित्रण किया गया है।

जय निवास उद्यान, जयपुर

शो में जयपुर के राजा के सपनों में भगवान श्रीकृष्ण का आना और वृदांवन से गोविन्ददेव जी की प्रतिमा को लाकर जयपुर में स्थापित करना, गोविन्ददेव जी मूर्ति के सम्बन्ध में भूतकाल में हुए वृतांत, गोविन्ददेव जी का वृन्दावन में प्रवास, आक्रांताओं द्वारा गोविन्ददेव जी के वृंदावन मंदिर को तोड़ना, वृदांवन से जयपुर तक गोविन्ददेव जी की मूर्तियों को छिपाकर लाना, कनक वृन्दावन में गोविन्ददेव जी की मूर्तियों को अस्थायी रूप से स्थापित करना, उसके बाद जयनिवास उद्यान में स्थापित करना, गोविन्ददेव जी की जयपुर की जनता द्वारा जयपुर के प्रथम आराध्य के रूप में पूजना, आदि का चित्रण 3डी वीडियो प्रोजेक्शन आधारित लाइट एवं साउंड शो किया गया है।

मचकुण्ड, धौलपुर

इस शो में महाराजा मचकुण्ड द्वारा भगवान इन्द्र की दानवों के साथ हुए युद्ध में सहायता करना, भगवान इंद्र द्वारा महाराजा मचकुण्ड को चिर निद्रा का वर देना, कालयवन राक्षस द्वारा ऋषि मुनियों को परेशान करना, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कालयवन को चुनौती देकर महाराजा मचकुण्ड की गुफा में जाना, कालयवन द्वारा महाराजा मचकुण्ड को निद्रा से जगाना और महाराजा मचकुण्ड के क्रोधवश आंखों से निकली अग्नि से कालयवन का अंत होना। महाराजा मचकुण्ड द्वारा धौलपुर यज्ञ करके मचकुण्ड का निर्माण करना, समय समय पर मचकुण्ड पर हुए मंदिरों की निर्माण की कहानी, धौलपुर और आस-पास के क्षेत्रों में मचकुण्ड की महत्ता का वर्णन 3डी वीडियो प्रोजेक्शन आधारित लाइट एवं साउंड शो किया गया है।

मीराबाई स्मारक मेड़ता, नागौर

परम्परागत लाइट एवं साउंडशो में मीरा बाई के बाल्यकाल की घटनाओं, मीरा बाई का भगवान श्रीकृष्ण के लिये प्रथम आकर्षण, मीरा बाई द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को अपना पति और आराध्य मानने का वृतांत, मेवाड़ के राजकुमार के साथ मीरा बाई विवाह, मीरा बाई के पति देहावसान और उसके बाद की घटनायें, मीराबाई द्वारा राजसी वैभव को छोड़कर सम्पूर्ण रूप से वैराग्य का पथ पकड़ना, वृन्दावन और द्वारका में प्रवास और प्रवास के दौरान हुए वृतांत का लाइट एंड ऑडियो फीचर्स के माध्यम चित्रण किया गया है। शो को मीरा बाई से संबंधित बहुत ही मधुर भजनों द्वारा बहुत रोमांचक और भक्तिमय बनाया गया है।

लाइट एण्ड साउण्ड शो : झलकियां

गडीसर लेक, जैसलमेर

चित्तौड़गढ़ फोर्ट

मचकुण्ड, धौलपुर

राग–रंग–रोशनी

जय निवास उद्यान, जयपुर

मीराबाई स्मारक मेड़ता, नागौर

प्रदेश में और सशक्त हुआ उपभोक्ता

अब ई–दाखिल से ऑनलाइन शिकायत की सुविधा

प्रदेश और देश का हर व्यक्ति उपभोक्ता है। उसे उसके उपभोक्ता अधिकारों के प्रति जागरूक करने और एक उपभोक्ता के रूप में सामान, सेवा या अन्य आदान–प्रदान में आने वाली समस्याओं से रक्षा कर उसे सशक्त बनाने में राजस्थान हमेशा अग्रणी रहा है। वर्तमान सरकार उपभोक्ता से होने वाले धोखों के प्रति शून्य टॉलरेंस की नीति पर चलती हुई ''शुद्ध के लिए युद्ध'' जैसे अभियान संचालित कर रही है। उपभोक्ताओं को सशक्त बनाने के लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 एवं 2019 को लागू करने में राजस्थान राज्य अग्रणी रहा है। राजस्थान सरकार द्वारा जन हित को सर्वोपरि मानकर आम उपभोक्ता के अधिकारों और उसके हितों के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में व्यापक फैसले किये गए हैं। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 पिछले कानून से ज्यादा सशक्त, व्यापक एवं उपभोक्ता कल्याणकारी है।

रामफूल गुर्जर
सदस्य, राज्य उपभोक्ता आयोग

उपभोक्ता संरक्षण की आवश्यकता एवं अन्य कानून

उपभोक्तावाद के युग में किसी भी जरूरी या गैर जरूरी चीज को खरीदने की होड़ सी लगी है। इसी का फायदा उठाकर कुछ विक्रेता और कंपनिया कई बार लोगों को टूटे हुए, कम मात्रा में, घटिया गुणवत्ता के उत्पाद बेच देते हैं या कीमत से ज्यादा राशि वसूल कर लेते हैं। इस तरह की धोखाधड़ी आये दिन किसी न किसी उपभोक्ता के साथ होती ही रहती है। हालांकि हमारे पास कुछ अन्य कानून भी हैं जो कुछ हद तक उपभोक्ताओं की रक्षा करते हैं। जैसे 'भारतीय अनुबंध अधिनियम 1872', 'वस्तुओं की बिक्री अधिनियम 1936', 'खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006', 'वजन और माप अधिनियम 1976', 'खतरनाक ड्रग्स एक्ट 1952', 'कृषि उत्पाद अधिनियम 1937', 'भारतीय मानक संस्थान अधिनियम 1952' आदि। लेकिन इन कानूनों में दाखिल किया जाने वाला सिविल सूट बहुत महंगा और समय लेने वाला होता है एवं मामले के अंतिम निर्णय आने में कई वर्ष लग जाते हैं।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम क्या है ?

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 लोकसभा में 30 जुलाई, 2019 को एवं राज्यसभा ने 06 अगस्त, 2019 को पारित हुआ। इसे 20 जुलाई 2020 से पूरे देश में एकसाथ लागू किया गया है। उपभोक्ता अदालतों में बड़ी संख्या में लंबित उपभोक्ता शिकायतों को तेजी से हल करने के तरीके और साधनों को शामिल करते इस अधिनियम का मूल उद्देश्य उपभोक्ताओं की समस्याओं को समय पर हल करने के लिए प्रभावी प्रशासन और जरूरी प्राधिकरण की स्थापना करना है।

उपभोक्ताओं के हित की रक्षा के लिए बनाए गए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 को परिस्थिति और जागरुकता के स्तर में बदलाव के कारण दर्ज अधिक शिकायतों के चलते ही अब इस अधिनियम को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के द्वारा अधिकृमित कर दिया गया है। नए अधिनियम में अधिक समग्रता और कठोरता के साथ–साथ सरलीकृत विवाद समाधान प्रक्रिया और शिकायतों के ई–फाइलिंग का प्रावधान भी लाया है। अब उपभोक्ता अपनी शिकायतें अपने निकटतम न्यायालय में दर्ज करा सकते हैं।

उपभोक्ता कौन है ?

कोई भी व्यक्ति जो माल, वस्तु, उत्पाद की खरीद कर अपने लिए उसका उपभोग करता है, वह उपभोक्ता है। किन्तु वस्तुओं और सेवाओं को बेचने के लिए या वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए खरीदने वाला इसमें शामिल नहीं है। हालांकि स्वरोजगार

के रूप में जीविका अर्जन के लिए उपयोग को वाणिज्यिक नहीं माना जाता है। इस परिभाषा में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यम शामिल हैं।

उपभोक्ताओं के अधिकार

वस्तुओं या सेवाओं की मात्रा, गुणवत्ता, शुद्धता, क्षमता, कीमत और मानक के बारे में जानकारी प्राप्त करना, खतरनाक वस्तुओं और सेवाओं से सुरक्षित रहने का अधिकार, अनुचित या प्रतिबंधात्मक व्यापार प्रथाओं से संरक्षित रहने का अधिकार एवं प्रतिस्पर्धी कीमतों पर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं या सेवाओं की उपलब्धता उपभोक्ता का अधिकार है।

शिकायत कहाँ और कैसे ? राज्य सरकार की नि:शुल्क सेवा

औपचारिक रूप से यह उपभोक्ता का कर्तव्य है कि वह शिकायत दर्ज करने से पहले विक्रेता या कम्पनी को उसकी वस्तु या सेवा में कमी के बारे में एक नोटिस के माध्यम से मामले को अवगत कराये। यदि विक्रेता या कंपनी अपने उत्पाद या सेवा को ठीक करने के लिए तैयार हो जाता है, तो मामला वहीं पर खत्म हो जाता है परंतु यदि नोटिस देने के बावजूद भी विक्रेता या कंपनी उपभोक्ता की समस्या का समाधान नहीं करे तब उपभोक्ता द्वारा अदालत का दरवाजा खटखटाया जा सकता है।

राजस्थान सरकार ने उपभोक्ताओं के संरक्षण के लिए पृथक से उपभोक्ता निदेशालय बनाया है। यह कार्यालय जयपुर रेलवे स्टेशन के सामने, होटल स्वागत के परिसर में प्रथम मंजिल पर अवस्थित है। आम उपभोक्ता अपनी शिकायत प्रबंधक, राज्य उपभोक्ता हेल्प लाइन, जयपुर के नाम से सादा कागज पर कार्यालय में उपस्थित होकर या ऑनलाइन भी दर्ज करा सकते हैं। इसके अतिरिक्त निम्न माध्यमों से भी शिकायत दर्ज करा समाधान पाया जा सकता है:-

- राजस्थान सरकार की कंजूमर हेल्पलाइन का टोल फ्री नं. 1800-180-6030
- हेल्पलाइन का वाट्सएप नं. 7230086030
- उपभोक्ता विभाग की वेबसाइट www.consumeradvice.in
- अथवा उपभोक्ता आयोग में शिकायत दर्ज कराने के लिए नि:शुल्क विधिक सहायता हेतु इस क्षेत्र मे कार्य करने वाले स्वैच्छिक संगठन (एनजीओ) जैसे कंजूमर्स एक्शन एंड नेटवर्क सोसायटी ''केन्स'' इत्यादि में।

प्रदेश मे ई-दाखिल की शुरुआत

अभी हाल ही मे 28 जनवरी, 2022 से ई-दाखिल पोर्टल पर कई सुविधाएं शुरू की गई हैं। डिजिटल माध्यम से उपलब्ध इस मंच पर ई-नोटिस, मामले से जुड़े दस्तावेजों को डाउनलोड करने के लिए लिंक, वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से सुनवाई के लिए वीसी लिंक, विपरीत पक्ष द्वारा लिखित जवाब दाखिल करने की सुविधा और एसएमएस व ई-मेल पर अलर्ट की सुविधा उपलब्ध है।

ऐसे दर्ज करा सकेंगे शिकायत

ई-दाखिल पोर्टल पर उपभोक्ता https://edaakhil.nic.in http://consumeraffairs.raj.nic.in वेबसाइट पर जाकर स्वयं को पंजीकृत करने के बाद अपनी शिकायत राज्य आयोग एवं समस्त जिला आयोगों मे ऑनलाइन दर्ज कर फीस का भुगतान भी ऑनलाइन करवा सकते हैं। इससे उपभोक्ता के समय व धन की बचत होगी। आयोग भी ऑनलाइन ही शिकायतों को स्वीकार या अस्वीकार करने संबंधी निर्णय कर सकते हैं। यदि परिवाद किसी अन्य आयोग से संबंन्धित हो

तो उसे संबंधित आयोग में भेजा जा सकता है। ग्रामीण उपभोक्ता, जिनके पास इलेक्ट्रॉनिक संसाधन न हो या उन्हें पोर्टल पर शिकायत दर्ज करने में परेशानी हो, वे अपनी शिकायत उपभोक्ता आयोग तक पहुंचाने के लिए सामान्य सेवा केंद्र (सीएससी) या ई-मित्र की सेवाएं ले सकते हैं।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की प्रमुख विशेषताएं

इस अधिनियम में उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण की स्थापना का प्रावधान है जो उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा करने के साथ-साथ उनको बढावा देगा और लागू करेगा। यह प्राधिकरण अनुचित व्यापार प्रथाओं, भ्रामक विज्ञापनों और उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन से संबंधित मामलों को भी देखेगा। प्राधिकरण के पास उल्लंघनकर्ताओं पर जुर्माना लगाने और बिके हुए माल को वापस लेने या सेवाओं को वापस लेने के आदेश पारित करना,अनुचित व्यापार प्रथाओं को बंद करने और उपभोक्ताओं द्वारा भुगतान की गई कीमत को वापस दिलाने का अधिकार भी होगा।

आर्थिक अधिकार क्षेत्र

उपभोक्ता कानून 2019 में 50 लाख रुपए तक के मामले जिला उपभोक्ता आयोग में, 50 लाख से अधिक किन्तु 2 करोड़ रुपये तक के प्रकरण राज्य उपभोक्ता आयोग में तथा दो करोड़ से अधिक के मामलों में वाद राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग, दिल्ली में दायर करने का प्रावधान किया गया है।

केस दर्ज करने की प्रक्रिया

राजस्थान राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग का मुख्यालय, जयपुर शहर में पाँचबत्ती के पास, सी स्कीम में हैंडलूम हवेली, अशोक मार्ग पर है। आयोग की 4 सर्किट बैंच जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर एवं कोटा है (भरतपुर और अजमेर में भी शीघ्र शुरू होने वाली है)। राज्य के सभी जिलों में कुल 37 जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग उपभोक्ता हितों में कार्य कर रहे हैं।

उपभोक्ता को चाहिए कि पहले फोरम के न्याय क्षेत्र की पहचान करे, जहां शिकायत दर्ज की जानी है। इसका निर्धारण करने के दो तरीके हैं। पहला, वस्तु या सेवा प्रदाता की दुकान या सेंटर किस क्षेत्र में है। दूसरा, वस्तु या सेवा की कीमत कितनी है। कोई त्रुटि हो या सेवा दोष हो तो वह उपभोक्ता आयोग में अपने हक के लिए पंजीकृत डाक द्वारा या स्वयं भी या अपने अधिकृत प्रतिनिधि या अधिवक्ता के माध्यम से निर्धारित शुल्क के साथ वाद दायर कर सकते हैं।

परिसीमा अवधि

जिला आयोग, राज्य आयोग या राष्ट्रीय आयोग केवल 'कॉज ऑफ ऐक्शन' के दो वर्ष की अवधि के भीतर फाइल किए परिवाद ही स्वीकार करते हैं। इससे अधिक देरी होने पर आयोग द्वारा स्वीकार्य व्याख्या की आवश्यकता होती है। शिकायत का ड्राफ्ट तैयार करना, आयोग के क्षेत्राधिकार का उल्लेख कर अंत में हस्ताक्षर जरूरी हैं। अन्य व्यक्ति के माध्यम से दर्ज कराने पर शिकायत पत्र के साथ एक प्राधिकार पत्र भी लगाना होगा। शिकायतकर्ता का नाम, पता, विषय, विपक्षी पक्ष या पार्टियों के नाम, उत्पाद का विवरण, क्षतिपूर्ति राशि का दावा इत्यादि का पूरा उल्लेख जरूरी है। शिकायत के साथ सभी तथ्यों के सही होने के सम्बन्ध में एक हलफनामा भी दर्ज करना होता है।

आरोप का समर्थन करने वाले सभी दस्तावेज की प्रतियां, जैसे खरीदे गये सामान के बिल, वारंटी एवं गारंटी दस्तावेजों की फोटोकॉपी, कंपनी या व्यापारी को की गयी शिकायत की एक प्रति, उत्पाद को सुधारने का अनुरोध करने के लिए व्यापारी को भेजे गये नोटिस की कॉपी लगानी होती है। शिकायत में क्षतिपूर्ति के अलावा धन वापसी, मुकदमेबाजी में आयी लागत, ब्याज, उत्पाद की टूट-फूट और मरम्मत में आने वाली लागत का पूरा खर्चा मांगा जा सकता है। खर्चों को अलग-अलग मदों के रूप में लिखना होता है एवं कुल मुआवजा शिकायत आयोग की श्रेणी के हिसाब से ही मांगा जाना चाहिए।

सुनवाई की प्रक्रिया

प्रत्येक परिवाद की सुनवाई जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय आयोग द्वारा शपथ पत्र और अभिलेख पर रखे दस्तावेजी साक्ष्य के आधार पर की जाती है। उपभोक्ता आयोग आवश्यक समझे तो ऐसा अंतरिम आदेश पारित कर सकेगा जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में

रखकर न्यायोचित एवं उचित हो। सभी उपभोक्ता आयोग के समक्ष प्रत्येक कार्यवाही भारतीय दंड संहिता की धारा 193 और धारा 228 के अर्थ में न्यायिक कार्यवाही समझी जाती है और जिला आयोग दंड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 195 और अध्याय 26 के प्रयोजनार्थ दांडिक न्यायालय समझा जाता है।

कतिपय मामलों में आयोग द्वारा पुनरावलोकन

उपभोक्ता आयोग उसके द्वारा पारित किसी भी आदेश का और अन्य अभिलेख को देखते हुए कोई स्पष्ट त्रुटि है तो वह स्वप्रेरणा से या पक्षकारों में से किसी भी पक्षकार द्वारा ऐसे आदेश के 30 दिवस के भीतर किये गये आवेदन पर रिव्यू करने की शक्ति रखता है। जबकि ऐसा प्रावधान पुराने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 में नहीं था।

जिला आयोग के आदेश के विरुद्ध अपील

जिला आयोग द्वारा किये गये किसी आदेश से व्यथित कोई उपभोक्ता ऐसे आदेश की तारीख से 45 दिवस की अवधि के भीतर राज्य आयोग को अपील कर सकेगा। इस अवधि के बाद देरी का स्वीकार्य कारण होने पर ही अपील ग्रहण की जा सकती है।

नये अधिनियम लागू होने से उपभोक्ता को फायदा

जिला (पूर्व नाम उपभोक्ता मंच) राज्य एवं राष्ट्रीय आयोग द्वारा पारित निर्णय के बाद कोई भी विपक्षी (कम्पनी या कार्यालय या बैंक या अन्य कोई और) परिवादी को आयोग द्वारा तय किया गया क्षतिपूर्ति क्लेम न देकर मात्र 25 हजार रुपये जमा करा कर अपील कर दिया करते थे। जिससे उपभोक्ताओं को काफी इंतजार करना पड़ता था। किन्तु अब उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 में उपभोक्ताओं के हित में पारित निर्णय में वकील का खर्च और उपभोक्ता को मानसिक एवं शारीरिक वेदना के बदले आयोग द्वारा निर्धारित अनुतोष निश्चित समयावधि में मय वार्षिक ब्याज के उपभोक्ताओं को विपक्षी द्वारा अदा करना है अन्यथा पारित निर्णय के विरुद्ध अगले आयोग में अपील किये जाने पर आयोग द्वारा निर्धारित की गई क्षतिपूर्ति राशि का 50 प्रतिशत राशि जमा कराने के बाद ही अपील स्वीकार की जाती है।

इसी प्रकार पहले ई-कॉमर्स या डिजिटल या ऑनलाइन खरीददारी 1986 के पुराने उपभोक्ता संरक्षण कानून के दायरे से बाहर थी। किन्तु अब 2019 के उपभोक्ता कानून में ऑफलाइन व ऑनलाइन दोनों को कानून के दायरे में लेकर निर्माता और सेल्समैन की जवाबदेही सुनिश्चित कर दी गई है। पहले उपभोक्ताओं के साथ जिस जगह धोखा हुआ है, पुराने कानून के तहत उसी जिले के आयोग में वाद दायर किया जा सकता था, किन्तु अब सरलीकरण करके आम उपभोक्ता को निवास स्थान पर या कहीं भी संबंधित जिला आयोग में वाद दायर करने की सुविधा प्रदान कर उसे और अधिक मजबूत बना दिया गया है।

आदेश की अनुपालना नहीं करने पर दंड

जिला आयोग, राज्य आयोग या राष्ट्रीय आयोग द्वारा दिये गये किसी आदेश का अनुपालन करने में असफल रहने पर कारावास की सजा एक माह से कम नहीं होगी किन्तु तीन वर्ष तक हो सकेगी या जुर्माने के रूप में 25 हजार से कम नहीं होगी और एक लाख रुपये तक का दंड दिया जा सकेगा। दंड प्रक्रिया संहिता 1973 के तहत जिला, राज्य व राष्ट्रीय आयोग को उपधारा (1) के अधीन अपराधों की रोकथाम के लिए प्रथम वर्ग न्यायिक मजिस्ट्रेट की शक्ति होगी।

राज्य आयोग के समक्ष अपील दायर करने और सुनवाई की प्रक्रिया

प्रत्येक ज्ञापन के साथ जिला आयोग के आदेश, जिसके विरुद्ध अपील की गई हैं, की प्रमाणित प्रति और ऐसे दस्तावेज, जो ज्ञापन में उल्लेखित अपील के आधारों को समर्थित करने के लिए अपेक्षित हों, प्रस्तुत की जानी चाहिए। अपीलकर्ता अथवा उसका प्राधिकृत अभिकर्ता अनुपस्थित रहता है तो आयोग अपने विवेक के अनुसार अपील को खारिज कर सकता हैं या वाद की विशिष्टता के आधार पर एकपक्षीय निर्णय दे सकता है।

उपभोक्ता आयोग का दायरा

उपभोक्ता आयोग के दायरे में केन्द्र एवं राज्य सरकार के विभाग जैसे रेलवे, वायु परिवहन सेवा, सड़क परिवहन, पर्यटन, विदेश घुमाने के लिए सभी तरह की एजेंसी एवं सभी तरह के निजी और सार्वजनिक बैंक, बीमा, आम आदमी की रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े अन्य विभाग जैसे चिकित्सा, बिजली, टेलीफोन, पानी आवासन मण्डल, जयपुर विकास प्राधिकरण नगर विकास न्यास, नगरपालिका, नगर परिषद, नगर निगम, सभी बिल्डर्स, रियलएस्टेट, निजी एवं सरकारी अस्पताल, वित्तीय कम्पनियां, सभी तरह की दुकानें, होटल, रेस्टोरेंट एवं शॉपिंग मॉल आते हैं।

अपील की सुनवाई

राज्य आयोग या राष्ट्रीय आयोग के समक्ष फाइल की गई अपील पर यथा सम्भव शीघ्र सुनवाई की जाती है। अपील को उसके ग्रहण किये जाने की तारीख से 90 दिवस की अवधि के भीतर अन्तिम रूप से निस्तारण करने का प्रयास किया जाता है।

उपभोक्ता आयोग की व्यवस्था

कोई भी उपभोक्ता आयोग जो एक नियमित न्यायालय नहीं हैं, की व्यवस्था इस प्रकार रहती है जिससे कि वह किसी भी न्यायालय से अलग दिखाई दे। वह हॉल जिसमें उपभोक्ता आयोग पक्षकारों को सुनता है, में डाइस को पक्षकारों के बैठने के लिए निश्चित किये गये स्थान से 30 सेंटीमीटर से अधिक ऊंचा नहीं रखा जाता। इसी प्रकार डाइस पर उपभोक्ता आयोग के अध्यक्ष और सदस्य समान स्तर पर, समान प्रकार की कुर्सी का उपयोग कर बैठते हैं तथा इन कुर्सियों का पिछला भाग ऊंचा होना आवश्यक नहीं है। शिकायतकर्ता और विरोधी पक्षकार व्यक्तिगत रूप से अथवा काउंसिल के माध्यम से उपस्थित हो सकते हैं।

ऑपरेशन सर्द हवा

सरहद की सर्द रातों में हौसले की गर्म जोशी

हर मौसम सरहद की सुरक्षा में समर्पित बीएसएफ के जवान

अनिल कुमार शाक्य
जनसम्पर्क अधिकारी, श्रीगंगानगर

सरहद शब्द सुनते-पढ़ते ही तारबंदी या फिर ऐसी दीवार मन में उभरती है, जो इतिहास में हुए बंटवारे के कारण इसके दोनों तरफ की ''दो दुनियाओं'' के अलगाव को बयां करती है। श्रीगंगानगर जिला मुख्यालय से कुछ ही किलोमीटर दूर दोनों इलाकों को एक-दूसरे से बांटने वाली भारत-पाकिस्तान की सरहद राजस्थान के चार जिलों (श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर) के हिस्से आती है। पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटा श्रीगंगानगर सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। सीमा की सुरक्षा में जुटे बीएसएफ के जवान हरेक मुश्किल में चुनौतियों से पार पाने के लिए हर समय तैयार खड़े हैं।

सर्दी के साथ-साथ गर्मी के लिए भी चर्चित रहने वाले गंगानगर में रेत के बारीक कणों की वजह से मौसम बेहद ठंडा रहता है। कई बार रातभर बारिश होती रहती है और अगर कोहरे की चादर आसमान को अपने आगोश में कर ले तो हालात और भी मुश्किल बन जाते हैं। ऐसे समय सरहद की निगरानी बेहद मुश्किल जान पड़ती है, लेकिन श्रीगंगानगर में भारत-पाक अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पर बीएसएफ के जवान 24 घंटे और 365 दिन पूरी मुस्तैदी के साथ तैनात रहते हैं। इन जवानों की मुस्तैदी इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि ऐसे मौसम और हालात के दौरान ही सरहद की दूसरी ओर से घुसपैठ की कोशिशें अंजाम दी जाती हैं। परन्तु बीएसएफ जवानों की निरंतर और नियमित गश्त के चलते घुसपैठियों के मंसूबे धरे के धरे रह जाते हैं।

अमूमन बीएसएफ की गश्ती टीम तारबंदी के साथ-साथ करीब 800 से 1000 मीटर तक पैदल गश्त करती है। रात में अंधेरा और कोहरा छाने पर बीएसएफ के जवान नाइट विजन डिवाइस की मदद से तारबंदी पर नजरें गड़ाए रहते हैं। जवानों की नियमित और मुस्तैद चौकसी की वजह से बॉर्डर के उस पार से की गई तस्करी की कई कोशिशें नाकाम हुई हैं। घुसपैठ रोकने के अलावा जवान सीमा पार से होने वाली तमाम की गतिविधियों पर भी कड़ी नजर रखते हैं।

ऐसे में बीएसएफ की ओर से जवानों को मौजूदा हालातों से निपटने के लिए आवश्यक ट्रेनिंग देने के साथ-साथ विशेष इंतजामात भी किए जाते हैं। मसलन सर्द रातों में गश्त करने वाले जवानों को ड्यूटी पर जाते समय गर्म पानी और चाय दी जाती है तो खाने में संतुलित व पौष्टिक डाइट मिलती है। जवानों को बरसाती और विशेष किस्म के जूते देने के अलावा सर्दी और खराब मौसम से बचने के लिए जैकेट भी दी जाती है। बीओपी टावर पर निगरानी करने वाले जवानों को नाइट विजन डिवाइस उपलब्ध करवाई जाती हैं ताकि अंधेरे-कोहरे की वजह से

तारबंदी तक देखने में कोई परेशानी ना हो। दिन में निगरानी के लिए जवानों को दूरबीन दी जाती है, जिससे कई किलोमीटर तक का क्षेत्र कवर होता है।

ऐसे ही मुश्किल हालात के बीच बीएसएफ की ओर से बीती 20 जनवरी को भारत-पाक की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा के लिए ''ऑपरेशन सर्द हवा'' चलाया गया। पन्द्रह दिनों तक चले इस ऑपरेशन के तहत जवानों के साथ-साथ बीएसएफ के अधिकारियों ने भी रात को बॉर्डर पर रुककर निगरानी की। सर्दी और धुंध के कठोर समय में बॉर्डर पर निगरानी तंत्र को मजबूती देने के लिए राजस्थान फ्रंटियर की ओर से प्रतिवर्ष सर्दियों में ऑपरेशन सर्द हवा चलाया जाता है।

इस बार यह ऑपरेशन 20 जनवरी से शुरू हुआ, जिसमें बॉर्डर पर विषम परिस्थितियों के बीच जवानों की हौसला अफजाई के लिए बीएसएफ के आईजी, डीआईजी, कमांडेंट और कंपनी कमांडर रैंक तक के अधिकारी शामिल हुए। इन अधिकारियों ने बॉर्डर पर रात को बीएसएफ के गश्ती दल के साथ रहकर न सिर्फ निगरानी की बल्कि निगरानी के तौर-तरीकों के बारे में भी समझा-समझाया। आवश्यकता के अनुसार अधिकारियों ने बीएसएफ जवानों को गश्त के तौर-तरीकों में बेहतरी के सुझाव देते हुए सुधार के उपाय भी बताए।

अंतरराष्ट्रीय सीमा के साथ-साथ बीएसएफ के जवान अंतराज्यीय सीमा पर भी कड़ी निगरानी रखते हैं। पंजाब में विधानसभा चुनाव होने की वजह से बीएसएफ की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। चुनावों को प्रभावित करने के लिए मादक पदार्थ हेरोइन, नकली भारतीय मुद्रा और हथियारों की अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर से तस्करी की आशंका के चलते भी अंतराष्ट्रीय व अंतरराज्यीय सीमा की चौकसी महत्वपूर्ण हो जाती है। इस नजरिये से देखें तो श्रीगंगानगर की कई सौ किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा की निगरानी के लिए बीएसएफ की कई बटालियन नियुक्त हैं। प्रत्येक बटालियन के पास कई किलोमीटर क्षेत्र की निगरानी का जिम्मा है।

बहरहाल, तमाम चुनौतियों और परेशानियों से रोजाना दो-चार होने के बावजूद बीएसएफ के जवानों का ना तो हौसला कम होता है, न उनकी कर्तव्यनिष्ठा। सर्दी-गर्मी, धूल भरी आंधियों के साथ-साथ 50 डिग्री सेल्सियस तक तापमान पहुंचने के बावजूद गंगानगर की सरहद अपने जाबांज जवानों की बदौलत ही सुरक्षित है। अंतरर्राष्ट्रीय सीमा से बेशक सरहद लांघने की एक के बाद एक नापाक कोशिशें होती रही हैं, लेकिन भारतीय जवानों की चौकस नजरों के चलते घुसपैठियों को हर बार मुंह की खानी पड़ी है।

सबसे महत्त्वूपर्ण यह है कि हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली नारीशक्ति भी सरहद पर मजबूती के साथ हाथों में राइफल थामे रहती हैं। विपरीत हालातों में इन जवानों का जज्बा ही दुश्मनों का दम निकालने के लिए काफी है। कड़ाके की भीषण शीतलहर और झुलसा देने वाली गर्मियों में सरहद पर खड़े इन जवानों की वजह से ही आप और हम अपने घरों के रजाई-बिस्तरों में चैन की नींद सो पाते हैं।

भारत-पाक अन्तरराष्ट्रीय सीमा पर देशवासियों के अमन-चैन की निगहबानी करती चौकस निगाहें

Envisaged by the Hon'ble Chief Minister Shri Ashok Gehlot, every citizen of the state should be made easily accessible to health services, for this, while expanding the health insurance scheme already running, the Hon'ble Chief Minister launched the Chief Minister Chiranjeevi Health Insurance Scheme on May 1, 2021. In which the goal was to connect all the families of each individual residing in the state.

Mukhyamantri Chiranjeevi Swasthya Bima Yojna

'CHIRANJIVI ARMOR' TO

Akanksha Palawat
P.R.O., Jodhpur

Rajasthan Government has always worked hard towards providing quality healthcare facilities for its people. Activities such as creating infrastructure and promoting health awareness are conducted by authorities for the welfare of people. The Government constantly tries to enhance the healthcare quotient of the region by offering different schemes for people. One such milestone is the Mukhyamantri Swasthya Bima Yojna (Chief Minister Chiranjeevi Health Insurance Scheme). This scheme is a promise of providing free healthcare to every single person in the state. A complete cover to all the medical requirements.

Envisaged by the Hon'ble Chief Minister Shri Ashok Gehlot, every citizen of the state should be made easily accessible to health services, for this, while expanding the health insurance scheme already running, the Hon'ble Chief Minister launched the Chief Minister Chiranjeevi Health Insurance Scheme on May 1, 2021. In which the goal was to connect all the families of each individual residing in the state. Along with government hospitals in Jodhpur district, so far 44 private hospitals have joined Chief Minister Chiranjeevi Swasthya Bima Yojana. Packages worth Rs 91,20,47,918 were booked for the free treatment of 1,10153 patients in the district from May 1, 2021 to January 31, 2022.

As per CMHO Dr. Balwant Manda, Chiranjeevi Jodhpur campaign is on mission mode as 9 gram

panchayats of the district namely, Dudabera of Balesar panchayat samiti, Baba ka Dhora and Dadu Dayal Nagar of Baap Khand's Ghatiyali panchayat samiti, Sodha Dhera of Baap panchayat samiti, Gumansinghpura of Shergarh panchayat samiti, Vimardevgarh of Denchu panchayat samiti, Uchiyarda and Surpura of Mandor panchayat samiti, Hamir Nagar of Luni panchayat samiti have been declared Chiranjeevi already with complete registration.

चिरंजीवी
मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना

Packages worth Rs. 91,20,47,918 were booked for the free treatment of 1,10153 patients in the district Jodhpur from May 1, 2021 to January 31, 2022.

9 GRAM PANCHAYATS

Under the direction of the district administration, a target was set to connect every family of the district with the scheme to make the Chiranjeevi Jodhpur campaign a success. Under this, all health services are being provided free of cost to the citizens under one roof by organizing health camps at every gram panchayat level in Chief Minister Nirogi Rajasthan Chiranjeevi Health Camps. A target has been set to organize 647 health camps in Jodhpur district. In which 627 gram panchayat level and 20 mega camps are being organized at the block level in a phased manner. So far, citizens of 9 gram panchayats of the district have done their part in making these gram panchayats into Chiranjeevi gram panchayat by registering themselves in 100 per cent Chiranjeevi health insurance scheme. It will be named "Chiranjeevi Jodhpur". So far, 82,874 patients have been given necessary treatment in 294 health camps organized in the district. Out of which 561 patients with serious illness were referred at a high level.

With a vision to ensure better health care for people, this scheme is benefitting all the citizens of the state. In the times like these, Chiranjivi Health Insurance Scheme has come as a ray of hope to all those who otherwise cannot afford expensive treatment. Not just them, but the scheme highly benefits each and every citizen irrespective of his age, gender, class and economic status. This path breaking initiative is highly applaudable and greatly advantageous for the masses.

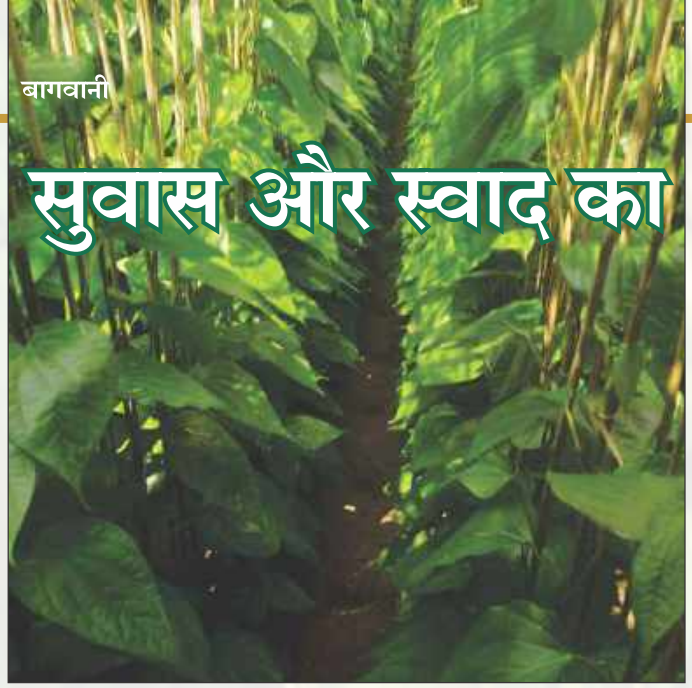

छाया चित्र : ओम प्रकाश वर्मा

सुवास और स्वाद का 'बादशाह', देसी पान

डॉ. कल्याण प्रसाद वर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

पान की जगप्रसिद्ध बनारसी, महोबा, मगधी या मगही जैसी जग प्रसिद्ध किस्मों के बीच राजस्थान के पूर्वांचल में होने वाले देसी पान के पत्ते की बात ही निराली है। **देसी पान की खेती राजस्थान के पूर्वांचल में भरतपुर जिले के खरैरी, बागरैन, दौसा जिले के गढ़मोरा, सवाईमाधोपुर के लाखेरी, करौली जिले के मासलपुर व उपरेला जैसे गांवों, उदयपुर जिले के कानौड़ कस्बे और बांसवाड़ा जिले में बड़ी संख्या में तम्बोलियों के जीविकोपार्जन का आधार है।** मध्यप्रदेश में ग्वालियर जिले के समीप 'आंतरी', 'बिलौआ', संदलपुर में भी देशी पान की खेती से बड़ी संख्या में लोग जुड़े हैं।

देशी पान का जायका कुछ ऐसा है कि इसका पत्ता मुंह में घुलते ही हवा के रुख पर सवार उसकी 'सुवास' काफी दूर तक पहुंच जाती है। देशी पान बहुत ही मुलायम और स्वाद में बहुत तेज होता है, यही कारण है कि इसे सभी पानों का ''बादशाह'' कहा जाता है। पान की खेती में विशेष कौशल की आवश्यकता होती है जिसमें उसे सीधे अधिक धूप और हवा से बचाना होता है। हालांकि पान अधिकतर पहाड़ की तलहटी में उत्पन्न किए जाने के कारण इसका धूप और ठंडी हवा से प्राकृतिक रूप से भी बचाव रहता है।

भारतीय संस्कृति में रचा-बसा ताम्बूल

भारतीय संस्कृति में विशेषकर धार्मिक संस्कारों में 'पान' (ताम्बूल) का बहुत महत्त्व है। कहना न होगा 'पान' भारतीय संस्कृति में इस प्रकार रचा-बसा है कि 'जन्म, मरण और परण' तीनों में ही इसकी उपस्थिति आवश्यक मानी गयी है। यही कारण है कि जहां 'पान' 'औषध' है वहीं अनुपान अर्थात् मान-सम्मान का प्रतीक भी है। तभी तो जहां 'पान लबों (मुंह) की शान है, वहीं फैशन से लेकर पूजा तक पान का माहात्म्य जुड़ा हुआ है। सौभाग्य, सम्मान, शृंगार व शोहरत का प्रतीक 'पान' संस्कृत के 'ताम्बूल' का ही पर्यायवाची शब्द है।

पान के पत्ते में लौह तत्त्व, वीटा कैरोटीन, यूजीनोल तथा हाइड्रॉक्सी चेबीकोला जैसे एण्टीऑक्सीडेन्ट पाये जाते हैं। पान मुंह का जायका और मुखशुद्धि के साथ-साथ मुख के कई विकारों को दूर करने में भी लाभदायक सिद्ध होता है। नागपुर (महाराष्ट्र) की माधुरी पाटील ने लिखा है ''पान में औषधीय गुण हैं। प्यास बुझाने में पान के पत्ते काफी उपयोगी होते हैं। पत्तों से निकाला गया तेल एंटीसेप्टिक का काम करता है और श्वासनली में होने वाली सूजन में भी इसका उपयोग होता है। पान को शहद के साथ खाने से कफ की शिकायत दूर होती है।'' जहां पान में अनेक औषधीय गुण हैं, वहीं मान सम्मान का प्रतीक बनकर यह जीवन के विविध रंगों-उत्सवों का सहभागी भी है। आजकल शादियों में 'पान' मूस बहुत पसन्द किया जा रहा है। आइसक्रीम में पान का स्वाद छाने के बाद अब मूस में भी इसका फ्यूजन देखा जा रहा है। पान के पत्तों में भरी क्रीम स्वाद को बढ़ा रही है। पान हमारे जीवन और तहजीब में इस तरह रच-बस गया है कि इसके वजूद को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

नागलोक का उपहार

आर्ष ग्रंथों के अनुसार 'पान' की लता 'नागवेलि' सर्वप्रथम नागलोक से आयी हुई मानी गई है। बकौल कुबेरनाथ राय, 'ऐसा उल्लेख मिलता है कि इसका जन्म पाताल-लोक में रखे अमृतकुंभ से हुआ, जिसकी रक्षा मणिधर नाग करते हैं। पहले यह नागवेलि नरलोक में आना नहीं चाहती थी, क्योंकि उसे भय था कि जिस लता में न फूल लगें न फल लगें, ऐसी स्थिति में धरती पर उसका क्या सम्मान होगा?' तब धरती माता ने कहा, 'न दे फल और फूल मुख की शोभा तो बढ़ाएगी।' और धरती माता ने स्वयं उसे लाकर पृथ्वी पर स्थापित कर दिया। कहा जाता है तभी से 'पान' धरती पर विद्यमान है।

पान की प्रजातियां

पान एक लता या बेल है। स्थान के आधार पर पान की किस्में और प्रजातियां भी अलग-अलग हैं। इनमें बनारसी, मगधी (मगही), बंगला, जगन्नाथी, सांची, मजाल, हरगौरी, मद्रासी, कपूरी, रामटेकी, बरुई, असम का गाछा, दिसावरी, मालवी, महोबा, मीठा, मूंगिया, कलकतिया, गहमी, गोल्टा, लवंगी, अल्कुर, कोटाकोड़ी, आवंदी और देशी पत्ता (पान) उल्लेखनीय हैं।

पनेरी, बरई, तम्बोली

पान की खेती करने वाले को 'पनेरी' या तमोली (तम्बोली) कहा जाता है, जो बंगाल में बारुई और हिन्दी में बरई है। 'बरई' संभवतया ब्रज की बोली का शब्द लगता है, तभी उत्तर प्रदेश से सटे शहरों और कस्बों-गांवों में 'बरही' बोला भी जाता है, तथापि ताम्बूल अर्थात् पान

की खेती करने वालों के लिए तम्बोली का निहितार्थ सही व सटीक है। उत्तर भारत में राजस्थान व मध्यप्रदेश सहित पान की खेती करने वाले अधिकांश चौरसिया और यदुवंशी तम्बोली ही हैं। 'पान' अर्थात् नागवेलि तम्बोली जाति के जीवन का आधार है और उसकी अस्मिता से जुड़ा हुआ है।

पान की खेती की प्रक्रिया

पान की खेती महंगी और श्रमसाध्य है। इसके खेत को बरेजा कहा जाता है। पहले एक वर्गाकार खेत में पत्थरों से बाड़ तैयार की जाती है। इस खेत के चारों ओर छावन का आधार बनाने के लिए धौंक की 8-9 फीट लंबी लकड़ियां प्रयोग में लाई जाती हैं, जिन्हें पंक्तिबद्ध 1-1 फीट की दूरी पर पारी के दोनों ओर गाढ़ा जाता है। वनक्षेत्र से ऐसी लकड़ियां काटने पर प्रतिबंध होने के कारण अब लोहे की एंगल अथवा बांस लगाने पड़ते हैं। बेल को गर्मी से बचाने के लिए घास (रतैरी) से छावन की जाती है। बेल को सालभर में ऊपर तक पहुंचाने के लिए जड़ों में अनेक प्रकार की मिट्टी डाली जाती है तथा आटे व तिल की खली का घोल डाला जाता हैं। तब कहीं पान उपजता है। पान के स्वादिष्ट और गुणकारी होने की वजह भी यही है कि इसमें देशी उर्वरकों का प्रयोग होता है। पान के नये 'बरेजे' को बनाने और तैयार करने में पनवाड़ियों को इसकी एक बालक की तरह परवरिश करनी पड़ती है। पान के 'बरेजे' के प्रति पान उत्पादक शुचिता का इतना ध्यान रखते हैं कि 'बरेजे' में लोग जूते-चप्पल पहनकर अन्दर प्रवेश नहीं करते।

उपज का समय

हर वर्ष नया बरेजा बनाने का उपक्रम जनवरी-फरवरी (सर्दी) से ही शुरू हो जाता है। मार्च-अप्रेल तक बरेजा पूर्णतया बनकर (छावन सहित) तैयार होता है। पान की कलम पंक्तिबद्ध रूप में बनाई हुई मेड़ पर रोपकर उसे घास से ढंक दिया जाता है। जब तक बरसात नहीं होती, नये बरेजों में दिन में छह-सात बार (विशेषकर मई-जून के महीने में) भारी भरकम मटकों या 'लोट' से एक सिरे से दूसरे सिरे तक कदम-दर-कदम चलते हुए पानी का छिड़काव किया जाता है। नये बरेजे में ही किनारे से 'राजगिरि' के बीज डाले जाते हैं। जैसे-जैसे नये पान आते हैं, कलम के साथ रहने वाला पुराना पान पककर पीला पड़ जाता है जिसे 'पेढ़ी' का पान कहा जाता है। यह अन्य मौसमी पानों की तुलना में खाली व मसालों युक्त यह पान सबसे महंगा बिकता है।

'पान' के पत्तों को अच्छी किस्म का उत्पाद बनाने के लिए उसमें दूध, दही, खली व गेहूं के आटे का घोल बनाकर बेल की जड़ों में डाला जाता है। तापमान को सम रखने के लिए बांस अथवा लोहे या धौंक की लकड़ी के सहारे बीच में चार-चार इंच से सरकंडे लगाकर ऊपर छावन की जाती है। सरकंडों के सहारे पान की बेल (नागवेलि) को कांस (एक प्रकार की घास) बांधकर ऊपर चढ़ाया जाता है, बेल वर्षभर में ऊपर पहुंच जाती है। जैसे-जैसे बेल ऊपर पहुंचती है, नीचे के पान के पत्तों को तोड़कर इकट्ठा कर लिया जाता है। इस बीच सर्दी में बगैर पान की बेल को खोलकर गोल रूप में गाढ़ दिया जाता है, जिसे पान की उत्पादन क्रिया में 'गढ़ा' करना कहा जाता है। उसके बाद फिर से बेल मढ़ती है, इस बीच आने वाले पान भी अच्छी किस्म के व रसभीने होते हैं। पुराने बरेजे में यह क्रम तीन साल तक चलता रहता है।

पान का व्यापार

डंठल के साथ तोड़कर पचास, सौ व दो सौ के क्रम में लगाए गए पानों को घास व कपड़े से ढककर टोकरे में पैक किया जाता है। फिर इसे विभिन्न मंडियों के आढ़तियों को बिक्री के लिए भेज दिया जाता है। राजस्थान के पूर्वी अंचल का बहुत सा पान दिल्ली, आगरा आदि की मंडियों में पहुंचाया जाता है। दिल्ली, आगरा में जितना खपता है उतना रखकर वहां से अन्य जगहों के लिए भेज दिया जाता है। बनारस के दरीबा पान की तरह जयपुर (राजस्थान) में भी 'दरीबा पान' है, जहां पान की मंडी लगती है, उसमें पान के खाली पत्तों की काफी टोकरियां देश के विभिन्न भागों से विभिन्न किस्मों के पान आते हैं और बोली लगाकर बेचान किया जाता है। जयपुर रियासत के महाराजा माधोसिंह मासलपुरी (देशी) पान का टोकरा विशेषकर मंगवाते थे, इससे स्पष्ट होता है कि देशी पान की पहचान रियासतकाल से ही बनी हुई है।

सरोजिनी नायडू देश की सभी महिलाओं के लिए आदर्श का प्रतीक हैं। उन्होंने अपने जीवन के हर मोड़ पर कुशल नेतृत्व का परिचय दिया और साबित किया की नारी शक्ति किसी से कम नहीं। अगर अवसर मिले तो वह क्या कुछ नहीं कर सकती है। अपना सारा जीवन देश सेवा में लगाने वाली इस महान विभूति का नाम हमेशा भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखा रहेगा।

राष्ट्रीय महिला दिवस 13 फरवरी

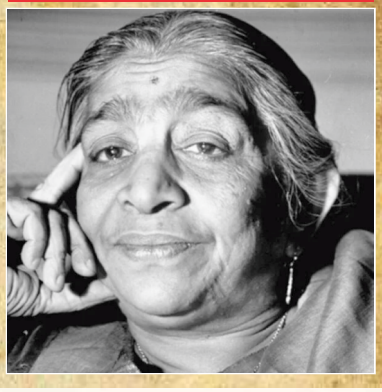

महिला सशक्तीकरण की प्रतीक सरोजिनी नायडू

अलका सक्सेना
अतिरिक्त निदेशक

यह तो अधिकतर लोग जानते हैं कि अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस प्रत्येक वर्ष आठ मार्च को मनाया जाता है, लेकिन महान स्वतन्त्रता सेनानी, सुप्रसिद्ध कवयित्री, बेहतरीन वक्ता एवं महिलाओं के अधिकारों की प्रबल समर्थक ''भारत कोकिला'' सरोजिनी नायडू के जन्म दिवस 13 फरवरी को हर साल आने वाले राष्ट्रीय महिला दिवस की उतनी चर्चा नहीं होती। यह दिन न केवल नायडू के व्यक्तित्व और कृतित्व की याद दिलाता है, बल्कि भारत की हर नारी को समर्पित है। सरोजिनी नायडू के भारतीय समाज में महिला सशक्तीकरण एवं उनके अधिकारों के लिए किये गये प्रयास अपने आप में मिसाल हैं। उन्होनें देश की आजादी की लड़ाई के साथ महिलाओं की आजादी की लड़ाई भी पुरजोर तरीके से लड़ी और वे निश्चित रूप से भारत में महिला सशक्तीकरण के शुरुआती हस्ताक्षरों में शुमार थीं। योग्यता की वजह से उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष चुना गया। वे देश की पहली महिला थीं जो किसी राज्य की गर्वनर बनीं थीं।

सरोजनी नायडू ने अपनी कालातीत रचनाओं के साथ लाखों दिलों को छुआ। अपनी लिखी कविताओं को अत्यन्त मधुर स्वर में पाठ करने के कारण उनको भारत कोकिला या ''नाइटेंगल ऑफ इण्डिया'' भी कहा जाता है।

आसाधारण प्रतिभा की धनी सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री अघोरनाथ चट्टोपाध्याय था जो कि एक वैज्ञानिक एवं शिक्षा शास्त्री थे, जबकि उनकी माता श्रीमती वरदा सुंदरी बंगाली भाषा में कविताएं लिखती थीं। सरोजिनी नायडू उर्दू, तेलगू, इंगलिश, बांग्ला और फारसी भाषा में निपुण थीं। बारह साल की उम्र में ही उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली थी। पिता चाहते थे कि वे गणितज्ञ या वैज्ञानिक बनें परन्तु उनकी रुचि कविता में थी। उन्होंने 13 वर्ष की उम्र में ''लेडी ऑफ दी लेक'' कविता की रचना की। उनके फारसी नाटक 'महर मनीर' से हैदराबाद के निजाम बहुत प्रभावित हुए और सरोजनी नायडू को विदेश में पढ़ने के लिए छात्रवृति दी। मात्र 16 वर्ष की आयु में वे इंग्लैण्ड चली गई जहां उन्होंने किंग्स कॉलेज लंदन में तथा उसके बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शिक्षा हासिल की। वो पढ़ाई के साथ-साथ कविताएं भी लिखती रहीं।

जयपुर की सानवी गौतम द्वारा अखबारी कागज से बनाये स्ट्रॉ के टुकड़ों को जोड़कर निर्मित 'भारत कोकिला' सरोजिनी नायडू का पोट्रेट

सरोजनी नायडू को राजनेता से पहले एक कवियत्री के ''तौर पर पहचान'' मिली। लंदन में पढ़ाई के दौरान उनका पहला कविता संग्रह ''दी गोल्डन थ्रैशोल्ड'' आया जिसे बहुत पसंद किया गया। दूसरे कविता संग्रह ''बर्ड ऑफ टाईम'' और तीसरे संग्रह ''ब्रोकन विंग'' से उन्हें काफी प्रसिद्धि मिली और

वे एक बेहतरीन कवयित्री के तौर पर स्थापित हो गई। उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाओं में ''हैदराबाद के बाजारों में'', ''द क्वीन्स राइवल'', ''द रॉयल टॉम्ब्स ऑफ गोलकोंड़ा'' आदि शामिल हैं।

पढ़ाई पूरी करने के बाद सरोजिनी नायडू ने 19 साल की उम्र में अन्तर्जातीय विवाह किया जो कि उस दौर में मान्य नहीं था। यह एक तरह से क्रांतिकारी कदम था जो यह सिद्ध करता है कि वे दृढ़ निश्चयी और प्रगतिवादी विचार धारा की थीं।

आजादी की लड़ाई के दौरान सरोजिनी नायडू को अनेक बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने महात्मा गांधी के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और घर-घर जाकर स्वतंत्रता की अलख जगाई। वे गांधी जी के साथ जेल भी गई। उन्होंने मदन मोहन मालवीय के साथ 1931 में हुए गोलमेज कॉन्फ्रेन्स में भी हिस्सा लिया। वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान वे 21 महीने जेल में रहीं।

भारत के आजाद होने पर उन्हें उत्तर प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया। इस तरह सरोजिनी नायडू को पहली महिला गवर्नर बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्हें 2 मार्च 1949 को राजनीतिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए उन्हें हार्ट अटैक आया और वे इस लोक को छोड़ गईं। सरोजिनी नायडू देश की सभी महिलाओं के लिए आदर्श का प्रतीक हैं। उन्होंने अपने जीवन के हर मोड़ पर कुशल नेतृत्व का परिचय दिया और साबित किया की नारी शक्ति किसी से कम नहीं। अगर अवसर मिले तो वह क्या कुछ नहीं कर सकती है। अपना सारा जीवन देश और देश सेवा में लगाने वाली इस महान विभूति का नाम हमेशा भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा रहेगा।

स्वतंत्रता आन्दोलन की आवाज

भारत आने के बाद वे गांधी जी से बहुत प्रभावित हुई और अपना आगे का जीवन स्वतंत्रता की लड़ाई में लगाने का निश्चय कर लिया। वर्ष 1905 में बंगाल विभाजन के दौरान उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ली और राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुई, जहां उन्होंने गोपाल कृष्ण गोखले, रविन्द्र नाथ टैगोर, एनीबेसेन्ट, जवाहर लाल नेहरू जैसे नेताओं के साथ काम किया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ सरोजिनी नायडू महिला अधिकारों के लिए हमेशा सशक्त आवाज बनी रहीं। भारतीयों की सोई हुई चेतना को जगाने के लिए सरोजिनी नायडू ने घर-घर जाकर उन्हें स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। वे जब हजारों की भीड़ में भाषण देती थीं तो हर कोई उनके वक्तव्य से आश्चर्य चकित रह जाता था। स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की भागीदारी बेहद कम थी, लेकिन सरोजिनी नायडू ने छोटे से छोटे गांव से लेकर बड़े शहरों तक महिलाओं को स्वतंत्रता आन्दोलन में भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित एवं उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनके द्वारा लिखी गई कविताओं में महिलाओं के अधिकारों का उल्लेख किया गया है।

महिला मताधिकार

महिला अधिकारों का सरोजिनी नायडू से बड़ा सरोकारी उनके समय में कोई अन्य नहीं था। उन्होंने राजनीतिक और विधायी निकायों में महिलाओं के खिलाफ अन्याय देखा और इसी वजह से 1917 में महिलाओं के सामाजिक व राजनीतिक अधिकारों के लिए महिला भारतीय संघ की स्थापना में मदद की, और महिलाओं के लिए मताधिकार प्राप्त किया गया। यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी उपलब्धि थी। सरोजिनी नायडू ने वूमन इण्डियन एसोसिएशन को गठित कराने में अहम भूमिका का निर्वहन किया, उन्हें 'होम रूल लीग' की अध्यक्षता करने का भी मौका मिला। स्वयं महात्मा गांधी भी उनके काम से बहुत प्रभावित हुए।

महिला सशक्तीकरण

सरोजिनी नायडू ने महिलाओं की आजादी के लिए अपनी आवाज बुलन्द करते हुए कहा, ''जो हाथ पालना झुला सकते हैं, वे हाथ देश भी चला सकते हैं, बस इन हाथों को सशक्त बनाने के लिए मूलभूत सुविधाओं की जरूरत है, जिनसे महिलों को वंचित रखा जा रहा है।'' सक्रिय राजनीति में भी वे हमेशा भारतीय महिलाओं के प्रति होने वाले पक्षपात और उनके अधिकारों की लड़ाई के लिए अखिल भारतीय महिला परिषद एवं भारतीय नारी मुक्ति आन्दोलन से भी जुड़ी रहीं। उनके योगदान के सम्मान में भारतीय महिला परिषद के नई दिल्ली स्थित कार्यालय को सरोजिनी हाउस के नाम से जाना जाता है।

महिला शिक्षा

भारत में महिलाओं की शिक्षा और उनके कई मूलभूत अधिकारों को बढ़ावा देने में सरोजिनी नायडू की भूमिका सबसे अहम है। उनके नारी शिक्षा के मजबूत पक्षधर होने के सबूत इतिहास में दर्ज हैं। आजादी के संघर्ष के दौरान वो जब भी किसी सभा को सम्बोधित करती उन सभाओं में नारी शिक्षा की बात करते हुए कहतीं कि ''जब एक महिला शिक्षित होगी तभी वो समाज और परिवार को शिक्षित कर पायेगी।''

अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी सुश्री अवनी लेखरा, जिन्हें हाल ही में पद्मश्री पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की गई है, आई एम शक्ति उड़ान योजना के प्रतीक को ''उड़ान'' देती हुई।

आई एम शक्ति उड़ान योजना

चुप्पी तोड़ भरो उड़ान

कविता जोशी
सहायक निदेशक

महिलाओं का सशक्तीकरण राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की सदैव से मंशा रही है। अगर परिवार की महिला स्वस्थ होगी तो पूरा प्रदेश स्वस्थ होगा। इसी विचार से नारी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर उनके सपनों को उड़ान देने हेतु राज्य सरकार द्वारा पिछले दिनों ''आई एम शक्ति उड़ान योजना'' को लागू किया गया है।

प्रदेश की इस आधी आबादी के उन्नयन एवं खुशहाली के लिए, उनके सशक्तीकरण के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग के माध्यम से निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। महिलाओं के आचार-विचार, व्यवहार में बदलाव लाकर उन्हें खुशहाल, स्वस्थ व आत्मनिर्भर बनाने के लिए महिला सशक्तीकरण से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम एवं योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। अब समय बदल गया है और आज की नारी को चुप्पी तोड़.उड़ान भरने की दरकरार है। उसे अपनी शर्म को छोड़कर आगे आना होगा। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का संदेश है कि ''माहवारी कोई बीमारी नहीं है, न ही ये कोई शर्म और संकोच का विषय है। समाज को अब सोच बदलनी पड़ेगी, हमें महिलाओं के स्वास्थ्य की रक्षा करनी होगी। महिलाओं की गरिमा, सम्मान ओर निजता की दिशा में एक जरूरी कदम है ''उड़ान''

क्यों जरूरी है सेनेटरी नैपकिन

- देश में लगभग 2 करोड़ 30 लाख लड़कियों को माहवारी के कारण स्कूल छोड़ना पड़ता है।
- एक अध्ययन के अनुसार देश में लगभग 62 प्रतिशत महिलाएं पीरियड्स के समय सेनेटरी नैपकिन की जगह कपड़े का प्रयोग करती हैं। पीरियड्स के दौरान इस्तेमाल की गई अनहाइजीनिक (अस्वच्छ) वस्तुओं से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी हो सकती है।
- जानकारी के अभाव में लड़कियों को माहवारी संभालने में मुश्किलें आती हैं और उनके लिए शारीरिक व मानसिक व्याधियां खड़ी होती हैं, पढ़ाई ठीक से नहीं होती, उनका आत्मविश्वास डगमगाता है और वे खुद की नजरों में कमतर महसूस करने लगती हैं।
- सब महिलाओं को माहवारी के समय पैड का उपयोग करना जरूरी है, माहवारी प्रकृति का उपहार है, यह कोई शर्म की बात नहीं है।
- सेनेटरी नैपकिन या पैड की जगह दूषित कपड़े अथवा अन्य चीजों के इस्तेमाल से बांझपन (इनफर्टिलिटी) तक हो सकती है।

योजना का मूल उद्देश्य

- योजना का लक्ष्य बालिकाओं और महिलाओं को सेनेटरी नैपकिन प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करना एवं उनकी गरिमा, सुरक्षा एवं माहवारी से संबंधित जागरूकता लाने के लिए विशेष अभियान चलाना एवं अनुकूल वातावरण तैयार करना है।
- विशेषत: ग्रामीण क्षेत्रों में जहां घूंघट प्रथा है, उन महिलाओं को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि महिलायें अपनी माहवारी सम्बंधित समस्याओं पर नि:संकोच बात कर सही समाधान प्राप्त कर सकें और प्रदान किए जा रहे नि:शुल्क सेनेटरी नैपकिन का उपयोग करें।
- Menstrual Hygiene & Management (MHM) के संबंध में आमजन को जागरूक करना एवं संवेदनशील बनाना।
- राजस्थान में बालिकाओं और महिलाओं के लिए सुरक्षित और नि:शुल्क सेनेटरी नैपकिन उपलब्ध कराना।
- स्वयं सहायता समूहों को सेनेटरी नैपकिन बनाने के लिए प्रशिक्षण, ऋण तथा क्रय एवं वितरण की योजना बनाना।
- महिला स्वयं सहायता समूह, सामाजिक संस्थाओं एवं गैर सरकारी संगठनों को माहवारी स्वच्छता प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रोत्साहन देना।

लक्ष्य हासिल करने के लिए उठाए जा रहे प्रभावी कदम

- योजना में प्रथम चरण में प्रदेश के उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत लगभग 26 लाख छात्राओं को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में 282 ब्लॉक के 1410 चिह्नित आंगनबाड़ी केंद्रों पर 18-45 आयु वर्ग की लगभग 3 लाख किशोरियों एवं महिलाओं को प्रतिमाह 12 सेनेटरी नैपकिन का नि:शुल्क वितरण किया जाना प्रारम्भ कर दिया गया है। प्रथम चरण में लगभग 29 लाख बालिकाएं एवं महिलाएं लाभान्वित होंगी।

- योजना के द्वितीय चरण में प्रदेश की सभी ग्राम पंचायत में 18-45 आयु वर्ग की किशोरियों एवं महिलाओं को आंगनबाड़ी केन्द्रों एवं अन्य स्थानों पर सेनेटरी नैपकिन नि:शुल्क उपलब्ध करवाया जाएगा।

आरएमएससीएल करेगी आपूर्ति

योजना में सेनेटरी नैपकिन राजस्थान मेडिकल सर्विस कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा क्रय करके चिन्हित आंगनबाड़ी केन्द्रों एवं विद्यालयों पर उपलब्ध करवाये जायेंगे।

योजना किसके लिए

राजस्थान की सभी किशोरी बालिकाएं/छात्राएं तथा महिलाएं इस योजना का लाभ-ले सकती हैं। योजना का लाभ सिर्फ राजस्थान में मूल रूप से रहने वाली महिलाओं-छात्राओं को ही मिलेगा।

जरूरी दस्तावेज

● आधार कार्ड ● पहचान पत्र ● मोबाइल नबंर

कैसे प्राप्त करें लाभ

प्रदेश की कोई भी किशोरी, छात्रा, महिला नि:शुल्क सेनेटरी नैपकिन राज्य के किसी भी स्कूल, कॉलेज एवं आंगनबाड़ी केन्द्र से प्राप्त कर सकती है। यह योजना विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं के लिए है, जो आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण बाजार से सैनेटरी नैपकिन खरीदने में असमर्थ हैं।

हेल्पलाइन नं.

नि:शुल्क सैनेटरी नैपकिन योजना से संबंधित शिकायत एवं योजना से संबंधित जानकारी के लिए टोल फ्री न.181 जारी किया गया है। इस नम्बर पर कॉल कर योजना के संबंध में जानकारी ली जा सकती है एवं शिकायत भी दर्ज कराई जा सकती है।

उड़ान योजना से प्रदेश की महिलाओं को मिली राहत

प्रदेश की सभी महिलाओं को 'मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा योजना' के माध्यम से सेनटरी नैपकिन उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां घूंघट प्रथा भी है तथा महिलायें अपनी ऐसी समस्यायें किसी से संकोचवश कह नहीं पाती हैं, इस कारण अनेक रोगों से ग्रसित हो जाती हैं और उन्हें समय पर इलाज भी नहीं मिलता है। महिला एसएचजी, सामाजिक संस्थाओं एवं एनजीओ के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी विशेष जागरूकता अभियान सेनेटरी नैपकिन का वितरण करवाया गया है।

'आई एम शक्ति उड़ान योजना के प्रथम चरण में प्रदेश के उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक राजकीय विद्यालयों में

अध्ययनरत कक्षा 6 से 12वीं तक की लगभग 26 लाख छात्राओं को लाभान्वित किया जा रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में सेनटरी नैपकिन वितरण के लिए 200 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। इसके तहत योजना के प्रथम चरण में प्रदेश के उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 6 से 12वीं तक की लगभग 26 लाख छात्राओं को लाभान्वित किया जा रहा है। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के 282 ब्लॉक में प्रत्येक ब्लॉक पर चिन्हित 5 आंगनबाड़ी केन्द्रों पर 18 वर्ष तक की आयु की किशोरियों व 45 वर्ष तक की महिलाओं, लगभग कुल 3 लाख लाभार्थी को लाभान्वित किया जा रहा है। प्रत्येक लाभार्थी को प्रतिमाह 12 सेनेटरी नैपकिन का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है और योजना के द्वितीय चरण में प्रदेश की शेष ग्राम पंचायतों में 18-45 आयु वर्ग की किशोरियों एवं महिलाओं को सेनेटरी नैपकिन का नि:शुल्क वितरण किया जाएगा।

योजना के माध्यम से नि:शुल्क सेनटरी नैपकिन मिलने से महिलाओं, छात्राओं तथा किशोरियों को अच्छे स्वास्थ्य और हाइजीन की सुविधा मिलेगी। राज्य स्तर पर इस योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अलग-अलग एम्बेसडर बनाए जाएंगे जिसमें राज्य पर दो एवं जिला स्तर पर एक एम्बेसडर होगा। अच्छा कार्य करने पर इन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। ●

जागृति : बैक टू वर्क योजना

आओ... फिर चलें

सपना शाह
जनसम्पर्क अधिकारी

देश के पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, 'यदि आप किसी देश के बारे में मेरी राय जानना चाहते हैं तो पहले मुझे उस देश की महिलाओं की स्थिति के बारे में बताएं'।

वर्तमान परिस्थितियों में देश ही नहीं पूरे विश्व में कोरोना महामारी की वजह से उपजे हालातों में बहुत सी कामकाजी व व्यावसायिक क्षेत्र में प्रशिक्षित महिलाओं ने अपना काम छोड़ दिया है। इसके अतिरिक्त विवाह के पश्चात् संतानोत्पत्ति, घर-परिवार संभालने के उद्देश्य से महिलाएं अपने व्यावसायिक कॅरियर का परित्याग कर देती हैं। ऐसी ही महिलाओं को पुन: रोजगार से जोड़ने की अनूठी पहल की गई है।

राज्य सरकार के सतत् प्रयास से महिलाओं को जॉब दिलवाने और वर्क फ्रॉम होम के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा 'जागृति : बैक टू वर्क योजना' प्रारम्भ की गई है। राज्य सरकार का प्रयास है कि जो महिलाएं कार्य स्थल पर जाने में सक्षम नहीं हैं उन्हें भी निजी क्षेत्र के सहयोग से घर पर ही काम उपलब्ध करवाया जाये जिससे महिलाएं आर्थिक रूप से सक्षम हो सकें।

क्या है जागृति : बैक टू वर्क योजना ?

महिला अधिकारिता निदेशालय द्वारा ऐसी महिलाएं, जो प्रशिक्षित हैं लेकिन किन्हीं कारणों से उन्होंने अपना काम छोड़ दिया है या जिनकी जॉब चली गई है, निजी क्षेत्र के सहयोग से आगामी 3 वर्षों में ऐसी 15,000 महिलाओं को पुन: जॉब या वर्क फ्रॉम होम के अवसर उपलब्ध करवाए जाएंगे, जिससे महिलाओं को सशक्त व आत्मनिर्भर बनाया जा सके। योजना के अंतर्गत राजस्थान में निवासी महिलाएं जिन्हें कार्य करने का न्यूनतम 1 वर्ष का अनुभव हो और किसी कारणवश जॉब छोड़ दिया हो, वे http://www.jagritibacktowork.org पर इसके लिए आवेदन कर सकती हैं।

जागृति फाउंडेशन आवेदनों को चिन्हित कर निजी सेक्टर की सीएसआर संस्था को भेजेगा। वहां योग्यता के अनुसार महिलाओं का चयन किया जाएगा। सीएसआर संस्था प्रशिक्षण, सेमिनार, वेबिनार, नेटवर्किंग कार्यक्रम के जरिए चयनित महिलाओं को प्रशिक्षण देकर जॉब से जोड़ेगी। महिलाओं को रोजगार से जोड़ने में विधवा, परित्यक्ता, तलाकशुदा व हिंसा से पीड़ित महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। अब तक लगभग 300 महिलाओं ने योजना में अपना पंजीकरण करवा लिया है।

योजना के उद्देश्य

- कामकाजी एवं व्यावसायिक क्षेत्र में प्रशिक्षित महिलाओं के विभिन्न कारणवश जॉब छोड़ देने के कारण उत्पन्न कॅरियर गैप को दूर करना।
- कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से ऐसी महिलाओं का क्षमता-वर्धन करना।
- जॉब प्रदाता एवं जॉब हेतु इच्छुक महिलाओं के लिए सेतु के रूप में कार्य करना व समन्वय करना।
- ऐसी महिलाएं जो कि कार्य स्थल पर जाने या जाकर कार्य करने हेतु इच्छुक अथवा सक्षम नहीं हैं, उनको निजी क्षेत्र के सहयोग से वर्क फ्रॉम होम की सुविधा उपलब्ध करवाने का प्रयास करना।
- प्रशिक्षण, रोजगार सृजन एवं नवाचारों द्वारा, जॉब से किसी कारणवश पृथक हो चुकी महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण कर उन्हें आर्थिक स्वावलम्बन की ओर पुन: अग्रसर करने का प्रयास करना।
- महिला अधिकारिता विभाग व सीएसआर संस्था के माध्यम से रोजगार से जुड़ने की इच्छुक महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु सिंगल विंडो सिस्टम की सुविधा विकसित करना।

योजना के लाभ

'जागृति : बैक टू वर्क योजना' में महिलाओं को रोजगार दिलाने के साथ पंजीकृत महिलाओं की आवश्यकता और योग्यता अनुरूप आई एम शक्ति कौशल प्रशिक्षण एवं संवर्धन योजना के अंतर्गत कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने के अवसर दिये जा रहे हैं। निजी क्षेत्र में रोजगार से जोड़ने का कार्य सीएसआर संस्था द्वारा किया जा रहा है। इतना ही नहीं,

आवश्यकता होने पर सीएसआर संस्था द्वारा ऑनलाइन पोर्टल पर रजिस्टर्ड लक्षित श्रेणी की महिलाओं को री-स्किलिंग व अपस्किलिंग के लिए प्रशिक्षण सुविधा भी प्रदान की जा रही है, जिसका अपडेशन पोर्टल पर किया जाएगा।

सफल क्रियान्वयन के लिए प्रतिबद्ध

महिला अधिकारिता निदेशालय द्वारा महिलाओं को रोजगार से जोड़ने और योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी कर विभिन्न कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम, रोजगार मूलक गतिविधियां, लाभार्थियों का मोबिलाइजेशन जैसी गतिविधियों का सम्पादन और मॉनिटरिंग की जाएगी। जिला स्तर पर लाभार्थी महिलाओं को चिह्नित कर रोजगार उपलब्ध करवाने का कार्य प्रतिबद्धता से किया जा रहा है।

सीएसआर संस्थाएं बनीं सहयोगी

महिलाओं को सशक्त, आत्मनिर्भर व आर्थिक दृष्टि से सक्षम बनाने के लिए विभाग द्वारा सीएसआर संस्थाओं को सहयोगी बनाया गया है। इन संस्थाओं द्वारा लाभार्थी महिलाओं का चिह्नीकरण कर आवश्यकतानुसार री-स्किलिंग व अप-स्किलिंग गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। प्रशिक्षण सामग्री, सोशल मीडिया कवरेज, पठन सामग्री और रिसोर्स पर्सन की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई है। साथ ही महिलाओं को उनकी आवश्यकता व अभिरुचि के अनुरूप निजी क्षेत्र में रोजगार से जोड़ा जा रहा है।

निश्चित ही अपने पसंदीदा व कौशल प्राप्त क्षेत्र में रोजगार मिलने से महिलाओं के उत्साह और उत्पादकता में वृद्धि होगी। महिलाओं के रोजगार में अभिवृद्धि के लिए जॉब प्रदाताओं, जॉब की इच्छुक महिलाओं, राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम (RSLDC), राजस्थान नॉलेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (RKCL), विभिन्न महाविद्यालयों के साथ समन्वय स्थापित कर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तैयार किए जाएंगे।

इस प्रकार राज्य सरकार ने 'जागृति: बैक टू वर्क योजना' के माध्यम से महिलाओं के उत्थान, सशक्तीकरण और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'सशक्त महिला लाए जीवन में उजास' के मंत्र को आत्मसात् कर महिलाओं के जीवन में उजास भरने का प्रयास किया है।

ऐसा करने वाला प्रदेश में पहला बैंक, इन सभी शाखाओं में एनपीए शून्य

झुंझुनूं जिले में संचालित हैं 3 महिला शाखाएं

हिमांशु सिंह
जनसंपर्क अधिकारी, झुंझुनूं

''पेलां कई बार बैंक आण म्हं शंको महसूस होतो, पर अब तो सारी लुगाईयां बिना कोई संकोच क बैंक आव ह। घर का भी बैंक आन खातिर कदै रोका-टोकी कोनी करे। बैंक म्ह अब सारी आस-पास क घरां की ही छोरियां हैं, तो अठै घर आरी सी फीलिंग आवे, लागे ही कोनी जियां कोई बैंक आया हां, घर को सो माहौल लागे।''

राज्य सरकार की हिस्सेदारी वाले बड़ौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक यानी बीआरकेजीबी की बख्तावरपुरा शाखा के बारे में यह कहना है झुंझुनूं की बख्तावरपुरा की रहने वाली बुजुर्ग 68 वर्षीय गीता देवी का। गौरतलब है कि पिछले वर्ष बड़ौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ने नवाचार करते हुए 18 मार्च से जिले की 3 शाखाओं बख्तावरपुरा, पातुसरी और कारी में समस्त कर्मचारियों के पदों पर केवल महिलाओं को लगाकर यहां महिला शाखा की स्थापना की। ऐसा करने वाला राजस्थान में यह पहला बैंक है। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए इस बैंक में महिला एवं पुरुष दोनों को बराबर सुविधा है, हालांकि बैंक स्टाफ केवल महिलाओं का ही है। बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक योगेश शर्मा महिला शाखा की स्थापना का उद्देश्य बताते हुए कहते हैं कि, ''ग्रामीण महिलाएं वित्तीय प्रबंधन में काफी होशियार होती हैं, इसी को बढ़ावा देने के लिए जिले में महिला शाखाओं की शुरुआत की गई है, ताकि ग्रामीण महिलाएं बैंक आने में संकोच नहीं करें और बैंकिंग से जुड़ें।'' खास बात यह है कि इन तीनों बैंकों ने अच्छा व्यवसाय कर आस-पास की कई शाखाओं को मात दे दी है। बख्तावरपुरा शाखा ने जहां 5,949 ग्राहकों के साथ 56.7 करोड़ रुपए का व्यवसाय किया है, वहीं पातुसरी महिला शाखा ने 4,716 ग्राहकों के साथ 26.25 करोड़ रुपए और कारी शाखा ने 4,220 ग्राहकों के साथ 33.07 करोड़ रुपए का व्यवसाय किया है। इन सभी शाखाओं का एनपीए शून्य है। क्योंकि महिला कर्मचारी और अधिकारी गांव की महिलाओं को समय पर ऋण चुकता करने के निर्देश देती रहती हैं।

बीआरकेजीबी की पातुसरी शाखा की प्रबंधक नीतू बताती हैं कि बैंक शाखा के उद्घाटन के वक्त भी यहां पर भारी संख्या में ग्रामीणों ने मौजूद रहते हुए इस पहल का स्वागत किया। वहीं बख्तावरपुरा शाखा की प्रबंधक पल्लवी के मुताबिक शाखा के ग्राहक उन्हें बेटियों की तरह ही मानते हैं। उन्हें किसी भी तरह की परेशानी नहीं होने देते। अपने अनुभव साझा करते हुए कारी शाखा की प्रबंधक सुभिता बुगालिया बताती हैं कि यहां पुरुष और महिला दोनों ग्राहक आते हैं। पुरुष ग्राहकों द्वारा भी बहुत सहयोग और सराहना मिलती है। कारी गांव के पूर्व सरपंच और बीआरकेजीबी के सम्मानित ग्राहक धर्मवीर माठ बताते हैं कि सभी ग्रामीण बीआरकेजीबी की इस पहले से बहुत खुश हैं। महिला स्टाफ के आत्मीय और सहयोगपूर्ण व्यवहार से हजारों की संख्या में ग्राहक इस शाखा से जुड़े हैं। बीआरकेजीबी के क्षेत्रीय प्रबंधक योगेश शर्मा ने बताया कि भारतीय महिला दिवस पर महिलाओं में भारतीय संस्कृति और संस्कारों को मजबूत बनाने और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से बचाने के उद्देश्य से बैंक द्वारा अपने सास-ससुर और वरिष्ठ नागरिकों की सेवा करने वाली महिला ग्राहकों को सम्मानित किया गया।

स्थापना के समय राजस्थान सरकार की इस बैंक में हिस्सेदारी15 फीसदी थी। यह बैंक आज अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बारां, बीकानेर, बूंदी, भरतपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, चूरू, झुंझुनूं, कोटा, धौलपुर, झालावाड़, दौसा, करौली, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर, सीकर और टोंक जिले में 12 क्षेत्रीय कार्यालयों और 861 शाखाओं के माध्यम से कार्य कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बैंकिंग के जरिए मजबूती प्रदान करने में प्रयासरत है।

नेपाल से दुबई तक पहचान बनाता

जालोर का–सिंदूरी अनार

करीब साढ़े तीन हजार हैक्टेयर में किया जा रहा है उत्पादन
जीवाणा की निजी मण्डियां देशभर में बना रही हैं पहचान

अविनाश चौहान
सूजस कार्यालय, जालोर

विगत कुछ वर्षो में जालोर जिले में सिंदूरी अनार की पैदावार कई गुणा बढ़ी है। जालोर के कृषकों का अनार की पैदावार की तरफ रुझान बढ़ने लगा है। वर्तमान में जिले में करीब साढे तीन हजार हैक्टेयर भूमि से सिंदूरी अनार का उत्पादन लिया जा रहा है। उत्पादन और पैदावार बढ़ने से अन्य कृषकों ने भी प्रेरणा लेते हुए अपनी कृषि भूमि पर अनार लगाना प्रारम्भ किया है। करीब ढाई से तीन हजार हैक्टेयर भूमि पर नये पौधे और लगाये गये हैं। जिससे आने वाले समय में इसकी पैदावार और अधिक बढ़ेगी।

वर्तमान में जिले के जीवाणा में अनार की निजी क्षेत्र की चार मंडिया संचालित होती हैं। जहां पर गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत सहित कई राज्यों एवं विदेश में नेपाल व दुबई के लिये भी व्यापारी खरीद करने पहुंच रहे हैं। यहां का अनार महाराष्ट्र के नासिक किस्म का अनार है जिसे सिंदूरी अनार कहा जाता है । स्थानीय भाषा में इसे भगवा सिंदूरी अनार भी कहते हैं। जालोर में उत्पादित अनार उच्च गुणवत्ता का अनार होने से इसकी मांग दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इसकी सर्वाधिक मांग गुजरात और महाराष्ट्र में है। जिले में करीब 50 से 60 हजार मैट्रिक टन अनार का प्रतिवर्ष उत्पादन हो रहा है। जिसकी उच्च गुणवत्ता के कारण कृषकों को अच्छी कीमत भी प्राप्त हो रही है। करीब 250 करोड़ रुपये का अनार उत्पादन वर्तमान में जालोर जिले में हो रहा है।

जिले के कृषक वर्तमान में केवल सर्दी में ही अनार की उपज ले पा रहे हैं। कृषि विभाग के अनुसार अनार की उपज साल में तीन बार ली जा सकती है, परन्तु जालोर जिले में पर्याप्त पानी के अभाव में ये प्रभावित हो रही है। कृषकों के अनुसार अनार के लिए जिले में सरकारी नियंत्रण में मंडी के अभाव में कृषकों को समय पर व्यापारी से भुगतान नहीं हो पाता तथा भाव नियंत्रित नहीं रहता है। अनार का बड़ा उत्पादक जिला होते हुए भी प्रसंस्करण, पॉलिशिंग व ज्यूस इकाई जिले में नहीं होने के कारण इसके लिए अनार को सीधा ही बाहर भेजा जा रहा है। यदि जालोर जिले मे प्रसंस्करण, पॉलिशिंग व ज्यूस इकाई स्थापित की जाती है तो स्थानीय लोगों को रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त होंगे। कृषकों के अनार की तरफ बढते रुझान को देखते हुये स्थानीय कृषकों ने जिले में इसकी पैदावार को अपनाया है। कृषि विभाग द्वारा जिले में समय-समय पर कृषकों को अनार पैदावार के सम्बंध मे प्रशिक्षण भी दिया जाता है। आने वाले समय में जालोर जिले में अनार उत्पादन बढ़ने की प्रबल सम्भावनाएं हैं।

卐 'लगावण नै कूंकूं और बजावण नैं पूंपूं' 卐

विशिष्ट पहचान रखता है बीकानेर का ओलम्पिक सावा

हरि शंकर आचार्य
सहायक निदेशक, बीकानेर

बीकानेर के पुष्करणा ब्राह्मण समाज का सामूहिक सावा देशभर में विशिष्ट पहचान रखता है। इसे ओलम्पिक सावे के नाम से भी जाना जाता है। सावा का अर्थ है-सह विवाह यानी सामूहिक विवाह। बीकानेर शहर के पुष्करणा ब्राह्मण समाज की यह परम्परा चार सौ वर्षो से अधिक पुरानी है। बीकानेर रियासत के तात्कालिक महाराजा सूरसिंह के शासनकाल में वर्ष 1616 में सामूहिक विवाह की यह परम्परा चालू हुई थी। तब से लेकर वर्ष 1961 तक प्रत्येक सात वर्ष बाद यह सामूहिक सावा आता था। बाद में हर चार वर्ष बाद इसका आयोजन होने लगा। विश्व की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिता 'ओलम्पिक' की तर्ज पर चार वर्ष से होने वाले आयोजन के कारण इसे 'ओलम्पिक सावा' नाम दे दिया गया। हालांकि वर्ष 2005 से इसका आयोजन हर दो वर्ष बाद होने लगा, लेकिन आज भी यह ओलम्पिक सावे के नाम से ही प्रसिद्ध है। अंतिम ओलम्पिक सावा 21 फरवरी, 2019 को हुआ था। इस नाते दो वर्ष बाद 2021 में यह पुन: प्रस्तावित था, लेकिन कोरोना संक्रमण के कारण इसे स्थगित कर दिया गया। इस बार यह ओलम्पिक सावा 18 फरवरी को हुआ, जिसके लिए लगभग दो सौ विवाह पंजीकरण हुए।

ओलम्पिक सावे की पुरातन परम्परा के अनुसार सावे से पूर्व दशहरे के दिन समाज के पंडितों द्वारा शास्त्रार्थ के माध्यम से सावे की तिथि तय की जाती है तथा धनतेरस के दिन इसकी घोषणा होती है। तात्कालिक राजपरिवार द्वारा प्रारम्भ की गई इस परम्परा के मद्देनजर आज भी पूर्व राजपरिवार से इसकी सांकेतिक अनुमति भी ली जाती है। ओलम्पिक सावा, मितव्ययता और सामाजिक समानता का प्रतीक है। समाज के अमीर और गरीब, सभी तबके के लोग एक ही दिन, एक ही लगन और एक ही गणवेश में अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह करवाते हैं। आज के प्रतिस्पर्धी दौर में भी यह अवसर सादगीपूर्ण तरीके से होता है तथा दहेज प्रथा जैसे अभिशाप से पूर्णतया मुक्त रहता है। ओलम्पिक सावे के अवसर पर शहरी परकोटे में सैंकड़ों शादियां एक ही दिन में होती हैं।

ओलम्पिक सावे के दौरान आज भी 'लगावण नै कूंकूं और बजावण नैं पूंपूं' की परम्परा का निर्वहन होता है। मतलब इस सावे की सादगी इतनी है कि सिर्फ कुमकुम से समधी का मुंह रंगकर और पूंपूं

यानी बाजे की खुशियां मनाकर इस सावे के दौरान शादियां हो जाती हैं। इस दौरान दूल्हा विष्णु वेश में (खिड़किया पगड़ी, पेवड़ी, किलेंगी, मावड़, हाथ में लोहे का गेडिया और लाल लौंकार का छत्र) दुल्हन के घर विवाह के लिए पैदल ही पहुंचता है। एक साथ अधिक शादियां होने के कारण बारात में बहुत कम लोग होते हैं, इस कारण यह भी कहा जाता है कि ओलम्पिक सावे के दौरान बाराती एक धामा मिठाई में ही खाना खा लेते हैं। इस सावे के दौरान कोलकाता, रायपुर, पूना, बंगलौर सहित राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों में रहने वाले लोग बड़ी संख्या में बीकानेर पहुंचते हैं।

सरकार ने परकोटे को घोषित किया छत

ओलम्पिक सावे की प्रासंगिकता और महत्त्व को इस बात से समझा जा सकता है कि राज्य सरकार के महिला अधिकारिता विभाग द्वारा पूरे शहरी परकोटे को एक छत मानते हुए ओलम्पिक सावे के दौरान दाम्पत्य सूत्र में बंधने वाले नवयुगल को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह एवं अनुदान योजना के तहत लाभान्वित किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा पहली बार वर्ष 2011 में इस संबंध में निर्देश जारी किए गए थे। इसके बाद वर्ष 2013, 2015, 2017 और 2019 के ओलम्पिक सावों में दाम्पत्य सूत्र में बंधने वालों को भी इसका पात्र माना गया। इस बार भी होने वाले सावे के लिए आवेदन लिए गए हैं। इसी क्रम में राज्य सरकार द्वारा 9 फरवरी 2022 को आदेश जारी करते हुए शहरी परकोटे को स्थाई रूप से एक छत घोषित कर दिया है।

दुल्हन की तरह सजता है शहर

बीकानेर शहर के लिए ओलम्पिक सावा कितना महत्त्वपूर्ण है, इसका अंदाज इस बात से भी लगाया जा सकता है कि इस दौरान पूरा शहर दुल्हन की तरह सज जाता है। नगर निगम द्वारा पूरे शहर में साफ-सफाई और रोशनी की विशेष व्यवस्था की जाती है। वहीं शहर की सभी सड़कों को भी दुरुस्त किया जाता है। सुरक्षा से लेकर पेयजल और विद्युत की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चत की जाती है। इस बार भी

ओलम्पिक सावे से पूर्व शिक्षा तथा कला एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने जिला कलक्टर श्री भगवती प्रसाद और अन्य अधिकारियों के साथ पूरे शहर का दौरा करते हुए सभी व्यवस्थाएं माकूल रखने के निर्देश दिए।

सावे में दिखता है सेवा का जज्बा

ओलम्पिक सावे के अवसर पर पूरे शहर में मेले सा माहौल बन जाता है। जहां आयोजन को सफल बनाने में राज्य सरकार और जिला प्रशासन की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है, वहीं अनेक संस्थाएं और भामाशाह भी इसमें बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाते हैं। शहर में विभिन्न मोहल्लों में लगभग एक माह पूर्व सेवा शिविर चालू हो जाते हैं। इनमें सामूहिक विवाह अनुदान के लिए आवेदन करवाना, कन्या पक्ष को रियायती दर पर राशन सामग्री उपलब्ध करवाना, हवन एवं पूजन सामग्री नि:शुल्क उपलब्ध करवाना, साफा-पगड़ी पहनाने की नि:शुल्क सेवा सहित जरूरतमंद पक्ष को आवश्यक आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाना जैसे सहयोग शामिल होते हैं। अच्छी बात यह होती है कि सहयोग करने वालों में पुष्करणा ब्राह्मण समाज के लोगों के साथ बीकानेर के सभी वर्गों के लोग सम्मिलित होते हैं।

वहीं अनेक संस्थाओं द्वारा परम्परा का निवर्हन करते हुए विष्णु वेश में आने वाले दूल्हे तथा संयमित तरीके से विवाह करने वाले परिजनों को भी सम्मानित किया जाता है। पिछले एक दशक की बात करें तो रमक-झमक संस्था, परशुराम सेवा समिति, पुष्टिकर सामूहिक सावा समिति, राष्ट्रीय पुष्करणा यूथ सामाजिक संस्थान तथा द पुष्करणाज फाउण्डेशन जैसी संस्थाएं प्रमुख हैं। कुल मिलाकर पुष्करणा ब्राह्मण समाज का ओलम्पिक सावा ऐतिहासिक परम्पराओं को सहेजने और इन्हें एक से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम होता है। बदलते दौर में भी बीकानेर के ओलम्पिक सावे की परम्पराएं काफी हद तक संरक्षित और सुरक्षित हैं।

विशेष उपलब्धि

प्रदेश की सभी पेयजल जांच प्रयोगशालाएं 'एनएबीएल एक्रीडेटेड'

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग (पीएचईडी) ने प्रदेश में पेयजल गुणवत्ता जांच के लिए समस्त जिलों में संचालित पेयजल गुणवत्ता जांच प्रयोगशालाओं के लिए 'एनएबीएल एक्रीडिशन' का दर्जा प्राप्त कर विशिष्ट उपलब्धि हासिल की है। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में जनता की आवश्यकताओं के मद्देनजर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में नए प्रोजेक्ट आरम्भ किए गए हैं, वहीं सभी जिलों में संचालित पेयजल परियोजनाओं के कार्यो को लगातार गति दी जा रही है। समुचित पेयजल प्रबंधन के लिए इन कार्यो के साथ ही सभी घरों तक पीने योग्य स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए भी जलदाय विभाग में ठोस रणनीति के साथ कार्य किया जा रहा है। इस लिहाज से सभी जिलों में संचालित पेयजल गुणवत्ता जांच प्रयोगशालाओं को 'एनएबीएल एक्रीडिशन' मिलना प्रदेश के इतिहास में मील का एक नया पत्थर है।

जनता को गुणवत्ता युक्त शुद्ध पेयजल आपूर्ति पर फोकस

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की मंशा और मार्गदर्शन के अनुरूप राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों मे आमजन को स्वच्छ पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए पीएचईडी द्वारा पीने के पानी की गुणवत्ता जांच से सम्बंधित सुविधाओं के विस्तार पर लगातार फोकस किया जा रहा है। जलदाय मंत्री डॉ. महेश ने विभागीय अधिकारियों को पूरे प्रदेश

मनमोहन हर्ष
उप निदेशक

में संचालित पेयजल योजनाओं के माध्यम से जनता को नियत समय पर निर्धारित मात्रा में गुणवत्ता युक्त शुद्ध पेयजल की आपूर्ति के लिए इसी प्रकार सुधारात्मक प्रयास निरतंर जारी रखने के निर्देश गए हैं।

सभी 33 प्रयोगशालाओं का प्रमाणीकरण

पीएचईडी में राजधानी जयपुर में मुख्यालय पर राज्य स्तरीय पेयजल गुणवत्ता जांच प्रयोगशाला स्थापित है। इसके अलावा अन्य 32 जिलों में जिला स्तरीय प्रयोगशालाएं चलाई जा रही हैं। अब इन सभी 33 प्रयोगशालाओं को राष्ट्रीय स्तर की स्वतंत्र संस्था 'नेशनल एक्रीडिशन बोर्ड फोर टेस्टिंग एंड केलिब्रेशन लेबोरेट्रीज' (एनएबीएल) से प्रमाणीकरण मिल गया है।

ऐसे होता है 'एक्रीडिशन'

देश में एनएबीएल (नेशनल एक्रीडिशन बोर्ड फोर टेस्टिंग एंड केलिब्रेशन लेबोरेट्रीज) जांच प्रयोगशालओं के प्रमाणीकरण के लिए राष्ट्रीय स्तर की एक स्वतंत्र संस्था है। इसके द्वारा आईएसओ/आईईसी: 17025 के तहत परीक्षण प्रयोगशालाओं को एनएबीएल प्रमाणीकरण दिया जाता है। यह संस्था भारत सरकार में 'क्वालिटी

काउंसिल ऑफ इंडिया के तहत स्थापित है, जो लेबोरेट्रीज के 'एनएबीएल एक्रीडिशन' के लिए थर्ड पार्टी एजेंसी के रूप में प्रयोगशालाओं की लीगल आईडेंटिटी, इसमें कार्यरत मानव श्रम की संख्या के साथ ही उनकी योग्यता और अनुभव, उपकरणों के समयबद्ध केलिब्रेशन (जांच में दक्षता की परख) आदि बिन्दुओं के आधार पर 'परफोरमेंस ऑडिट' के बाद प्रमाणीकरण करती है। प्रदेश में पेयजल प्रयोगशालाओं के 'एनएबीएल एक्रीडिशन' के लिए पीएचईडी में संबंधित कार्यालय के स्तर से एनएबीएल में प्रयोगशालाओं के एक्रीडिशन के लिए आवेदन किया जाता है। इसके बाद निर्धारित नॉर्म्स के अनुरूप ऑडिट होती है।

प्रदेश में सभी जिलों में चल रही गुणवत्ता जांच प्रयोगशालाओं ने इस निर्धारित प्रक्रिया से गुजरते हुए एनएबीएल प्रमाणीकरण प्राप्त किया है।

आमजन को 600 रुपये में जांच की सुविधा

प्रदेश की सभी 'एनएबीएल एक्रीडेटेड जिला स्तरीय गुणवत्ता जांच प्रयोगशालाओं में लोगों को फ्लोराइड, नाईट्रेट, थर्मो टॉलरेंट कॉलीफॉर्म बैक्टीरिया, टोटल कोलोफॉर्म बैक्टीरिया, आर्सेनिक, आयरन, सल्फेट, क्लोराइड, रेजिड्यूअल क्लोरीन, टोटल हार्डनेस, टोटल अल्केलिनिटी, टर्बिनिटी, टोटल डिजोल्वड सॉलिड, पीएच, कलर और ऑडर के 16 बिन्दुओं पर आधारित गुणवत्ता जांच की सुविधा मुहैया कराई जा रही है। सभी जिलों में संचालित जलदाय विभाग की प्रयोगशालाओं में पेयजल नमूने देकर आमजन इन 16 बिन्दुओं पर आधारित जांच रिपोर्ट प्राप्त कर सकता है। इसके लिए मात्र 600 रुपये का शुल्क प्रति नमूने के लिए देना होगा।

प्रदेश में विभाग की प्रयोगशालाओं में पहले इन 16 बिन्दुओं की जांच के लिए 1000 रुपये का शुल्क लगता था, मौजूदा सरकार ने आमजन के स्तर पर पेयजल गुणवत्ता जांच को बढ़ावा देने के लिए इसे घटाकर 600 रुपये कर दिया है।

कैमिस्ट कैडर में नए पद भी मंजूर

राज्य सरकार ने प्रदेश में पेयजल गुणवत्ता जांच से सम्बंधी कार्यों में और अधिक सघनता के लिए पीएचईडी में मुख्य रसायनज्ञ कार्यालय के तहत 10 नवीन पदों के सृजन को भी मंजूरी दी है। इनमें मुख्य रसायनज्ञ का एक अतिरिक्त पद, अधीक्षण रसायनज्ञ के 3 तथा वरिष्ठ रसायनज्ञ के 6 पद शामिल हैं।

सनातन संस्कृति के उन्नायक महर्षि दयानंद सरस्वती

''सत्यार्थ प्रकाश'' के छठे, आंठवें तथा ग्यारहवें समुल्लास में लिखा कि ''कृषक ही असली राजा है, जो अन्न पैदा कर सबका पालन करता है। राजा का धर्म है कि उसे सुरक्षा प्रदान करे मगर स्वयं को किसान से बेहतर न माने।''

आशाराम खटीक
जनसम्पर्क अधिकारी

कोई भी राष्ट्र अपने अतीत से कटकर न वर्तमान में जी सकता है ना ही अपना उज्ज्वल भविष्य निर्धारित कर सकता है। ''वेदों की ओर लौटो'' का नारा देने वाले महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर यह आलेख सुजस के पाठकगण को सादर निवेदित है। स्वामी जी ने सोये समाज को न सिर्फ जगाया अपितु एक नई चेतना का प्रवाह भी किया। निरन्तर विरोधाभासों के बावजूद उन्होंने अपने कदम कभी नहीं रुकने दिए।

राष्ट्रवाद की प्रतिमूर्ति, जिनके भीतर देशप्रेम व देशभक्ति की प्रबल भावना कूट-कूटकर भरी थी, ऐसे थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। एक ऐसे महान विचारक जिन्होंने हजारों वर्षो से चली आ रही परम्पराओं, निष्ठाओं और आस्थाओं को तार्किक विमर्श की कसौटी पर कसा। वे कड़े विरोध और शारीरिक व मानसिक यातनाएं झेलकर भी धार्मिक आडम्बरों के खिलाफ मुखर रहे।

स्वामी दयानंद भारत को स्वतंत्र देखने व अंग्रेजों को भगाने के लिए बार-बार सत्याग्रह के रास्ते चलकर जूझते रहे। स्वामी जी ऐसे धर्मगुरू रहे जो जीवन भर इस कोशिश में लगे रहे जिससे सारे धर्मो के लोग इकट्ठे हो, मिल बैठें। सभी धर्मो पर पुनः विचार करें। उनकी अच्छाइयों को चुनें। सर्वसम्मत धर्म ही सबके लिए हितकर रहेगा ऐसा उनका मानना था। भारतीय ज्ञान परम्परा में हमारी सनातन संस्कृति का आधार वैदिक शिक्षा रही है और आदिकाल से मार्गदर्शक भी। युग-द्रष्टा स्वामी जी ने अपने विश्वविख्यात ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' के छठे, आठवें तथा ग्यारहवें समुल्लास में लिखा कि ''कृषक ही असली राजा है, जो अन्न पैदा कर सबका पालन करता है। राजा का धर्म है कि उसे सुरक्षा प्रदान करे मगर स्वयं को किसान से बेहतर न माने।''

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करने के उद्देश्य को सुधारों का मूलसूत्र बताते हुए इस ग्रन्थ की रचना की है। उन्होंने कहा है कि ''उद्योग और पुरुषार्थ में लगे रहना वेदोक्त शुभ गुण हैं, जिन्हें हर भारतीय अपनाए।'' सत्यार्थ प्रकाश, अष्टाध्यायी भाष्य, ऋग्वेद भाष्य, यजुर्वेद भाष्य, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद विरुद्ध मत खण्डन, भ्रमोच्छेदन, पंच महायज्ञ विधि, वेदांग प्रकाश, काशी शास्त्रार्थ, भ्रांति निवारण, आर्याभिविनयः, संस्कृत वाक्य प्रयोग, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, संस्कार विधि, शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण, सद्धर्म विचार, व्यवहार भानु, आर्योद्देश्य-रत्नमाला आदि जैसे दर्जनों उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ हैं।

वैदिक शिक्षा के अनुसार-योगाभ्यास करना, ईश्वर की स्तुति करना, साधना में लीन होना, उत्तम आचरण रखना, सद्व्यवहारी होना, महापुरुषों के चरणों में बैठकर धर्म-चर्चा सुनना-सत्य वचन कहना, झूठ और पाप कार्यो से दूर रहना मुक्ति पाने के निश्चित साधन हैं।

''मरू महोत्सव''

13–16 फरवरी

स्वर्ण नगरी जैसलमेर में दिखी

''उम्मीदों की नई उड़ान''

छाया : मुजस

छाया : संतोष शर्मा, फोटो जर्नलिस्ट

लता
जैसा तो कोई नहीं

पुष्पा गोस्वामी
उप निदेशक (से.नि.)

लता मंगेशकर नाम नहीं, पूरा युग है। युग साधना का, समर्पण का, संगीत का और सच्चे सुरों का ! लता मेरे लिए सरस्वती का दूसरा नाम थीं। दिन उन्हें सुनते, गुनगुनाते और महसूस करते ही बीतता था। काम करते करते भी उन्हें सुनना और गुनगुनाना मेरा शगल था।

मैं उन दिनों राजस्थान पत्रिका में काम करती थी। एक दिन हमारे चीफ रिपोर्टर ऑफ़िस आये तो बोले, ''आपकी लता जयपुर आ रही हैं।'' मुझे भरोसा ही नहीं हुआ। मैंने कहा, ''आप मजाक कर रहे हैं।'' वे बोले, ''नहीं सचमुच सवाई मानसिंह स्टेडियम में अकाल पीड़ितों की मदद के लिये गायेंगी।'' मैं तो केवल पास की आस लगा रही थी। उन दिनों मैं एडिटोरियल पेज देख रही थी तो रिपोर्टिंग के लिए जा भी नहीं सकती थी। पर मेरा सौभाग्य देखिये उन्होंने खुद ही पूछा, ''रिपोर्टिंग करोगी?'' अंधा क्या मांगे? दो आंखें। उन्होंने कहा, ''अपना पेज बनाओगी, प्रेस कॉन्फ्रेंस अटेंड करोगी, आकर खबर बनाओगी, तब घर जाओगी। चाहे रात के बारह बज जायें'', मुझे तो सब मंजूर था, हर शर्त मंजूर थी। मेरा सपना जो सच हो रहा था।

अगले दिन मैं तो आसमान में उड़ रही थी। जल्दी से सारे काम निपटाये और जाने के लिये तैयार। दिल ऐसे धड़क रहा था, जैसे अभी उछल कर बाहर निकल पड़ेगा। वे एक प्रसिद्ध पांच सितारा होटल में थीं। थोड़े से इन्तजार के बाद वे आईं। बॉर्डर वाली सफेद साड़ी, दो लम्बी चोटियां, कानों में हीरे की लौंग, गेहुंआ रंग, चेहरे पर हल्के चेचक के दाग, दमकता चेहरा, खनकती आवाज और चेहरे पर मंद मुस्कान। उनके आते ही सब अनायास ही खड़े हो गये। मुस्करा कर उन्होंने हाथ जोड़े, पर होश किसे था? वापस नमस्कार करने का! सब हतप्रभ खड़े उन्हें एकटक देख रहे थे। वे साक्षात किसी दिव्यात्मा का अवतार लग रही थीं। उनकी सकारात्मकता उनके चेहरे पर दमक रही थी। लोग भूल गये कि उन्हें सवाल करने थे। वे शायद समझ गयी थीं, इसलिये माहौल को सामान्य बनाने के लिये वे राजस्थान के अकाल के बारे में बात करने लगीं। जब सब सामान्य हुए तब उन्होंने सवाल पूछने के लिए इशारा किया।

सबसे पहले उन्होंने कहा **महिला पत्रकार बहुत कम हैं। लिहाजा पहला सवाल महिला ही पूछे।** अभी मैं पूरी तरह सम्भल भी नहीं पाई थी कि पहला सवाल मुझे ही पूछना पड़ा। मैं तपाक से घबरा कर पूछ बैठी 'लता के बाद कौन'? सब चुप। यह क्या पूछ लिया? लता जी मुस्कराईं।

बोलीं **'लता के बाद कोई नहीं, कम से कम लता जैसा तो कोई नहीं'**

सारे लोग स्तब्ध! ये क्या कह दिया लताजी ने। यह तो कुछ ज्यादा ही हो गया। अचानक लता की मन्दिर की घन्टियों जैसी, खनकते घुंघरुओं जैसी मधुर हंसी गूंजी। हंसते हुए उन्होंने कहा, **दूसरी लता कभी हो ही नही सकती। हो सकता है कोई लता से बेहतर हो या हो सकता है कोई लता से कमतर हो।** लोगों के चेहरे पर राहत नजर आई और लता जी हंसने लगीं।

मैने पूछा आज की पीढ़ी के गायक-गायिकाओं में आप को कौन योग्य लगता है? जवाब मिला, **नये गायक गायिकाओं की अगली पंक्ति तैयार हो रही है। अनुराधा पोडवाल हैं, सुरेश वाडकर हैं नितिन मुकेश हैं। और भी कई हैं। प्रतिभायें बहुत हैं, आगे भी आयेंगी।**

उनसे एक सवाल ये भी पूछा गया कि मंगेशकर बहनों पर आरोप लगाया जाता है कि वे और गायक-गायिकाओं को आगे नहीं आने देती हैं। वे फिर हंसकर बोलीं, **जब हम बहनें आईं थीं तब भी तो कई गायिकायें अच्छा गा रही थीं। तब उन्होंने तो हमें नहीं रोका। हमने भी तो संघर्ष कर के जगह बनाई है। देखिये, जिसमें प्रतिभा होगी वह जरूर आगे बढ़ेगा। उसे कोई नहीं रोक सकता है।**

मैने तब एक और सवाल पूछ लिया कि आपकी जगह कभी भर सकेगी इस पर भी वे खिल खिला कर हंस पड़ी।

बोली, **मैं कोई स्थान या फ्लेट थोडी हूं कि जिसे खाली कर दूं और कोई और आकर रहने लग जाये। फिर थोड़ा रुक कर बोलीं -किसने देखा है? कोई मुझ से भी बेहतर गायिका आ जाये।** पर आज भी सच्चाई यही है कि उनसे बेहतर कोई गायिका आ ही नहीं पाई। अकाल पीड़ितों के प्रति वे बहुत संवेदनशील थीं। उन्होंने कहा था कि, **मैं अकाल पीड़ितों से मिलकर उनका दुख बांटना चाहती हूं पर देखें ये कैसे संभव हो पाता है?** वे चाहती थीं कि वे अकाल पीड़ितों के दुख बांटे, लेकिन अकाल की बात न करें उनका सिर्फ मनोरंजन करें।

तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी और उद्योगपति आर पी गोयनका के आमंत्रण पर वे जयपुर आई थीं। उनकी यह राजस्थान यात्रा अंतिम सिद्ध हुई। यह इंटरव्यू मेरे जीवन का अविस्मरणीय इन्टरव्यू था। लता मेरे लिए किसी आराध्या देवी से कम नहीं थीं। आज भी हैं। लता मंगेशकर की वह खनकती हंसी, मीठी आवाज और बात करने का सहज भाव यादों के गलियारों में गूंजता है। देवी सरस्वती की पूजा के बाद स्वरों की एक और सरस्वती अनन्त में विलीन हो गई। किन्तु यह

सरस्वती तो युगों-युगों तक सुरीली आवाज बन कर लोगों के दिलों-दिमाग पर छाई रहेगी। उनका शारीरिक अवसान तो हो गया पर उनके सुर तो दुनिया में सदा अमर रहेंगे। सच है लता जैसा कोई हो भी नहीं सकता है, न पहले कभी हुआ है, न होगा।

"वर्ष 1987 में हमारी संस्था के बुलावे पर लता मंगेशकर जी जयपुर आईं और यहां अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए निःशुल्क कार्यक्रम किया। वह 26 नवम्बर, 1987 का दिन था जब उन्होंने जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी, वर्तमान मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, अन्य गणमान्यजन एवं करीब 40 हजार लोगों के जनसमूह को अपनी जादुई आवाज से मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्होने कुल 26 गाने गाए जिनमें सबसे पहले गाइड फिल्म का गाना ''कांटों से खींचकर ये आंचल'' सुनाया और गायन का समापन ''ऐ मेरे वतन के लोगों'' गाने से किया। लता जी ने अपने कार्यक्रम के दौरान ''महल'' फिल्म के गाने ''आएगा आने वाला'' के लिए राजस्थान के संगीतकार खेमचन्द्र प्रकाश को याद किया। इस कार्यक्रम के जरिए अकाल पीड़ितों के लिए करीब एक करोड़ रुपये की राहत राशि जुटा कर सरकार को सौंपी गई।

के.सी.मालू, अध्यक्ष, सुर संगम, वीणा कैसेट्स"

मरुधरा से जुड़ीं लता की यादें...

'थाने काजलियो बना ल्यूं राज, पलकां में बंद कर राखुली'

श्याम माथुर
वरिष्ठ पत्रकार

लता ने कहा था
''लोग अक्सर मुझसे
मेरे पसंदीदा गानों के
बारे में पूछते हैं।
मेरा मानना है, ऐसे बहुत सारे हैं।
मुझे उनके बोल भी ध्यान नहीं हैं।
मगर मुझे विशेष रूप से भक्ति संगीत पसंद है,
जिसमें मीरा के भजन भी शामिल हैं।''

अगर आपको किसी एक आवाज में श्रद्धा, निष्ठा और सच्चाई चाहिए, तो लता मंगेशकर को सुन लीजिए। हम लोग किस्मत वाले हैं कि हमने उनकी आवाज सुनी और उस दौर में रहे, जिसमें वे भी थीं। लता ने दुनिया की 36 भाषाओं में गाने गाए, उन्होंने हमारे देश की हर भाषा में गीत गाया, यहां तक कि डच, रूसी, फिजी, स्वाहिली और अंग्रेजी में भी। लता का राजस्थान की धरती से भी गहरा जुड़ाव रहा। भक्तिकाल की संत-कवयित्री मीराबाई का जीवन दर्शन लता को हमेशा लुभाता था और अनेक अवसरों पर लता ने यह बात स्वीकार की। लता के लिए गायकी एक प्रकार से भक्ति और प्रार्थना का दर्जा रखती थी। वे हर सुबह-सवेरे देवी सरस्वती की प्रतिमा के सामने बैठकर रियाज करती थीं, भले ही उस दिन उनका कोई गाना रिकॉर्ड करना हो या नहीं। जब वे गाना रिकॉर्ड करने जाती थीं, तो अपनी चप्पलें स्टूडियो के दरवाजे के बाहर उतार देती थीं, जैसे कोई मंदिर में जाने से पहले करता है।

ब्रिटेन के 'चैनल 4 टीवी' की प्रोड्यूसर नसरीन मुन्नी कबीर ने जब नब्बे के दशक में लताजी पर एक डॉक्यूमेंट्री का निर्माण किया था, तब उन्होंने लताजी से उनके पसंदीदा गानों के बारे में भी सवाल किया था। जवाब में लताजी ने कहा था, ''लोग अक्सर मुझसे मेरे पसंदीदा गानों के बारे में पूछते हैं। मेरा मानना है, ऐसे बहुत सारे हैं। मुझे उनके बोल भी ध्यान नहीं हैं। मगर मुझे विशेष रूप से भक्ति संगीत पसंद है, जिसमें मीरा के भजन भी शामिल हैं।''

मीरा के भजनों के प्रति लता के इसी रुझान को देखते हुए उनके भाई संगीतकार हृदयनाथ मंगेशकर ने मीराबाई के भजनों का एक खास एलबम 'चाला वाही देस' तैयार किया था। जाहिर है कि इस एलबम में लता ने ही मीरा के भजनों को अपनी आवाज दी थी। इस एलबम से जुड़ी यादों को साझा करते हुए हृदयनाथ मंगेशकर ने अपने एक इंटरव्यू में कहा था, ''.....जब मैं मीराबाई के भजनों की शृंखला को संगीतबद्ध कर रहा था, तो मैंने कल्पना की कि वो कैसे दिखती होंगी। जब मैंने उनके अनुरूप एक आवाज के बारे में सोचा तो पाया कि दीदी की आवाज सबसे उपयुक्त है। गीतकाव्य की सरलता और दीदी के व्यक्तित्व की सादगी-इन दोनों को साथ रख दें, तो आपको आध्यात्मिक रूप से इनका मेल दिखेगा।'' एलबम 'चाला वाही देस' 1974 में रिलीज हुआ था।

लता की आवाज में निखरा राजस्थानी गीत 'थाने काजलियो बना ल्यूं राज, पलकां में बंद कर राखुली' आज भी बड़े चाव के साथ सुना जाता है। वर्ष 1960 की फिल्म 'वीर दुर्गादास' के इस युगल गीत में लता का साथ मुकेश ने निभाया है। इस गीत को भरत व्यास ने लिखा और एस.एन त्रिपाठी ने संगीतबद्ध किया।

नब्बे के दशक की शुरुआत में आई फिल्म 'लेकिन' में राजस्थानी लोक संगीत का भरपूर इस्तेमाल किया गया था। फिल्म के गीत 'यारा सीली सीली.....' के लिए लता मंगेशकर को गायकी के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। लोकप्रिय राजस्थानी धुन मांड में निबद्ध गीत 'केसरिया बालम' का भी इस फिल्म में उपयोग किया गया था। कमाल अमरोही की फिल्म 'पाकीजा' में राजस्थान के लोक संगीत की छाप स्पष्ट नजर आती है, क्योंकि फिल्म के संगीतकार गुलाम मोहम्मद बीकानेर के थे। लता की आवाज में 'पाकीजा' का मशहूर गीत 'ठाड़े रहियो ओ बांके यार' पूरी तरह राजस्थानी संगीत पर आधारित था। यश चोपड़ा की फिल्म 'लम्हे' में राजस्थानी शब्दों से सजा 'मोरनी बागां मा बोले आधी रात मा' गीत भी लता की सुरीली गायकी की दास्तान बयान करता है। करीब साढ़े तीन दशक पहले 26 नवंबर 1987 को जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में लता के गीतों का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम राजस्थान के अकाल पीड़ितों की सहायता के लिहाज से रखा गया था।

सूर्य मन्दिर, वरमाण

सिरोही जिले के वरमाण कस्बे में स्थित यह सूर्य मंदिर मूलतः आठवीं शती का माना जाता है। अनेक कलात्मक स्तम्भों पर आधारित इस प्राचीन मंदिर में गर्भगृह, सभामण्डप के साथ ही देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के सुंदर अलंकरण उत्कीर्ण हैं। यह स्मारक राज्य सरकार द्वारा संरक्षित है...

आलेख एवं छाया : **डॉ. देवदत्त शर्मा**

Postal Regd. No. Jaipur City/413/2020-22
Registered with Registrar of Newspapers of India under R. No. 56175/1991

प्रकाशक व मुद्रक - सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक, पुरुषोत्तम शर्मा द्वारा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के लिए, शासन सचिवालय, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित
सम्पादक–श्रीमती अलका सक्सेना, मै.कृष्णा प्रिन्टर्स, डी–14, सुदर्शनपुरा, जयपुर से मुद्रित, 'राजस्थान सुजस'–पृष्ठ संख्या 60 लागत मूल्य 30.56 रुपए • 5,00,000 प्रतियां